परमशाति

Life In Multiverse

(मल्टीवर्स में जीवन)

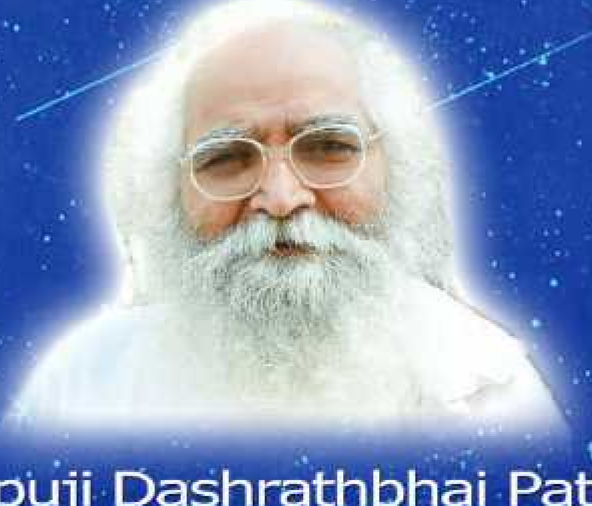

Bapuji Dashrathbhai Patel

परमशांति

Life In Multiverse

(मल्टीवर्स में जीवन)

परमशांति

मल्टीवर्स में हमारा अस्तित्व

Published By

Vishwa Parivartak Ishwariya Vidhyalay

Address:

Vishwa Parivartak Ishwariya Vidhyalay.
C/o Radhe Community Hall, Near Chenpur Bus Stand,
Village Chenpur, New Ranip Road.
Ahmedabad - 382470. Gujarat. (India)

Email id :

anant@paramshanti.org / ankur@paramshanti.org
saakshi1985@gmail.com

Bapuji's Official YouTube Channel:
www.youtube.com / anant98251

WebSite: www.paramshanti.org

www.facebook.com/discoveryofnewworldcom
https://instagram.com/bapujidashrathbhaipatel

Copyright © 2021 Bapuji Darsharathbhai Patel
All rights reserved. No reproduction without permission.

₹. 65/-

प्रस्तावना

बेहद के दादा जी (बापूजी) ने अपनी दिव्य दृष्टि के द्वारा ब्रह्मांड, महा ब्रह्मांड, परम महा ब्रह्मांड, बेहद का ब्रह्मांड, बेहद के बेहद की कलाओं का ब्रह्मांड (मल्टीवर्स और मल्टीवर्स से ऊपर), हद और बेहद की सारी दुनिया को अर्थात समस्त रचना को देखा है। बापूजी द्वारा दिव्य दृष्टि से देखे हुये ज्ञान को यहाँ सरल शब्दों में समझाने का प्रयास किया गया है। एवं इस परम एवं बेहद के ज्ञान को धरती लोक के मनुष्यों को समझाने के लिये इस पुस्तक को लिखने का निर्णय लिया गया है। जिसके बारे में पूरी पृथ्वी पर आज तक, किसी ने भी, ना कुछ बताया, ना ही वेद, पुराण, उपनिषद एवं शास्त्रों आदि में कहीं भी लिखा गया है।

इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य यह है कि, हर मनुष्य को जानकारी मिले कि परग्रहियों के द्वारा हमें हमेशा से जो संदेश भेजे जा रहे हैं, उनके प्रति हम जागरूक होयें। हमें पता चले कि इस धरती के अलावा कहीं और भी जीवन है, इस समग्र विश्व में हम अकेले नहीं हैं, जीवन केवल धरती पर ही नहीं है। हमारे ब्रह्मांड (सोलर सिस्टम) के अंदर भी सातों लोकों पर, अलग-अलग ग्रहों पर अलग-अलग जीवन है। अनंता अनंत गैलेक्सी / यूनिवर्स हैं जहाँ पर अलग-अलग जीवन है और इसी को समझाने का इस पुस्तक में प्रयास किया गया है।

इस पुस्तक Life in Multiverse को लिखने का मुख्य उद्देश्य यही है कि, हर मनुष्य अपने आप को जान पाये, अपनी आत्मा को जान पाये, अपने आत्मस्वरूप को समझ पाये और यह समझ पाये कि हमारा मूल स्वरूप क्या था? हम निराकारी से आकारी और आकारी से साकारी कैसे बने? किस प्रकार निराकारी से सृजन हुआ, किस प्रकार से आकारी रूप से सृजन हुआ और हम यह समझ पाये कि जो भी हम देख रहे हैं उसका मूल आधार सूक्ष्म से ही है। सूक्ष्म जगत से ही चीजें स्थूल जगत में आई हैं। इस बात का संदर्भ आपको बहुत जगह मिलेगा। पुराने अलग-अलग धर्मों की किताबों में कई जगह आपको यह संदर्भ जरूर मिलेगा कि सूक्ष्म में से ही हर वस्तु स्थूल में आई है, तो प्रश्न यह उठता है कि सूक्ष्म में दुनिया किसने बनायी?

सनातन शास्त्रों में यह बातें गहराई से समझायी गई हैं कि हमारी धरती अरबों-खरबों साल पुरानी है। इसको कई चतुर्युग बीत चुके हैं और अनंतकाल समय बीत चुका है। परंतु आज तक मनुष्य के मन में यह प्रश्न नहीं उठा कि, हम कौन हैं? कहाँ से आये हैं? क्यों आये हैं? और किस तरह हम जन्म-मृत्यु के चक्र से बाहर निकल सकते हैं? किस तरीके से हम वापस अमर लोक जा सकते हैं? आत्मा की अंतिम खोज, अंतिम प्राप्ति "परमधाम" "परम शांति" को कैसे प्राप्त करें?

हर मनुष्य अपने मूल उद्देश्य को जानें, अपने आप को जानें और इस विश्व में रहने वाली तमाम अनंता-अनंत रचना को जानें, अलग-अलग आत्मा के प्रकार को जानें। अनंता अनंत शिव, महा शिव, परम महाशिव की रचना कैसे, कब, किस प्रकार हुई? यह सब आध्यात्म के साथ, सनातन शास्त्रों के साथ समझाने की इस पुस्तक में भरपूर कोशिश की गई है ताकि हर मनुष्य इस बात को गहराई से समझ सके कि सिर्फ धरती पर ही जीवन है, ऐसा नहीं है, बल्कि हर जगह जीवन है।

बेहद का विश्व कितना बड़ा है? बेहद का विश्व कैसे बना? इसका रचनाकार कौन है? कौन है उस रचयिता की रचना करने वाला? कौन इनको चलाता है? कौन है अल्टीमेट पावर, ऑलमाइटी अथॉरिटी, सर्वशक्तिमान सत्ता?

आज धरती पर जितने भी धर्म हैं, वह तो कुछ हजारों साल पहले ही आए हुए हैं। जबकि हमारा ब्रह्मांड खरबों साल पुराना है, तो इन सभी धर्म पिताओं की रचना किसने की? कौन है उनका रचयिता? हमारे देवी-देवता क्यों मनुष्य बन गये हैं? क्या है सूक्ष्म जगत? क्या आत्मायें सूक्ष्म में एक ब्रह्मांड से दूसरे ब्रह्मांडों की यात्रा करती हैं? मृत्यु के बाद मैं कहाँ जाऊंगा? अविनाशी दुनिया कहाँ है? आत्मा वहाँ कैसे जा सकती है? आखिर ऐसा क्या हुआ कि यह हमारा पूरा मल्टीवर्स जो पहले परम लाइट, परम तत्वों का था, वह गिर के पाँच तत्वों का बन गया और अमरलोक, मृत्यु लोक बन गया? ऐसे अनेक प्रश्नों के जवाब आगे आने वाले अध्याय के अंदर देने का प्रयास किया गया है।

बेहद के दादाजी ने तपस्या और साधना से निराकारी अवस्था में रहकर इस परम ज्ञान को इमर्ज करके अपने अवचेतन से चेतन माइंड में लाकर, हमें यह परमज्ञान

दिया है। इतने विस्तृत और बहु आयामी ज्ञान को इस धरती लोक पर उतारना तथा दूसरे आयामों की बातों को यहाँ इस हद की दुनिया की भाषा के शब्दों में रखना बहुत ही कठिन है।

बेहद के दादाजी ने समझाया कि हमारी धरती जैसे अनेक धरतियाँ हैं, अनंता अनंत ब्रह्मांड हैं, गैलेक्सी और यूनिवर्स हैं हमारे जो इस एक मल्टीवर्स में हैं। इन सभी को चलाने वाले सृजक अलग-अलग हैं। ऐसे अनंता अनंत ब्रह्मा, विष्णु और शंकर हैं। अनंता अनंत शिव, महा शिव और परम महा शिव हैं और उनकी अपनी सृष्टि और रचना है। ये परम ज्ञान बापूजी ने गहन अध्ययन, निराकारी और समाधि अवस्था में जाकर उतारा है। आईये इस ज्ञान को अपने अन्तःकरण में उतारिये और आत्मसाक्षात्कार की अनुभूति करें। अन्यथा ये अमूल्य मानव जन्म यूँ ही चला जायेगा। इस मृत्युलोक से निकलने का जो बेहद का ज्ञान बापूजी ने दिया है उसे पढ़ें और अपनी आत्मा का कल्याण करें।

बेहद की परम महाशांति।

बापूजी के बारे में

बापूजी का जन्म सन 1956 में गुजरात के मेहसाणा डिस्ट्रिक्ट के एक छोटे से गाँव - आखज में हुआ। मगर उनका बचपन मेहसाणा डिस्ट्रिक्ट गुजरात में ही एक और गाँव जिसका नाम अंबासन है वहाँ बीता। वे बहुत बड़े और सफल वकील बने तत्पश्चात उनकी भूमिका एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक की रही है।

अत्यंत गरीबी और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में पलने के बावजूद भी बापूजी के अंदर एक तीव्र इच्छा थी कि वे इस दुखभरी दुनिया को एक बेहतर जगह बनायें। 6 वर्ष के इस नन्हे बालक ने कई बार परमात्मा को चुनौती दी कि परमात्मा मानवता की दुर्दशा के प्रति इतने उदासीन क्यों हैं?

छोटी उम्र में ही बापूजी खेत में अक्सर स्वयं की परवाह किए बिना घंटों तक मेहनत करते रहते थे। गरीबी के कारण वे नंगे पैर ही खेत में काम करने जाते, जिस कारण, उन्हें लगातार कांटे चुभते रहते थे, कई बार उन्हें देर शाम तक खेत में ही रुकना पड़ता था और देर शाम घर वापसी के समय उन्हें कई बार सूक्ष्म जगत की आत्मायें रास्ते पर मिल जाती थी। इसलिये बापूजी को इन सूक्ष्म जीवों से संवाद करने में रुचि उत्पन्न हुयी।

बचपन से ही बापूजी में निडरता का गुण होने के कारण वे जिंदगी की कई चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक कर पाये। अपनी चार्टर्ड अकाउंटेंसी (सी ए) की पढ़ाई के साथ-साथ वे पार्ट टाइम टयूशन भी देते रहे जिससे उनकी पढ़ाई का खर्चा भी निकल जाये। बाद में उन्होंने बैचलर ऑफ लॉ की डिग्री प्राप्त की और आगे वे अहमदाबाद में एक प्रसिद्ध वकील बन गये।

सन् 1997 में विश्व परिवर्तन तथा इस पुरानी दुनिया को अमरलोक में बदलने हेतु, बापूजी ने विश्व परिवर्तक ईश्वरीय विद्यालय की चैनपुर, अहमदाबाद में स्थापना की। इस पवित्र कार्य में बापूजी का साथ और सहयोग दिया, श्रीमती सुषमा टंडन जी ने जिन्हें प्यार से " माँ " बुलाया जाता है।

अपने मिशन को वास्तविक रूप देने के लिये बापूजी लगातार काम करने लगे। 18-18 घंटे तक वे बिना रुके ज्ञान का व्याख्यान देते रहते थे। ये ज्ञान कई सारे विषयों पर होता था जैसे परमात्मा - रचयिता और उनकी रचना, हमारा सौर मंडल (ब्रह्मांड), गैलेक्सी और मल्टीवर्स इत्यादि। वर्तमान समय मे बापूजी कई घंटों गहन चिंतन तथा योग समाधि अवस्था में रहते हैं। अब वे किसी से मिलते नहीं हैं।

विषय सूची

1 मृत्यु के बाद का जीवन 1

2 ऊपर के आयामों की यात्रा 5

- भूलोक (मृत्यु लोक) 6
- भुवर्लोक 7
- स्वर्ग लोक 9
- महर्लोक 11
- जनलोक 12
- तपलोक 12
- ब्रह्मा पुरी (सत्य लोक/ ब्रह्म लोक) 13
- विष्णुपुरी (कारण जगत) 14
- शिवपुरी (महाकारण जगत) 15
- परमधाम 15

3 प्रकाश, गति और समय का विस्तार 19

- ब्रह्मांड को समझने के लिये वैज्ञानिक दृष्टिकोण 20

4 ब्रह्मांड का समय 26

- विभिन्न खगोलीय वस्तु और मनुष्य की उम्र 27
- प्रकाश वर्ष (light years) 29

5 ब्रह्मांड के ज्ञान केंद्र 31

- आकाशीय रिकार्ड्स को कैसे पढ़ें? 32

6 अलग-अलग ब्रह्मांडों में अलग-अलग शरीर 34

- आत्मा क्या है? आत्मा कैसे लगती है? आत्मा कहाँ रहती है? 35

- स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर, महाकारण शरीर 36
- आत्मा की यात्रा 38
- सतोप्रधान आत्मा, रजोप्रधान आत्मा, तमोप्रधान आत्मा.......... 40

7 हमारा ब्रह्मांड कितना बड़ा है? 41
- हमारे ब्रह्मांड को कौन चलाता है?.......... 41
- ब्रह्मांड की रचना कैसे हुई?.......... 42

8 आत्माओं के लोक और तारों के बीच की यात्रा 45
- कुछ रहस्यमय बातें 46

9 परग्रही दुनिया और उसमे जीवन 49
- मंगल पर जीवन 50
- इंडिगो / स्टार चाइल्ड 51
- क्या दूसरे ग्रह जैसे सूर्य , बृहस्पति , शुक्र इत्यादि पर भी जीवन है?.. 53
- रेडियो तरंगे 54
- UFO 54
- क्रॉप सर्कल 56
- श्रीयंत्र का सच 57
- एलियंस द्वारा अपहरण और उनसे जुड़ी सच्चाई 57
- पिरामिड्स के रहस्य 59
- कैलाश मंदिर - एलोरा 61
- महान वैज्ञानिकों का परग्रहियों से सम्बंध 62
- ऊपर के आयामों के नियम (Law of Spirit World) 63

10 हमारा महा ब्रह्मांड (गैलेक्सी यानि आकाश गंगा) 69
- हमारी गैलेक्सी की संरचना का विवरण 70

11 हमारे यूनिवर्स (परम महा ब्रह्मांड) का सृजन कैसे हुआ ? 74

12 G1 to G17 (GREAT GREAT UNIVERSES) 81

13 ब्रह्मांड का विसर्जन और ब्लैक होल 100

14 मल्टीवर्स का सृजन 108

- विज्ञान से मल्टीवर्स का अस्तित्व 108
- मल्टीवर्स कितना बड़ा है और ये सृष्टि हमारे ब्रह्मांड से कितनी ऊपर है? 109
- मल्टीवर्स (100 कला का ब्रह्मांड) कैसे बना? 111
- मल्टीवर्स का परमधाम 113
- मल्टीवर्स का मूलवतन 113
- मल्टीवर्स का सूक्ष्म वतन 114
- मल्टीवर्स में तत्त्व की दुनिया 115
- मल्टीवर्स की स्थूल दुनिया 115

15 मल्टीवर्स से परे की सृष्टि 118

16 नई दुनिया 5D और मल्टीवर्स कैसा होगा? 123

17 आत्मा का अंतिम पुरुषार्थ 126

18 स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन 130

19 लाइव योग सत्र और माँ का दिव्य सन्देश 132

20 YOUTUBE CHANNEL की महत्वपूर्ण जानकारी 138

21 शब्दकोष 141

1.

मृत्यु के बाद का जीवन

मृत्यु के बाद की दुनिया का अस्तित्व परम सत्य है। दुनिया के सभी धर्म और संप्रदाय भी अब ये मानने लगे हैं कि मृत्यु के उपरांत भी जीवन होता है। विज्ञान का भी दृष्टिकोण समय-समय पर बदलता रहता है। वो भी अब Consciousness के अस्तित्व को मानने लगे हैं। आने वाले समय में शायद वो आत्मा को भी जान लेंगे। परन्तु अनादि काल से हमारे सनातन धर्म में आत्मा के अस्तित्व की बातें कही गयी हैं। धर्म शास्त्र कहते हैं कि जिसने मृत्यु को जान लिया उसे मरने से कभी डर नहीं लगता है। मृत्यु लोक में जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु अटल है। इस सत्य का ज्ञान होते हुए भी प्रत्येक मनुष्य को मृत्यु का भय है। मृत्यु का भय क्यों है? मनुष्य की मृत्यु पहली बार तो नहीं हो रही है। हमें ये गहराई से समझना चाहिए कि अनंता अनंत बार मनुष्य का जन्म हुआ है और अनंता अनंत बार शरीर की मृत्यु हुई है। जबकि इसका ज्ञान भी दिया गया है कि मृत्यु शरीर की होती है, शरीर को चलाने वाली आत्मा की नहीं। आत्मा तो अजर, अमर,अविनाशी है। मनुष्य अपना देह रूपी चोला बदलता रहता है। मनुष्य 198 करोड़ (ब्रह्मा के दूसरे परार्ध के) वर्षों से जन्म-मरण के चक्र में फंसा पड़ा है (अनंता अनंत बार जन्म हुआ, अनंता अनंत बार मृत्यु हुई, अनंता अनंत बार स्वर्ग गया और अनंता अनंत बार नर्क गया)। मनुष्य का वर्तमान जन्म, पूर्व जन्म या आने वाला जन्म उसके कर्मों के अनुसार होता है। इसीलिये हमारे शास्त्रों में कर्मों को श्रेष्ठ करने और मन को पवित्र करने पर ज़ोर डाला गया है। उत्तम और श्रेष्ठ कर्म करने से परलोक की प्राप्ति होती है इसका हमारे शास्त्रों में भी जिक्र है। अनादि काल से ये ब्रह्मांड चल रहा है और ब्रह्मांड के उस आदि काल के समय से ही आत्माओं का सृजन हुआ है। तब से लेकर आज तक आत्मायें जन्म और मरण के चक्र में आ रही हैं। आत्माओं ने कई जन्म लिये और कई योनियों में जन्म लिया। प्रत्येक आत्मा का जन्म उसके कर्मों के अनुसार होता है। आत्मा कर्मों के बंधन को खत्म करके ही अपनी यात्रा ऊपर के उच्च आयामों में अर्थात अमरलोक जा सकती है।

आत्मा का अस्तित्व तब तक रहता है जब तक ब्रह्मांड का अस्तित्व रहता है। आत्मा का अस्तित्व ब्रह्मांड के विसृजन के समय तक ही रहता है। आत्मा अपनी सदगति या जीवन मुक्ति को तब तक नहीं पा सकती जब तक वो अज्ञानता में है। अज्ञानतावश आत्मा अपनी आध्यात्म की यात्रा ऊपर के आयामों में नहीं कर सकती है। मृत्यु के बाद का जीवन एक वास्तविक सत्य है और उसके बाद का जीवन भी परम सत्य है। आत्मज्ञान के बिना आत्मा मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकती है और अगर उसे ब्रह्म ज्ञान मिल जाये तो वो जीवन मुक्ति पा सकती है एवं परम गति को प्राप्त कर अपने अंतिम लक्ष्य तक पहुँच सकती है। आत्मा की यात्रा बेहद है। मृत्युलोक में जन्म-मरण का चक्र सदाकाल से ही चलता आ रहा है। आत्मा अनंता अनंत बार इस धरती पर जन्म धारण कर चुकी है। कई आत्मायें मरने के बाद गैलेक्सी या यूनिवर्स में भटकती रहती हैं पर वो अपने रचयिता तक नहीं पहुँच पाती हैं। माया का बंधन खत्म न होने के कारण आत्मा भटकती रहती है। जब तक उस पर उसके रचयिता की कृपा नहीं होती तब तक उस आत्मा की यात्रा चलती रहती है।

जब पृथ्वी पर प्रलय, कल्प प्रलय, अर्द्ध प्रलय, महा कल्प प्रलय होता है। महाकल्प प्रलय में ब्रह्मांड का विसृजन होते ही आत्मा का अस्तित्व खत्म हो जाता है। आत्मा जिसमें से निकली है अर्थात उसकें रचयिता में समा जाती है। जब आत्मा बेहद का आदि, मध्य और अंत का ज्ञान प्राप्त करती है तब वो अपनी यात्रा उच्च आयामों में कर सकती है। आत्मा कई रूप बदलती है। वो जिस ब्रह्मांड में जाती है वैसा ही शरीर धारण करती है। आत्मा का जीवन-मृत्यु का चक्र कभी खत्म नहीं होता है। यदि आत्मा अमरलोक चली जाये तो वो मृत्यु लोक के बंधनों से छूट सकती है।

अब अमरलोक क्या है? क्या अमरलोक धरती के ऊपर के आयामों में है? क्या अमरलोक धरती से ऊपर के तीसरे आयाम स्वर्गलोक में है? हमारे शास्त्रों में लिखा है कि ब्रह्मांड की आयु पूरी होने पर भू लोक, भुवर्लोक और स्वर्गलोक खत्म हो जाते हैं। बापूजी ने बताया है कि हमारा पूरा मल्टीवर्स ही मृत्युलोक है।

आत्मा मरने के पश्चात् एक धरती से दूसरी धरती, एक गैलेक्सी से दूसरी गैलेक्सी, एक यूनिवर्स से दूसरे यूनिवर्स भटकती रहती है। यह दुनिया बेहद विशाल

है। बेहद के विश्व मे ऐसे अंनता अनंत मल्टीवर्स हैं। उनमें भी जीवन व्याप्त है। लेकिन जैसा ब्रह्मांड है वैसा ही आत्मा का शरीर है। आत्मा अनेकों बार शरीर धारण करती है। 84 लाख के चक्र में भी जाती है, उसका शरीर रूपी चोला बदलता रहता है पर आत्मा वही रहती है। कई बार वो इन्द्र पद को भी प्राप्त करती है, कई बार वो ब्रह्मा भी बनती है। अनंत पद प्राप्त करके हर पल अपने कर्मों का हिसाब चुकता करती रहती है।

अब यदि मृत्यु के बाद के जीवन को समझना है तो हमें आत्मा का ज्ञान होना चाहिए और हमें आत्मा के अस्तित्व पर संपूर्ण विश्वास होना चाहिए। वेदों-शास्त्रों और पुराणों पर निश्चय होना चाहिए, तभी आत्मा अपनी मृत्यु के बाद के जीवन को सुधार सकती है। आत्मा इस मृत्यु लोक में रहते हुए आत्मज्ञान को प्राप्त करके आत्म स्वरुप की अवस्था को धारण करके और अपने कर्म चक्र को खत्म करके ऊपर बेहद की दुनिया में जाने का पुरुषार्थ कर सकती है। यदि मनुष्य देह और देह के सम्बन्धों के जाल में फँसा रहेगा तो वो अपने कर्म चक्र के जाल से कभी छूट नहीं पायेगा और विवश होकर उसे जीवन मृत्यु के चक्र में आना पड़ेगा।

मृत्यु के बाद का जीवन अद्भुत और अलौकिक हो सकता है क्योंकि ऊपर की दुनिया धरती की दुनिया से कई गुना अच्छी और सुखमय है। माया पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है। जैसे- जैसे ऊपर के लोकों में आत्मा जाती है वहाँ सुख की मात्रा बढ़ती जाती है। ब्रह्मापुरी में सुख की मात्रा स्वर्ग से अनंत गुणा अधिक है। इस धरती पर दुःख और नर्क समान जीवन है लेकिन यदि आत्मा को स्वर्ग लोक से ऊपर के आयामों का ज्ञान हो तो वो जनलोक, तप लोक से होते हुए दूसरे ब्रह्मांडों तक जा सकती है और अंत में वो अपने रचयिता में मिल जाती है। आत्मा का असली सुख इस मृत्यु लोक में नहीं बल्कि ऊपर के लोकों में है, जहाँ परम सुख, परम शांति और परमानन्द की प्राप्ति है। यदि मनुष्य को इस जीवन में रहते हुए मृत्यु के बाद के जीवन का ज्ञान मिल जाये तो वह बेहद के सुख की अनुभूति इस जीवन में रहते हुए कर सकता है। यदि आत्मा एक बार अनंत परम सुख की प्राप्ति कर ले तो उसके बाद उसे मृत्युलोक के सभी सुख फीके लगेंगे। आत्मा का मूल स्वरुप ही परमशान्ति है जो उसे इस जीवन काल में परम ज्ञान प्राप्त करके और अपना समय पुरुषार्थ में लगाकर, अपने सभी कर्म बंधनों को काटने से मिलता है।

आने वाले समय में "मृत्यु के बाद जीवन" (LIFE AFTER DEATH) विषय पर बापूजी द्वारा दिव्य दृष्टि से जो ज्ञान इमर्ज हुआ है, उस पर भी एक नई पुस्तक शीघ्र प्रकाशित होने वाली है।

2.

ऊपर के आयामों की यात्रा

यदि हम ऊपर के आयामों को समझना चाहते हैं तो मनुष्य को सबसे पहले ये समझना पड़ेगा कि जिस दुनिया को हम हकीकत और सत्य मान रहे हैं वो तो माया है। गीता में भी कहा गया है कि जो इन आँखों से दिखता है वो झूठ है और जो नहीं दिखता वो ही सत्य है। क्या केवल धरती लोक पर जीवन है? ये दुनिया इतनी विशाल है कि हम उसके बारे में सोच भी नहीं सकते न ही शब्दों में बता सकते हैं। हमारे पास वो दृष्टि नहीं है जिससे हम ऊपर के आयामों की अनोखी दुनिया देख सकें। कोई नहीं है जो इन सभी बातों को समझ सके। सवाल हैं जैसे कि इन आयामों में कौन रहता है? वह दुनिया कैसी है? हमारी धरती के ऊपर कितने आयाम हैं? विज्ञान भी अनंता अनंत आयामों के बारे में बताता है जिसे उसकी भाषा में Dimension कहते हैं। अब उन आयामों में कौन जा सकता है? हम उस दुनिया के बारे में कैसे जान सकते हैं? क्या हम कभी इस जीवन काल में जान सकेंगे कि हम कौन हैं, कहाँ से आये हैं? वो दुनिया कैसी है और वहाँ कौन रहता है? समय के चक्र के हिसाब से आयामों में क्या-क्या परिवर्तन होता है? वहाँ रहने वाली आत्माओं में क्या-क्या परिवर्तन होता है? अनंता अनंत ब्रह्मांड हैं और हर ब्रह्मांड में अलग-अलग जीवन व्याप्त है। ब्रह्मांड, महा ब्रह्मांड, परम महा ब्रह्मांड सभी की अलग-अलग आयु है। हर ब्रह्मांड के, आयामों में परिवर्तन होता रहता है।

हमारे शास्त्रों और वेदों में 14 भुवन / लोकों की बात कही गयी हैं। ये 14 लोक में से 7 लोक हमारी धरती के ऊपर के आयाम हैं और धरती के नीचे भी 7 निचले लोक हैं - अतल, वितल, सुतल , तलातल, महातल, रसातल ओर पाताल लोक।

आइये संक्षिप्त में ऊपर के आयामों और उन पर जीवन के बारे में जानते हैं, वेदों के अनुसार इस ब्रह्मांड में भूलोक से लेकर ब्रह्मपुरी तक जीवन है, अलग-अलग प्रकार की आत्मायें अलग अलग लोकों में रहती हैं।

भू लोक (धरती लोक / मृत्यु लोक)

महाभारत के युद्ध के दौरान जब पांडवों को अपने ही संबंधियों, कौरवों पर आक्रमण करना था तब अर्जुन अपने सगे-संबंधियों पर आक्रमण करने में हिचकिचा रहा था। उस समय उसकें सारथी रहे श्रीकृष्ण ने उसे अपने विराट रूप के दर्शन दिए। यह रूप इतना विराट था कि उसमें समस्त ब्रह्मांड समा गया था और अर्जुन को कृष्ण के उस रूप में ब्रह्मांड के तीनों लोकों के दर्शन हुए थे। भू लोक में विभिन प्रकार की आत्मायें हैं जिनकी रचना अलग-अलग स्तर पर हुई है। आज भू लोक में जो आत्मायें हैं वो दूसरे ब्रह्मांड से भी हैं, कुछ गैलेक्सी से आयी हैं, और कोई तो दूसरे यूनिवर्स से भी हैं। भू लोक अर्थात धरती लोक पर जीवन पाँच तत्वों का होता है। मरने के पश्चात मनुष्य के शरीर में से स्थूल जल और मिट्टी तत्व खत्म हो जाता है और उसकी आत्मा सूक्ष्म शरीर धारण कर लेती है। सूक्ष्म शरीर को इन आँखों से नहीं देखा जा सकता है। सूक्ष्म शरीर आकाश, वायु और अग्नि तत्व से बना होता है। आत्माओं के कर्मों का बोझ जितना कम होता है उतनी ही आत्मा हल्की होती है। जितनी आत्मा तमो प्रधान होती है उतना आत्मा में वायु तत्व ज़्यादा होता है। जिससे उसका सूक्ष्म शरीर भारी हो जाता है और वो ऊपर के आयामों में नहीं जा पाती है। धरती पर मनुष्य जब ज्ञान प्राप्त करता है और आत्मा को परमात्मा से जोड़ने के ज्ञान को धारण करता है, अपने कर्मों को चुकतु करने का पुरुषार्थ करता है, अपनी चेतना की जागृति के लिये आध्यात्म के मार्ग पर चलता है तब उसकी आत्मा मरने के बाद ऊपर के आयामों में जाने का सफर कर सकती है। पता नहीं मनुष्य कब ये बात समझेगा कि ये माया है अर्थात यह मृत्यलोक है। असली आत्मा का सुख इन कर्म इन्द्रियों से परे है। आत्मा का मूल स्वरुप परम शांति, प्रेम और पवित्रता है। लेकिन आत्मा के कई जन्म हो चुके हैं। आत्मा 198 करोड़ साल से जन्म-मरण के चक्र में आ रही है।

महाभारत युद्ध के दौरान भगवान कृष्ण, अर्जुन से कहते हैं-हे कुंतीनंदन ! तेरे और मेरे कई जन्म हो चुके हैं। अंतर ये है कि मुझे मेरे सारे जन्मों की याद है, लेकिन तुझे नहीं । तुझे याद नहीं होने के कारण तेरे लिये यह संसार नया है और तू फिर से आशक्ति पाले बैठा है। जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को धारण

करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को धारण करती हैं। यही भूलोक के नियम हैं। मनुष्य को इस जीवन-मृत्यु के पंजे से छूटना है, तो उसे अपना ध्यान आत्मज्ञान और आत्मकल्याण में लगाना चाहिए। भू लोक जैसी अनंता अनंत धरती हैं जो हर ब्रह्मांड में स्थित हैं। और हम इन्हीं पाँच तत्वों को ही सत्य मान बैठे हैं अर्थात मनुष्य जीवन के लक्ष्य को समझते हुए हमें यह जीवन परमात्मा की प्राप्ति में लगाना चाहिए।

भुवर्लोक

भुवर्लोक पृथ्वी और सूर्य के बीच का स्थान है और इसे पितृलोक भी कहा जाता है। यह लोक कई खगोलीय पिंडों का एक संग्रह है। इस लोक में कई पिंडो में से, पाँच पिंड अच्छी तरह से ज्ञात हैं, जैसे ध्रुव लोक, सप्त ऋषि लोक (सात ऋषियों का निवास), राशि सितारे (नक्षत्र लोक), चंद्र लोक (चंद्रमा) और सूर्य लोक । सप्त ऋषि लोक सात प्रसिद्ध ऋषियों का निवास स्थान है और यह ध्रुव लोक के नीचे 2,00,000 योजन पर स्थित है, जो ध्रुव लोक की परिक्रमा करता रहता है।

कई आध्यात्मिक रूप से उन्नत मनुष्य आत्मायें इस लोक में रहती हैं। जो विभिन्न तरीकों से आकाशीय देवताओं की मदद करती हैं। उच्च ग्रहों में प्रदान की गई खगोलीय सेवा की गुणवत्ता के आधार पर, वे स्वर्गलोक (स्वर्ग) में स्थान प्राप्त कर सकती हैं। परन्तु यदि वे उस आयाम (स्वर्ग लोक) के भोग विलास में अत्यधिक लिप्त हो जाती हैं तो उन्हें मनुष्य जन्म लेने के लिये भूलोक में भेजा जाता है।

आत्मा मरने के बाद भी तीन तत्वों में कर्म करती है, भावनाओं में आती है। यहाँ आत्मा सूक्ष्म में कर्म करती है। अर्थात जब तक आत्मा का मन करे तब तक कर्म चक्र में आती रहती है। मरने के बाद जितना कर्मो का बोझ कम होगा, उतनी आत्मा हल्की होगी, पापी आत्मा में वायु तत्व ज्यादा होता है और वह नकारात्मक ऊर्जा से भरी रहती है। इसलिये वायु तत्व भारी रहता है, जिससे सूक्ष्म शरीर भारी हो जाता है, और आत्मा ऊपर नहीं जा सकती है। तपस्या करने से सूक्ष्म शरीर में परम प्रकाश आता है और वायु तत्व कम होता है एवं आकाश तत्व बढ़ता है। आत्मा में जितना आकाश तत्व ज्यादा होगा उतनी ऊपर जाने की गति और शक्ति (power) बढ़ती है

और आत्मा उतनी ऊपर जा सकती है, और जितना ऊपर जायेगी उतना ज्यादा सुख और शांति का अनुभव करेगी। तमो प्रधान आत्मायें मृत्यु के बाद अपने घर में या अपने-अपने धर्म स्थान (मंदिर, मस्जिद, चर्च आदि) में रहती हैं। ऐसी आत्माओं में शक्ति नहीं होती। प्रेत योनि में वह आत्मा होती है जो बहुत पापी होती है और कभी भी मोक्ष का नहीं सोचती है। इनमें वायु तत्व ज्यादा होता है जिससे सूक्ष्म शरीर भारी हो जाता है। पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण (Gravity) 200 km तक है। इसलिये ऐसी आत्मायें पृथ्वी के ऊपर 200 km भी पार नहीं कर सकती हैं। भोग की लालसा, स्थूल वस्तु के प्रति आशक्ति, अपने देह के सम्बन्धियों में मोह और अपनी इच्छा पूर्ति के लिये विकर्म करने से ऐसी आत्मा का सूक्ष्म शरीर कमज़ोर हो जाता है। जिस आत्मा का सूक्ष्म शरीर इस जन्म में किसी कारण वश आघात या चोट खाया होता है, तो उसके इस जन्म के नकारात्मक कर्म अगले जन्म के कर्म-चक्र में जुड़ जाते हैं। अच्छी आत्मायें यानि जिनका मन शांत है और जिन्हे केवल परमात्मा की चाहत होती है वो सब आत्मायें ऊपर चली जाती हैं। भुवर्लोक में कई आत्मायें बैठी हैं जो सात्विक हैं और प्रभु की याद में हमेशा रहती हैं। सूक्ष्म जगत की अच्छी आत्मायें ऐसी आत्माओं को हिमालय में ले जाकर तपस्या करने को कहती हैं। धरती पर वायु तत्व के एक-एक Cell में नकारात्मक रिकॉर्ड है। हिमालय, कैलाश मानसरोवर, बदरीनाथ, केदारनाथ आदि स्थानों में वायुमंडल अच्छा होता है। वायु तत्व शुद्ध और अच्छा होने के कारण वहाँ शांति मिलती है। इसी कारण हिमालय में वायु तत्व हल्का और पावरफुल होता है और वायु तत्व चार्ज हो जाता है। वायु तत्व के चार्ज होने से अग्नि तत्व भी चार्ज हो जाता है जिससे सूक्ष्म शरीर की क्षति की भरपाई हो जाती है ।

हिमालय में बहुत सारे सूक्ष्म आश्रम हैं। कई आत्मायें अपना अलग-अलग गोला बनाकर तपस्या कर रही हैं। किसी गोले में 5000, किसी गोले में 10,000 आत्मायें तपस्या कर रही हैं। ऐसी लाखों की संख्या में आत्मायें तपस्या करती हैं और वायु एवं अग्नि तत्व को चार्ज करती हैं। सूक्ष्म तत्व यानि शुद्ध वायु तत्व से सूक्ष्म शरीर की भरपाई हो सकती है। हिमालय में सूक्ष्म शरीर को चार्ज किया जा सकता है लेकिन कारण शरीर को नही। मन, इच्छायें, संकल्पों, और कर्मो के कारण जो शरीर बनता है वह कारण शरीर है। मनुष्य के सभी कर्मों का अभिलेख कारण

शरीर में होता है। यदि कारण शरीर को परम प्रकाश से चार्ज किया जाये तो आत्मा के सभी विकर्मों का नाश हो जाता है। कारण शरीर चार्ज होने से आत्मा में आकाश तत्व बढ़ जाता है और आत्मा विष्णुपुरी (कारण जगत) में चली जाती है।

जब आत्मा परब्रह्म परमेश्वर-शिव निराकार को याद करती है तब बुद्धि निराकार में जाती है। जैसे से ध्यान लगाओगे वैसे को पाओगे। जब आत्मा परब्रह्म परमेश्वर को याद करती है तो उसमें परम प्रकाश आता है, जिससे परम आकाश तत्व चार्ज होता है। एक बूंद भी परम अकाश तत्व का आत्मा में आने से उसका कारण शरीर और कारण शरीर से सूक्ष्म शरीर चार्ज हो जाता है और सूक्ष्म शरीर चार्ज होने से आत्मा हल्की हो जाती है एवं धीरे-धीरे ऊपर के लोकों में जाती है। मनुष्य आत्माओं से करोड़ों गुनी आत्मायें सूक्ष्म जगत में हैं। 500 से 1000 किलोमीटर पर नकारात्मक एवं शैतान वृति वाली आत्माओं का बहुत बड़ा साम्राज्य है। जो आत्मा अच्छी नहीं होती वहीं 1000 किलोमीटर के नीचे रहती है। जबकि अच्छी आत्मायें 1000 किलोमीटर के ऊपर चली जाती हैं, जैसे-जैसे आत्मा ऊपर जायेगी वैसे-वैसे उसकी सोच बदलती जायेगी।

इस लोक को पितृ लोक भी कहा जाता है। पहले के समय में आत्मायें इस लोक में रहकर पुनः धरती के ऊपर जन्म लेने की प्रतीक्षा करती थीं लेकिन आज आत्माओं के पास इतनी ताकत भी नहीं है कि वो पितृ लोक तक भी जा पायें। मृत्यु के बाद जो श्राद्ध दिया जाता है वो इस लोक की आत्माओं के लिये था लेकिन आज आत्मायें शरीर छोड़ने के बाद धरती के वायुमंडल में ही घूम रही हैं।

स्वर्ग लोक

स्वर्ग लोक तीसरा लोक है। भुवर्लोक के ऊपर स्वर्ग लोक है। स्वर्ग कौन जा सकता है? अच्छे कर्म करने वालों को स्वर्ग के सुख और भोग भोगने की अनुमति मिलती थी। धर्मराज मनुष्य द्वारा किये गये पुण्य और पाप कर्मों के अनुसार स्वर्ग और नर्क का समय निर्धारित करते थे। स्वर्ग लोक में तीन तत्वों का शरीर होता है। तीन तत्वों के शरीर में हल्का सुख मिल जाता है। धरती पर पाँच तत्वों की दुनिया है। देवी-देवता भोगी होते हैं। अक्सर देखा जाता है कि हमारे देवी-देवता सोमरस और

भोग विलास में डूबे रहते हैं। देवी-देवताओं का भी जब पुण्य का खाता खत्म हो जाता है तब उनकी शक्ति कम हो जाती है और तब उनको निचले लोकों (धरतीलोक) में भेजा जाता है। महा ज्ञानी और तपस्वी आत्मायें कभी भी इंद्रलोक का सुख नहीं चाहती हैं। मोक्ष की इच्छा रखने वाली आत्मायें स्वर्ग लोक से ऊपर महर्लोक, जनलोक, तपलोक, ब्रह्मपुरी, विष्णुपुरी, शिवपुरी या परमधाम में चली जाती हैं। ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें परब्रह्म परमेश्वर, निराकारी, निर्गुण परमात्मा में परमधाम में समा जाती हैं। आत्मा अपने अस्तित्व को खत्म कर देती है, उसी को मोक्ष अर्थात मुक्ति कहते हैं।

स्वर्ग लोक का एक दिन धरती पर 1 साल होता है। स्वर्ग लोक को भोग लोक कहेंगे। धरती पर स्थूल माया है तो स्वर्ग में सूक्ष्म माया है। समय की गति धरती और स्वर्ग के ऊपर अलग-अलग है। धरती पर मनुष्यों का एक वर्ष स्वर्ग में देवताओं के एक दिन के बराबर है। स्वर्ग में जो सुख है वो अस्थायी है। अनंत काल का सुख स्वर्ग में नहीं मिलता है। माया का अस्तित्व भू लोक से ब्रह्मपुरी तक है। स्वर्ग के देवता और धरती के मनुष्य में सिर्फ शरीर का अंतर है। देवताओं का शरीर तीन तत्वों का बना होता है और मनुष्य का शरीर पाँच तत्वों का। परन्तु काम, क्रोध, लोभ, मोह, घृणा, राग, द्वेष - इन सभी विकारों से देवता भी मुक्त नहीं है। धरती लोक के मनुष्य के समान देवता भी इन सभी विकारों से युक्त हैं। माया से वो भी अनभिज्ञ हैं। इच्छा-कामना उन्हें भी सताती है। स्वर्ग का राजा भी ब्रह्मा पद को पाना चाहता है। भूलोक ही ज्ञान प्राप्ति का एक मार्ग है। इन्द्र भी आत्मा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये प्रजापति के पास धरती लोक के आश्रम में आया था। भू लोक कर्म भूमि है और ज्ञान प्राप्ति करने के लिये श्रेष्ठ स्थान है। देवताओं को भी स्वर्ग लोक में आत्म ज्ञान और ब्रह्म ज्ञान नहीं मिलता है। स्वर्ग लोक को भोग योनि कहेंगे, वहाँ भोग ही भोग है।

धरती और स्वर्ग के समय में बहुत अंतर है। स्वर्गलोक में देवताओं के 100 साल मतलब पृथ्वी में लगभग 36000 साल बीत जाते है। अपने किये हुए कर्मों के अनुसार स्वर्ग लोक के बाद आत्मा को मनुष्य योनि या 84 लाख योनियों में भटकना पड़ता है। बुरे कर्मों के अनुसार आत्मा को 55 करोड़ नर्क में भी भेजा जाता था। इसलिये ज्ञानी पुरुष कभी भी 3 लोकों के सुख को स्वीकार नहीं करते हैं। ज्ञानी

मनुष्य को यह ज्ञात होता है कि ब्रह्मा के एक दिन में तीनों लोक खत्म हो जाते हैं। 1 कल्प प्रलय में ब्रह्मा का एक दिन होता है। धरती पर चार युग खत्म होने पर अर्द्ध प्रलय होता है। ऐसे 71 अर्द्ध प्रलय में 1 मन्वन्तर पूरा होता है, अर्थात धरती पर प्रलय होता है। ऐसे 14 मन्वन्तर पर कल्प प्रलय होता है। ब्रह्मा के एक दिन में भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्ग लोक खत्म हो जाते हैं। स्वर्ग लोक की भी आयु सीमित है। स्वर्ग लोक से आत्मा को नीचे आना ही पड़ता है, क्योंकि वहाँ ज्ञान नहीं होता। ज्ञान पाने के लिये मनुष्य को धरती पर आना पड़ता है। ऋषि-मुनियों से ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करना पड़ता है और ब्रह्मलीन (परब्रह्म परमेश्वर) की उपासना करनी पड़ती है। तब जाकर आत्मा मोक्ष को प्राप्त होती है। शंकराचार्य कहते हैं कि मुझे मोक्ष की भी कामना नही है क्योंकि ज्ञानी आत्मा की मंज़िल बहुत ऊपर तक की है। वेदों के अनुसार स्वर्ग की कामना महा मूर्ख लोग करते हैं। जो लोग स्वर्गलोक के सुख को प्राप्त करने के लिये तपस्या करते हैं, वो सभी लोग मूर्ख हैं। मृत्युलोक में आत्मा ज्ञान प्राप्त करके अपना कल्याण कर सकती है और भाग्य बना सकती है। इसलिए स्वर्ग की कामना नहीं करनी चाहिए। स्वर्ग लोक का मालिक इंद्र भी श्रापित होता है।

असली सुख और परम शांति परमधाम में होती है।

महर्लोक

महर्लोक में आत्मायें स्वर्ग लोक की तरह भोगी नहीं होती हैं। यहाँ आत्मायें ज्ञानी होती हैं। जो कि देवी-देवताओं से भी ज्यादा महान-ज्ञानी होती हैं। जो आत्मायें जानती हैं कि स्वर्ग लोक भोग लोक है और यहाँ आत्मा का पतन होता है वो महर्लोक में आती हैं। यहाँ शरीर अच्छा होता है। यहाँ आत्मायें अपने-अपने ग्रुप में रहती हैं और एक साथ पुरुषार्थ करती हैं। इनको ब्रह्मांड में होने वाली प्रलय के बारे में पता चल जाता है। यहाँ भी बाहर के ब्रह्मांड गैलेक्सी आदि से आत्मायें आती हैं। महर्लोक में भी अनंत परतें (layers) हैं और सभी में अलग-अलग समय है। महर्लोक 1 करोड़ योजन यानि 10 करोड़ किलोमीटर है। महर्लोक में सूक्ष्म दुनिया अर्थात तीन तत्वों - आकाश, वायु और अग्नि की दुनिया होती है। यहाँ की सूक्ष्म दुनिया स्वर्ग लोक से शुद्ध होती है। यहाँ भोग के अणु नहीं होते इसलिये आत्मायें ऊपर के लोकों में जाने के लिये तप करती हैं। महर्लोक में ऋषि समान आत्मायें

रहती हैं। स्त्री और पुरुष मित्रों के रूप में होते हैं, भोगी नहीं होते, साथ में तपस्या करते हैं।

जन लोक

जन लोक महर्लोक के ऊपर स्थित है और जन लोक का विस्तार 2,00,00,000 योजन है। यह शाश्वत प्रसिद्ध संतों का निवास है। जन शब्द का अर्थ है लोग। यहाँ पर आत्माओं की संख्या बहुत होती है इसीलिये इसे जन लोक कहते हैं। यहाँ गृहस्थ जैसा जीवन होता है। यहाँ पर पृथ्वी जैसा गृहस्थ जीवन बिताते हैं यहाँ सृजन भी होता है लेकिन धरती के जैसे भोगी लोग नहीं होते हैं। यहाँ भी आत्मा ऊपर के लोकों में जाने के लिये पुरुषार्थ करती हैं। अनेक धर्म-पंथ-मठ वाली आत्मायें यहाँ रहती हैं। जन लोक में महान गुरु और संत रहते हैं और समय-समय पर वह भूलोक (पृथ्वी) पर मानव जाति के उत्थान के लिये अवतरित होते रहते हैं। सूक्ष्म जगत में भी अलग-अलग कई परतों (layers) में, अपने-अपने धर्म के तीन तत्वों के मंदिर, मस्जिद, चर्च और आश्रम हैं। जन लोक में पृथ्वी जैसे गाँव, शहर, घर, पहाड़, नदियां आदि हैं लेकिन सारे तीन तत्वों के हैं। यहाँ आत्मा के पास कई ब्रह्मांडों का ज्ञान होता है लेकिन ये सब जन लोक में ही रहना चाहती है। यहाँ वायुमंडल पृथ्वी से हल्का होता है इसलिये आत्मा को थोड़ा आराम मिलता है और आत्मा यहाँ ही रुक जाती है। जन लोक में एक दिन धरती के 100 साल के बराबर है। जन लोक महा कल्प प्रलय तक रहता है। यहाँ रहने वाली आत्मायें धर्मावलम्बी होती हैं और विभिन्न देवताओं की उपासना करती हैं जैसे कि विष्णु, शिव, शक्ति इत्यादि। यहाँ शक्ति की उपासना ज्यादा करते हैं। यहाँ विभिन धर्म के धर्म पिता, गुरु, गोसाईं रहते हैं और अपने-अपने धर्म और अनुयाई को यहाँ से मदद करते हैं एवं अपने धर्म-मत को प्रचार करने का प्रयास करते हैं।

तप लोक

तप लोक (तपो लोक) जनलोक की तुलना में दो गुना बड़ा है। विदेह (शरीर रहित) विराज और कई अन्य देवता इस लोक में निवास करते हैं। तप लोक तपस्या की दुनिया है। आत्मायें यहाँ पर तपस्या करती हैं। यहाँ आत्मायें एक-दूसरे को नहीं देखती। यहाँ निवास करने वाली आत्मायें अपने-अपने इष्ट देव की तपस्या में लीन

रहती हैं। कोई विष्णु तो कोई आदि शिव-शक्ति की उपासना और तपस्या में लगी रहती हैं। तप लोक चार करोड़ योजन का है यानि 40 करोड़ किलोमीटर। यहाँ का एक दिन धरती के 10000 साल बराबर है। यहाँ का वायुमंडल निचले स्तर (Layer) से ज्यादा शक्तिशाली है। जैसे-जैसे आत्मा ऊपर के आयामों में जाती है वैसे-वैसे आत्मा में शक्ति बढ़ जाती है। वातावरण शक्तिशाली हो जाता है। जैसे-जैसे आत्मा ऊपर जाती है, धीरे-धीरे उसके शरीर से वायु तत्वों का प्रभाव खत्म होता जाता है तब शरीर में आकाश तत्व बढ़ता जाता है। आत्मा आगे के आयामों में जैसे कि ब्रह्मा पुरी (ब्रह्मलोक) की ओर जाती है।

ब्रह्मा पुरी (सत्य लोक/ब्रह्म लोक)

क्या सत्य लोक और ब्रह्म लोक एक ही है? लोग सत्य लोक को ही ब्रह्मा पुरी कह देते हैं। लेकिन सत्य लोक ब्रह्मापुरी से नीचे है अर्थात एक लोक में बहुत सारी परतें (Layers) होती हैं और सत्य लोक ब्रह्मापुरी के निचले लोक में है। यहाँ तपस्वी आत्मायें रहती हैं। यहाँ ब्रह्मा और सरस्वती रहते हैं, ब्रह्मा द्वारा सृजन किया जाता है। ब्रह्मांड के सृजन के समय जब ब्रह्मा जी ने सप्तऋषियों का सृजन किया था तब सप्तऋषियों ने सात लोकों की रचना की थी इसलिये ये सात लोक ब्रह्मापुरी से नीचे हैं। ब्रह्मा की आत्मा परम आकाश से बनी हुई है। आत्मा जब ब्रह्मापुरी में आती है तब उसे सत्य की पहचान होती है, सत्य का ज्ञान होता है, यह सत्य का जगत है। यहाँ सूक्ष्म शरीर का हिसाब खत्म होता है। जो आत्मायें आकाश तत्व से बनी हैं उन आत्माओं की यात्रा ब्रह्मा पुरी में खत्म होती है, वह चाहे तो अपने रचयिता में विलीन (Dilute) हो सकती हैं। आकाश तत्व से बनी हुई आत्मा ब्रह्मापुरी तक ही जा सकती हैं उसके आगे नहीं जा सकती है। परम आकाश तत्व और परम प्रकाश से बनी हुई आत्मायें विष्णुपुरी या उसके ऊपर के आयामों में जा सकती हैं। विष्णुपुरी जाने के लिये आत्मा को तपस्या करनी पड़ती है। तीन तत्वों का हिसाब खत्म करके आत्मा विष्णु लोक (कारण जगत) में जाती है। सत्य लोक या ब्रह्मा पुरी में आत्मा को अपने रचयिता के बारे में पता लग जाता है। इसलिये पावरफुल आत्मा अपने रचयिता के पास जाने का पुरुषार्थ करती है।

ब्रह्मा पुरी और धरती के समय में बहुत अंतर है। ब्रह्मा का 1 सेकंड धरती के ऊपर एक लाख साल के बराबर है। ये हमारे पुराण में भी बताया गया है। उदहारण के लिये - धरती के ऊपर एक राजा रेवत कुकुडमी हुये उस समय सत्य युग चल रहा था और उनकी बेटी का नाम रेवती था। कुकुडमी अपनी बेटी के साथ ब्रह्मा पुरी ब्रह्मा से मिलने के लिये गये। वो ब्रह्मा जी से जानना चाहते थे कि उनकी बेटी के पति कौन होंगे? लेकिन जब वो ब्रह्मा जी के पास पहुंचे तो वो उस समय नाच-गाना सुनने में व्यस्त थे इसलिये कुकुडमी और रेवती को ब्रह्म लोक में प्रतीक्षा करनी पड़ी। जब ब्रह्मा जी से वो मिले और धरती पर लौटे तब धरती पर 27 चतुर्युग खत्म हो गये थे। यदि इसकी गणना की जाये तो राजा कुकुडमी को ब्रह्मा पुरी में 19.43 मिनट प्रतीक्षा करनी पड़ी। अर्थात धरती के ऊपर समय और ब्रह्मा पुरी के समय में बहुत अंतर है। जैसे-जैसे ऊपर के आयाम या लोकों में आत्मा जाती है तो समय धीरे हो जाता है लेकिन धरती के ऊपर समय बहुत जल्दी चलता है।

एक लोमश ऋषि हुए जिनकी आयु ब्रह्मा के 15 साल थे जिसका उल्लेख हमारे पुराण में है। यानि उन्होने 5400 कल्प प्रलय देखे हैं। मार्कण्डेय ऋषि की आयु ब्रह्मा के सात दिन थी, यानि धरती के ऊपर 6048 करोड़ वर्ष हुए मतलब उन्होंने 7 कल्प प्रलय को देखा होगा। इस प्रकार समय की गति को विज्ञान में Time Dilation कहते हैं।

विष्णुपुरी (कारण जगत)

यह एक दिव्य निवास है लेकिन यह ब्रह्मांड के अंदर है जिसे भगवान की माया नामक ब्रह्मांडीय ऊर्जा द्वारा बनाया गया है। दूध का एक महासागर (क्षीर सागर) है। इसको वैकुंठ लोक के रूप में जाना जाता है जो कि दिव्य है। भगवान विष्णु, लक्ष्मी और अन्य दिव्य सहयोगियों के साथ यहाँ निवास करते हैं। बैकुंठ में रहने वाले सभी प्राणी दिव्य होते हैं।

विष्णु लोक में वायुमंडल में 50% परम तत्व हैं अर्थात परम आकाश, परम वायु और परम अग्नि 50% हैं। वहाँ परम सुख होता है। राक्षस यहाँ प्रवेश नहीं कर सकते हैं। जो आत्मायें अपने जीवनकाल में विष्णु की निरंतर उपासना करती हैं वो विष्णु पुरी को प्राप्त होती हैं।

विष्णुपुरी में एक गोले में राधा कृष्ण का एक रूप है जहाँ रास लीला होती है और गोपियाँ यहाँ रहती हैं। जो भी राम और कृष्ण को विष्णु के अवतार मान के उपासना करते हैं और पूर्ण पवित्रता रखते हैं और सारे कर्म बंधन से मुक्त हो जाते हैं वो विष्णुपुरी में आते हैं और परम सुख का अनुभव करते हैं। विष्णु की आत्मा परम आकाश से बनी हुई है। कारण जगत (Causal world) को ही विष्णुपुरी कहते हैं। यहाँ 50% परम तत्व और 50% तीन तत्व का शरीर होता है। विष्णुपुरी रजो प्रधान है। यहाँ फरिश्ता रहते हैं। विष्णुपुरी में वायुमंडल बहुत ही मधुर संगीतों की धुन से भरा होता है। एक-एक कण में मधुरता और शीतलता की अनुभूति हो ऐसा यहाँ का वातावरण होता है। विष्णुपुरी में रहने वाली आत्माओं को पृथ्वी लोक पर क्या होने वाला है सब पता होता है। यहाँ पर कारण जगत वाली आत्मायें सूक्ष्म जगत वाली आत्माओं को दिशा देती हैं और मदद भी करती हैं। विष्णुपुरी में कारण शरीर का हिसाब-पूरा खत्म करके ही आत्मा शिवपुरी जा सकती है।

शिवपुरी (महाकारण जगत)

यहाँ शिव-शक्ति आकारी रूप में रहते हैं और वही सारे ब्रह्मांड को चलाते हैं। शिव को यहाँ पर महादेव भी कहा जाता है क्योंकि ये सारे देवताओं का सृजन करते हैं। शक्ति को यहाँ पर आदि शक्ति कहा जाता है क्योंकि उनकी शक्ति से हमारे ब्रह्मांड का परिचालन होता है। शिवपुरी को महा कारण जगत (Great Causal World) कहेंगे। यहाँ आत्माओं का महा कारण शरीर होता है अर्थात परम आकाश तत्व का शरीर होता है। यहाँ 100 % परम तत्वों की दुनिया होती है। पहाड़, नदियाँ आदि सभी परम तत्वों की होती हैं। आत्मायें बहुत समय शिवपुरी में परम सुख में रहने के बाद, परमशान्ति को खोजती हैं। परम शांति प्राप्त करने के लिये वह निराकारी शिव को याद करती हैं।

परमधाम

परमधाम हमारे ब्रह्मांड (Solar System) में सर्वोच्च है। परमधाम, जिसको अमरलोक भी कहते हैं। निराकारी शिव एक ब्रह्मांड का मालिक है। निराकारी शिव को हमारे ब्रह्मांड के परब्रह्म परमेश्वर के नाम से संबोधित किया जाता है। परमधाम में

आत्मा भावातीत, कर्मातीत, निराकारी कैवल्य, परमशान्ति और परमसुख की अवस्था में होती है। शिव के तीन रूप हैं - निराकारी, आकारी और साकारी। निराकारी शिव परमधाम में रहते हैं। आकारी शिव शिवपुरी में और साकारी रूप शंकर (महादेव) हिमालय - कैलाश में रहते हैं। निराकारी शिव को स्वयंभू नहीं कहेंगे। शिव का भी रचयिता महाशिव है जो 1 गैलेक्सी का मालिक है। निराकारी शिव खुद कभी भी कोई काम नहीं करते परंतु करवाते हैं। वह कर्म बंधन में भी नहीं आते हैं। निराकारी शिव, शिव-शक्ति द्वारा और शिव-शक्ति, ब्रह्मा द्वारा सृजन, विष्णु द्वारा पालन, और शंकर द्वारा विनाश करवाते हैं।

जब आत्मा की शक्ति क्षीण हो जाती है तब शिव जीव बन जाता है और फिर पुरुषार्थ करके उसकी आत्मा जीव से शिव बनने का प्रयास करती है।

परमधाम में परम प्रकाश से बनी हुई आत्मा ही जा सकती है। परम आकाश से बनी आत्मायें परमधाम में नहीं रह सकती अर्थात वो परम प्रकाश में विलीन हो जाती हैं। जो आत्मायें शिव में से निकली हैं वो आत्मायें अपने रचयिता में समा जाती हैं और उसकी यात्रा वही समाप्त हो जाती है। यदि आत्मा को मुक्ति चाहिए तो वो शिव परमात्मा में समा जाती है और उसका अस्तित्व खत्म हो जाता है। ऊपर के आयामों (ब्रह्मांडों) से आयी हुई आत्माओं की यात्रा तब तक चलती है जब तक कि वो अपने रचयिता तक नहीं पहुँच जाती है। गैलेक्सी या यूनिवर्स से आयी हुई आत्मायें परम प्रकाश (Light) से बनी हुई हैं और वो परमधाम से ऊपर गैलेक्सी और यूनिवर्स तक जा सकती हैं। अंत में आत्मा अपने-अपने रचयिता में समा जाती है, या वो शिव से महाशिव, परम महाशिव बन सकती है।

धरती पर समय

पृथ्वी के वर्षों की अवधि	बापूजी ने बताया	ब्रह्मापुरी का (हमारे ब्रम्हांड के ब्रह्मा का)	महा शिव का	परम महा शिव का	परम परम महा शिव का
1 साल	स्वर्गलोक का 1 दिन	$1x10^{5}$ सेकंड			
10 साल	महर्लोक का 1 दिन	$1x10^{4}$ सेकंड			
100 साल (लगभग)	जनलोक का 1 दिन	$1x10^{3}$ सेकंड			
10000 साल (कम से कम)	तपलोक का 1 दिन	0.1 सेकंड			
1 लाख साल		1 सेकंड			
2 लाख साल	विष्णुपुरी का 1 सेकंड				
3 लाख साल	शिवपुरी का 1 सेकंड				
4 लाख 32000 साल	कलयुग की आयु (मनुष्य की आयु 100 साल)				
8 लाख 64000 साल	द्वापर की आयु (मनुष्य की आयु 1000 साल)				
12 लाख 96000 साल	त्रेता की आयु (मनुष्य की आयु 10000 साल)				
17 लाख 28000 साल	सतयुग की आयु (मनुष्य की आयु 1 लाख साल-height 30 ft)				
25 लाख साल	हमारे परमधाम का 1 सेकंड				
432 करोड़ साल	देवताओं की/स्वर्ग की आयु – 1000 चतुर्युग - कल्प प्रलय	1 दिन (रात नहीं)			
864 करोड़ साल	2000 चतुर्युग	1 दिन और 1 रात			
31 खरब, 10 अरब, 40 करोड़ साल		1 साल (दिन और रात)			
1555 खरब, 20 अरब साल	1 परार्ध	50 साल (दिन और रात)			
3110 खरब, 40 अरब साल	2 परार्ध - महाकल्प प्रलय (SOLAR SYMTEM, खत्म हो जाता है)	100 साल (दिन और रात)	1 सेकंड (पल)		
(3110 खरब, 40 अरब साल) x 3,15,36,00,0000 (60x60x24x365x1000) साल	महाकाल प्रलय (GALAXY खत्म हो जाता है)		1000 साल	1 सेकंड	
				10000 साल	1 सेकंड

हद और बेहद की दुनिया

हद की दुनिया यानी स्थूल पाँच तत्वों की दुनिया, मृत्यु लोक की दुनिया, जीवन-मरण की दुनिया। बेहद की दुनिया यानी परम तत्वों, परम प्रकाश की दुनिया अर्थात स्थूल पाँच तत्वों से परे की दुनिया यानि हद की दुनिया से परे की दुनिया। बेहद का मतलब है जिसका कोई अंत नहीं। जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। जो हमारी सोच से भी अति परे है उसे बेहद कहेंगे।

3.

प्रकाश, गति और समय का विस्तार

(Light Speed & Time Dilation)

आधुनिक वैज्ञानिकों ने अपने प्रयोगों से इस तथ्य की पुष्टि कर दी है कि अंतरिक्ष में समय की गति अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग होती है। इसे "Time Dilation" कहा जाता है। उनके अनुसार यह पाया गया है कि समय के प्रवाह की गति अनुभवकर्ता की गति पर निर्भर करती है। साथ ही साथ समय को अनुभव करने वाला व्यक्ति अगर किसी बहुत बड़े द्रव्यमान (Mass) की वस्तु के पास है, तो भी उसके अनुभव होने वाले समय की गति में अंतर होगा।

उदाहरण के लिये :

धरती पर समय के प्रवाह की जिस गति को हम अनुभव करते हैं, वो किसी ब्लैक होल के पास अनुभव होने वाले समय की गति से कई गुना अधिक होती है। मतलब किसी ब्लैक होल के पास धरती की तुलना में समय बहुत ही धीरे गुजरता है।

अपने अनसुंधानो एवं प्रयोगों में वैज्ञानिकों ने पाया है कि आसमान में उड़ने वाले विमानों में रखी हुई घड़ियां नीचे जमीन पर रखी हुई घड़ियों की तुलना में अधिक गति से चलती हैं।

हर एक किलोमीटर की ऊँचाई पर एक दिन की अवधि 10 नैनोसेकन्ड (NS) तक बढ़ जाती है। इसी तरह अगर हम, किसी ऐसे यान में यात्रा कर रहे हों, जिसकी गति काफी ज्यादा हो तो समय हमारे लिये धीमा हो जाएगा जैसे-जैसे हम प्रकाश की गति के नजदीक पहुँचते हैं समय हमारे लिये धीमा होता जाता है, अगर हमारी गति, प्रकाश की गति के बराबर हो जाये तो, समय हमारे लिये लगभग रुक जाएगा। प्रकाश की गति से चलने वाले की उम्र बढ़ती नहीं है, उसके लिये समय थम जाता है।

International Space Station (ISS) में जाने वाले अंतरिक्ष यात्रियों की आयु 6 महीने की समयावधि में इस धरती पर लोगों की तुलना में लगभग 0.005 सेकंड कम होती है, यानी ISS में 6 महीना बीत जाता है तो धरती के ऊपर 6 महीना 0.005 सेकंड होता है। ऐसा इसलिये है क्योंकि ISS 7.6 km प्रति सेकंड की रफ्तार से पृथ्वी का चक्र लगा रहा है।

पूज्य बापूजी के द्वारा दिए गये बेहद के ज्ञान अनुसार आत्मा के भीतर के परम प्रकाश की शक्ति से उस आत्मा के यात्रा करने की गति तय होती है और जिस गति से आत्मा चलती है, उससे सृष्टि में समय की गति निर्धारित होती है। इसीलिये, यह कहा जा सकता है कि अंतरिक्ष(Space) में समय(Time), गति(Speed) तथा आत्मा की शक्ति(Power) तीनों सापेक्ष (Relative) हैं। इसका प्रमाण यह है कि धरती से ऊपर स्थित सूक्ष्म लोकों में समय की गति धरती के समय की गति से बहुत धीमी है। उदाहरण के लिये : तीसरे लोक में रहने वाले देवताओं का एक दिन धरती के मनुष्य के एक वर्ष के बराबर होता है। ब्रह्मा का एक दिन और रात मिला कर धरती लोक में मनुष्य के 8 अरब 64 करोड़ साल निकल जाते हैं। निराकार स्वरूप में, परमधाम में आत्मा समय से परे की अवस्था का अनुभव करती है।

पुराणों में श्रीकृष्ण के अग्रज बलराम जी के विवाह का प्रसंग आता है। सतयुग में राजा रेवत कुकुड्मी जब अपनी पुत्री रेवती के लिये उचित वर नहीं खोज पाये तो ब्रह्मदेव से परामर्श के लिये पुत्री संग वे ब्रह्मापुरी पहुँचे। ब्रह्मदेव ने राजा को बलराम जी के बारे में बताया और उन्हें वापस धरती लोक भेज दिया। मगर जब वे धरतीलोक में वापस पहुँचे तो उन्होंने पाया कि सतयुग और त्रेता युग बीत चुके हैं और द्वापर का भी लगभग अंत चल रहा है। ब्रह्मापुरी में बिताये हुए थोड़े से समय में ही धरती पर 2 युग बीत गये थे।

ब्रह्मांड को समझने के लिये वैज्ञानिक दृष्टिकोण

अतीत से तुलना करें तो वाकई विज्ञान ने बहुत उन्नति कर ली है लेकिन विज्ञान के कारण जीवन जितना आसान हुआ है, उतना ही मनुष्य प्रकृति से दूर होता जा रहा है। विज्ञान के कारण स्थूल साधन तो बहुत से बन गये हैं लेकिन इसका दुष्परिणाम यह हुआ है कि मनुष्य बाहर की दुनिया में ही सुख को खोजने लगा है और स्वयं को

भूल बैठा है। वैज्ञानिकों की मानें तो मनुष्य बस कुछ अणुओं का समूह मात्र है, हाड़-माँस का पुतला है और एक विकसित पशु मात्र है। परन्तु सत्य यह है कि **मनुष्य उठा हुआ पशु नहीं बल्कि गिरा हुआ देवता है।** वास्तव में, स्थूल नेत्रों से देखी जा सकने वाली काया अविनाशी अस्तित्व वाली आत्मा का एक बाहरी आवरण मात्र है। हम आवरण को ही सत्य मान बैठे हैं। और यही हमारी सारी समस्याओं की जड़ है। परन्तु यह बात विचारणीय है कि वैज्ञानिक आत्म तत्व की खोज में क्यों विफल रहे हैं? इतना ही नहीं, इतनी तरक्की कर लेने के बाद भी वैज्ञानिक अंतरिक्ष के गुह्य रहस्य - डार्क मेटर और डार्क एनर्जी को नहीं सुलझा पाये हैं।

इसका कारण यह है कि वैज्ञानिकों की बुद्धि सिर्फ स्थूल तत्वों तक ही सीमित है। यही कारण है कि वो केवल स्थूल साधन ही बना पाते हैं और इन स्थूल उपकरणों से केवल स्थूल संसार ही देखा जा सकता है। जो मनुष्य आध्यात्म और ज्ञान का अनुसरण करता है, उसकी बुद्धि भीतर की ओर मुड़ जाती है और स्व याने अपनी आत्मा पर केंद्रित हो जाती है। "ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या " - अर्थात ब्रह्म यानी परमात्मा सत्य है और संसार असत्य है। अब चूँकि आत्मा परमात्मा का ही अंश है तो इसका अर्थ यह हुआ कि सत्य हमारे भीतर ही है। इसीलिए स्वयं के भीतर आत्मा तक की यात्रा करने से ही सम्पूर्ण सृष्टि के रहस्य उजागर किये जा सकते हैं। इस सम्बन्ध में महान वैज्ञानिक निकोला टेस्ला ने कहा था –

"The day science begins to study non physical phenomena it will make more progress in one decade than in all the previous centuries of its existence"

''जिस दिन से विज्ञान दिव्य तथा अव्यक्त प्रक्रियाओं का अध्ययन करना शुरू कर देगा, एक दशक में ही वह इतनी तरक्की कर लेगा जितनी पिछली सभी सदियों में नहीं होगी।''

इस समग्र विश्व में भौतिक दुनिया जो चर्म चक्षुओं से देखी जा सकें, 0.01 % से भी कम है। भौतिक दुनिया स्थूल तत्व (आकाश, वायु, अग्नि, जल, मिट्टी) से बनी हुई दुनिया है, इस पूरी स्थूल दुनिया को, स्थूल विज्ञान के साधन आज नहीं तो कल देख सकेंगे। वास्तव में जल और मिटटी, यह दो तत्व ही व्यक्त, दृश्य जगत का कारण हैं। हमारे आस-पास अनगिनत भूत-प्रेतों की आत्मायें रहती हैं जो तीन तत्वों

आकाश, वायु और अग्नि की बनी होती हैं। इनको भी स्थूल आँखों से नहीं देखा जा सकता है।

अभौतिक (Invisible) दुनिया 99.99% से भी ज्यादा है। इस 99.99% विश्व को हमने कभी जाना ही नहीं। इसका कारण यह है कि 99.99% अभौतिक (Invisible) दुनिया, परमतत्वों (परम आकाश, परम वायु, परम अग्नि) से बनी हुई दुनिया है। स्थूल साधन उस आयाम (Dimension) में, जो Invisible हैं वहाँ प्रवेश नहीं कर सकते हैं इसलिये वह विश्व अनजाना रहा है। उस अभौतिक, पारलौकिक, अव्यक्त दुनिया को देखने के लिये, उस दुनिया में जाने के लिये, परमतत्वों के साधन और परमतत्वों का शरीर चाहिए।

पिछली सदी में कुछ महान वैज्ञानिक हुए जिन्होंने विज्ञान में बहुत महान योगदान दिए और आश्चर्यजनक बात यह है कि ऐसा करने के लिये उन्हें किन्ही बहुत बड़े यंत्रों तथा प्रयोगशालाओं की जरूरत नहीं पड़ी।

अल्बर्ट आइंस्टीन को कैसे पता चला कि अंतरिक्ष मुड़ सकता है और समय रुक सकता है? जब कि उन्होंने यह जानने के लिये ना ही कोई बड़ा प्रयोग किया था, ना ही उनके साथ कोई दूसरा Researcher, और ना ही कोई प्रयोगशाला उनके पास थी। उन्होंने अपनी कल्पनाशक्ति से ही एक दिन अचानक सापेक्षता का सिद्धांत (Theory of Relativity) तथा E = mc2 का इक्वेशन खोजा था। वे आँखें बंद करके अलग दुनिया में चले जाते थे और ख्यालों के माध्यम से नये-नये विचार लाते थे। आइंस्टीन पूरी रिसर्च अपनी सोच में कर लेते थे, जो लैब के प्रयोग से ज्यादा सटीक होती थी। उसे वे Thought experiment (विचारों मे प्रयोग करना) कहते थे। प्रिंसटन विश्व विद्यालय में जब आइंस्टीन पहली बार गये थे, तब वहाँ के अधिकारीयों ने कहा कि आप अपने प्रयोग के लिये, आवश्यक उपकरणों की सूची दे दीजिये, तब आइंस्टीन ने जवाब में कहा था मुझे केवल एक ब्लैक बोर्ड, कुछ चौक, कागज और पैंसिल दे दीजिये। यह सुनकर अधिकारी हैरान हो गये थे कि इन से कैसे प्रयोग किये जा सकते हैं?

निकोला टेस्ला ने अपनी पुस्तक : Man's Greatest Achievement में लिखा है "मेरा मस्तिष्क केवल एक रिसीवर है। ब्रह्मांड में ज्ञान, ऊर्जा तथा प्रेरणा

का एक महान केंद्र है। मैं इस केंद्र के गुह्य रहस्यों को तो नहीं जानता लेकिन इतना अवश्य जानता हूँ कि इसका अस्तित्व है।

निकोला टेस्ला को Visualizations (मानसिक दृश्य) से नये आविष्कारों के आइडिआ आते थे और उस (आविष्कार) का आकार, माप, लंबाई, चौडाई सभी आयामों की तस्वीर, पूरी सटीकता के साथ उनके दिमाग में तैयार हो जाती थी। यहाँ तक कि उस अविष्कार पर काम शुरू करने से पहले ही, उसका अंतिम रूप भी उनके दिमाग में तैयार हो जाता था, जिसे "Picture Thinking" कहते हैं। उन्होंने आजीवन शादी नहीं की थी, और वह कहते थे उनका ब्रह्मचर्य उनकी वैज्ञानिक उपलब्धियों में मददगार रहा है। वे परग्रह वासियों की मौजूदगी पर पूरा यकीन करते थे। ऐसा भी कहते हैं कि एलियंस उनके संपर्क में थे और वे उनसे बात भी कर पाते थे। वह अपने Interview में कहते थे कि सारे वैज्ञानिक बहुत सारे विषयों पर बात करते हैं लेकिन कोई भी अपने **Intuition (अंत:प्रज्ञा)** के बारे में बात नहीं करता, जो सब से ताकतवर होती है।

अक्सर वैज्ञानिक पहले एक्स्पेरिमेंट करते हैं और एक्स्पेरिमेंट के आधार पर जो निष्कर्ष निकलता है, उस आधार पर थ्योरी देते हैं, मगर इन सभी महान बुद्धिजीवियों में यह समानताएँ थी कि वे अपनी कल्पनाओं में सोचते थे, फिर थ्योरी लिखते, उस के बाद उस थ्योरी के आधार पर एक्स्पेरिमेंट को अन्जाम देते थे।

इसका कारण बापूजी ने बताया है कि यह आत्मायें दूसरे आयाम से माना दूसरी गैलेक्सी, दूसरे यूनिवर्स से आई हुई अलग-अलग श्रेणी की आत्मायें है। हम तो कुछ भी नहीं हैं, उनका ज्ञान और तकनीक हम से काफी काफी ज्यादा उन्नत है। यहाँ पर जन्म लेने वाली आत्मायें, वहाँ के वैज्ञानिकों के समूह की ही आत्मायें होती हैं। वे धरती के मनुष्यों का अच्छा करने यहाँ जन्म लेती हैं । उनके ही समूह में से कोई एक यहाँ जन्म लेता है और बाकी आत्मायें उन्हें Rays (रेज) मार कर काम करने के लिये प्रेरित करती हैं। यहाँ जन्म लेने के बाद, उस आत्मा को पहले का कुछ भी याद नहीं रहता, उन्हें अपने सूक्ष्म जगत के साथी से मैसेज रिसीव करने में, उसे जागृत मस्तिष्क में लाकर समझने में और आविष्कार करने में बहुत मेहनत लगती है। इसलिये वह आत्मायें बार-बार मनन चिंतन में, अकेलेपन में ऊपर की दुनिया में चली जाती है, एकदम से खयालों में चली जाती है। आप देखोगे, वे सब के बीच में

बैठे-बैठे खयालों में खो जायेंगी, खयालों के जरिये ज्ञान की दुनिया में चली जाती है। प्रेरणा देकर काम करवाने वाली आत्मायें, उन्हें Rays (रेज) मारके, अविष्कार के बारें में खयाल लाने के लिये, सोचने के लिये मजबूर करती हैं, उन्हें विचार करवाती है कि तुम्हें ऐसा-ऐसा करना है।

जैसे फिल्म या कोई टी.वी सीरीज, जो ऊपर की दुनिया के बारे में बताती है या भविष्य में होने वाली घटना के बारे में बताती है, तो वो फिल्म बनाने वालों को प्रेरणा सूक्ष्म जगत के एलियंस ही देते हैं, इनको Rays (रेज) मार के वो कल्पना करवाते हैं।

स्टीफन हौकिंग का पूरा शरीर लक्वाग्रस्त था, उनके मस्तिष्क को छोड़कर शरीर का कोई भी अंग काम नहीं करता था। छोटी उम्र में ही डॉक्टरों ने बताया था वो ज्यादा से ज्यादा 2-3 साल ही जिंदा रहेंगे।

उनके पास सूक्ष्म जगत वाले जो एलियंस थे वे उन्हें Rays (रेज) मार-मार कर उनके मस्तिष्क को जिंदा रखते थे और उन सूक्ष्म जगत वाली आत्माओं ने ऐसी तकनीक विकसित करके स्टीफन हौकिंग को प्रेरणा दी कि वो सोचें और उनका ज्ञान लोग देख और सुन पायें । उनका मस्तिष्क केवल संकल्पों के द्वारा अपनी थीसिस बताता था।

वैज्ञानिक अच्छा काम करते हैं मगर ज्यादातर वैज्ञानिक ईश्वर को नहीं मानते, स्टीफन हौकिंग जैसे वैज्ञानिक बोल देते हैं कि ईश्वर है ही नहीं। तो इतनी बड़ी हस्तिओं को मान कर लोग भी नास्तिक बन जाते हैं। जिससे दुनिया में भौतिकवाद (Materialism) फैलता है। तो इन लोगों ने जो भी कुछ विज्ञान के जगत में किया यह कोई बड़ी बात नहीं, यह सब तो सूक्ष्म जगत वाले एलियंस करा रहे हैं। तो यह जितना अच्छा करके जाते हैं उनसे कई गुणा ज्यादा पृथ्वी का बुरा करके चले जाते हैं, नास्तिकवाद फैलाकर जाते हैं, आज उनकी वजह से अमेरिका-यूरोप में ज्यादातर लोग नास्तिक हो गये हैं।

वैज्ञानिकों की बातों को लोग एकदम पकड़ लेते हैं, लेकिन सिद्ध पुरुष कोई भी बातें करतें हैं तो उनको लोग गंभीरता से नहीं लेते, उनकी बातें उन्हें सच नहीं लगती

हैं। कोई सिद्ध पुरुष वेद, उपनिषद और सूक्ष्म जगत की बातें कहे तो उनकी नहीं मानेंगे, जब कि बड़े-बड़े वैज्ञानिक हमारे वेद, उपनिषद पढ़कर ही खोज करते हैं। आज वैज्ञानिकों के कारण हमारे ऋषि-मुनियों, सिद्ध पुरुषों में मानने वालों की संख्या कम हो गई है।

आज से केवल 388 साल पहले तकरीबन 1633 में हम यह मानते थे कि पृथ्वी युनिवर्स का केंद्र है और सूर्य समेत सारे ग्रह पृथ्वी का चक्र लगाते हैं। गैलेलियो ने बताया तभी हमें पता चला कि सूर्य केंद्र मे है और पृथ्वी और सारे ग्रह सूर्य का चक्कर लगाते हैं। हमारे भौतिक स्थूल साधनों ने पिछले 150-200 साल में जो ढूंढा है, हमने तो दिव्य द्रष्टि और योग बल से हज़ारों साल पहले ही ढूंढ लिया था। अभी के हमारे पंचाँग और ज्योतिष विद्या उसके प्रमाण हैं। हमारे शास्त्रों में अनंत कोटि ब्रह्मांड की बातें लाखों साल पहले ही कह दी गयी हैं, मगर लोग वैज्ञानिकों की बातें मानते हैं।

हमें परमात्मा में विश्वास करना चाहिये वैज्ञानिक कभी भी परमात्मा की जगह नहीं ले सकते हैं।

4.

ब्रह्मांड का समय

ब्रह्मांड का समय और उसकी गणना

कलयुग की आयु	=	4,32,000 साल		
द्वापर की आयु	=	8,64,000 साल		
त्रेता की आयु	=	12,96,000 साल		
सतयुग की आयु	=	17,28,000 साल		
TOTAL	=	4320000 साल	=	4 युग यानि 1 चतुर्युग (1 युगांतर)

ब्रह्मांड का प्रलय

	कब होता है?	कितने साल बाद होता है	कौन और कैसे करता है	आत्माओं का क्या होता है
अर्द्ध प्रलय	4 युग = 1 चतुर्युग = 1 युगांतर	43,20,000 साल	शंकर प्रलय करते है।	तमो प्रधान मनुष्य मर जाते है।
प्रलय	71 चतुर्युग = 71 युगांतर = 1 मन्वन्तर= 71अर्द्ध प्रलय	30 करोड़ 67 लाख 20 हजार साल	शंकर जल प्रलय करते है।	पृथ्वी के सभी मनुष्य समाप्त हो जाते है।
कल्प प्रलय	1000 चतुर्युग = 14 मन्वन्तर = ब्रह्मा का एक दिन	432 करोड़ साल	विष्णु 12 सूर्य की अग्नि पैदा करके तीनो लोक को जला कर भस्म कर देते है।	भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक की आत्मायें मुक्त (Dilute) हो जाती है।
महाकल्प प्रलय	महाशिव का एक पल = ब्रह्मा के 100 साल = 2 परार्ध = 36500 कल्प प्रलय	3110 खरब 40 अरब साल	शिव सूर्य में प्रवेश कर कालअग्नि पैदा करके पूरा ब्रह्मांड जलाकर भस्म कर देते है।	पूरा ब्रह्मांड (14 लोक) खत्म हो जाते हैं और शिव की सभी रचना मुक्त (Dilute) हो जाती है।
महाकाल प्रलय	परम महाशिव का एक पल = महाशिव के 100 साल	3110 खरब 40 अरब साल X 315,36,00,0000 साल (1000 साल)	महा शिव महाकाल बनकर अग्नि पैदा करके अनंत कोटि ब्रह्मांडों को अपने रोम- रोम में समा देते है।	गैलेक्सी के सभी ब्रह्मांड (Solar Systems खत्म हो जाते हैं, सारे शिव और शिव की सभी रचनायें मुक्त (Dilute) हो जाती है।

- ब्रह्माके 50 साल = 1 परार्ध , ब्रह्माका 100 साल = 2 परार्ध।
- 1 मन्वन्तर होने पर, प्रलय के बाद, मनु सतरूपा का समय शुरू होता है। ब्रह्मा खुद में से मनु (पुरुष) निकालते हैं, फिर मनु खुद में से प्रकृति निकालते हैं और नई सृष्टि का आरंभ होता है। क्रिश्चियन धर्म में जिसे Adam और Eve कहते हैं।
- ब्रह्मा के पहले परार्ध के अनुमानतः 20 साल बाद यह सब प्रलय शुरू हुई है यानी लगभग 933 खरब, 13 अरब साल से यह प्रलय हो रही है।

विभिन्न खगोलीय वस्तु और मनुष्य की उम्र

मनुष्य और आत्माओं की उम्र	आज की उम्र (लगभग)	उम्र की सीमा (लगभग)	जानकारी
पृथ्वी और हमारे ब्रह्मांड के मनुष्य की उम्र	1244 खरब, 17 अरब साल (1244,17,00,00,00,000 साल)	3110 खरब, 40 अरब साल (3110,40,00,00,00,000 साल)	इस ब्रह्मांड के निराकारी शिव ने ब्रह्मा का सृजन किया और ब्रह्मा के 10 साल के बाद मनुष्य और धरती बनी।
हमारे सौर मंडल की जगह (space) की उम्र	1555 खरब, 21 अरब, 98 करोड़, 66 लाख, 45 हजार, 118 साल (1555,21,98,00,00,000 साल)	3110 खरब, 40 अरब साल (3110,40,00,00,00,000 साल)	एक ब्रह्मांड की उम्र ब्रह्मा के 100 साल के बराबर होती है उसमे से 50 साल अब तक जा चुके हैं।
हमारी आकाशगंगा और महाशिव category की आत्मा की उम्र	इस समय का आँकलन करना असंभव है। क्योंकि महा शिव से असंख्य शिवों का सृजन होता है और हर शिव एक ब्रह्मांड का मालिक होता है।	(3110 खरब, 40 अरब साल) 3110,40,00,00,00,000 साल x 315,36,00,0000 (60x60x24x365x1000) साल	महाकाल प्रलय:-महा काल प्रलय में महा शिव अनंत कोटि ब्रह्मांडों को अपने अंदर समा लेते हैं। इसलिये बोला जाता है प्रति पल असंख्य ब्रह्मांडों का सृजन और विसृजन होता है।

- आज कितने समय बीत चुके हैं इस ब्रह्मांड के सृजन के बाद :

- वर्तमान समय (हिंदू कालगणना के हिसाब से अभी) = ब्रह्मा के दूसरे परार्ध के, पहले दिन का, 7 वे मन्वन्तर का, 28 वें युगांतर का, कलयुग का, लगभग 5118 वाँ वर्ष चल रहा है।

- आज हमारे ब्रह्मांड का (ब्रह्मा के दूसरे परार्ध का पहला दिन) : लगभग 1555 खरब, 20 अरब, 198 करोड़ वाँ वर्ष चल रहा है।

प्रकाश वर्ष (light years)

भौतिक (स्थूल) रूप में देखें तो ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जो प्रकाश की गति से यात्रा (Travel) कर सकती है। केवल प्रकाश की किरणों जैसे रेडियो तरंगे, माइक्रो तरंगे, इंफ्रारेड, एक्सरे, गामा तरंगें, प्रकाश की गति से यात्रा कर सकती हैं। यानी अगर ब्रह्मांड में हम कोई संदेश, संकेत भेजते हैं या प्राप्त करते हैं तो वह भी ज्यादा से ज्यादा प्रकाश की गति से ही यात्रा कर सकती हैं।

1 वर्ष में प्रकाश जितना यात्रा करता है उस दूरी को 1 प्रकाश वर्ष कहते हैं।

1 Light Year = लगभग 95 खरब किलोमीटर (प्रकाश की गति लगभग 3 लाख किलोमीटर प्रति सेकंड है)।

हमें कोई भी वस्तु तब दिखती है, जब प्रकाश हमारी आँखों तक पहुँचता है। एक उदाहरण लिया जाये कि यदि पृथ्वी से 1 लाख प्रकाश वर्ष (Light Years) दूर, कोई नये तारे का (सूर्य का) आज सृजन हुआ, तो उस सूर्य के प्रकाश को, पृथ्वी पर पहुँचने में, 1 लाख साल लगेंगे क्योंकि वह तारा पृथ्वी से 1 लाख प्रकाश वर्ष दूर है, यानी कि पृथ्वी पर हम उस सूर्य की रोशनी को 1 लाख साल बाद देख सकेंगे।

उसी तरह कोई 1 लाख प्रकाश वर्ष दूर तारे का प्रकाश आज हमें पृथ्वी पर दिख रहा है, तो उसका मतलब है कि, 1 लाख साल पहले जो प्रकाश उस तारे से निकला था वह पृथ्वी पर पहुँचा और वह हमें दिखाई दे रहा है, मतलब 1 लाख साल पुराने तारे को हम अभी देख रहे हैं। हो सकता है आज की तारीख में वह तारा (सूर्य) ना भी हो, क्योंकि समझो आज वह तारा मिट भी गया हो उसका प्रकाश मिट भी गया, तो वह हमें 1 लाख साल बाद पता चलेगा, जब उसकी रोशनी हम तक पहुँचनी बंद हो जायेगी।

सूर्य की रोशनी को धरती पर पहुँचने के लिए करीब 8 मिनट का समय लगता है, तो सूर्य को हम हर समय करीब 8 मिनट बाद में ही देखते हैं।

आकाश गंगा (Milky Way) का केंद्र हमसे 25,000 साल प्रकाश वर्ष की दूरी पर है इसका मतलब है, Milky Way के केंद्र को आज हम 25,000 साल बाद

में देख रहे हैं और वह हमेशा ही 25,000 साल पूर्व में ही रहेगा। और अगर आप अपने नजदीकी किसी दोस्त को देख रहे हैं तो ऐसे में आपके दोस्त से जो Light टकराकर आपकी आँखों में गई उसे आप तक पहुँचने में 3.3 नैनों सेकंड का समय लगा जिसका मतलब हुआ आपने अपने दोस्त को 3.3 नैनों सेकंड बाद में देखा।

इसी तरह अगर हम किसी एलियंस की खोज में पृथ्वी से कोई रेडियो सिग्नल दूसरे ग्रह पर भेजते हैं जिस ग्रह की दूरी हमसे 2000 प्रकाश वर्ष है तो उन सिग्नल को वहाँ पहुँचने के लिये 2000 साल लगेंगे और अगर एलियंस वहाँ से उन संदेश को जवाब देते हैं तो उसे भी अपनी पृथ्वी पर पहुँचने के लिये और 2000 साल लगेंगे।

Source : Google - प्रकाश की यात्रा का समय (Light Traveling Time)

खगोलीय वस्तु	प्रकाश को पहुँचने में कितना समय लगेगा
पृथ्वी से चाँद तक	लगभग 1.30 सेकंड
पृथ्वी से सूरज तक	लगभग 8.20 मिनट
पृथ्वी से सबसे नजदीक के तारे तक	लगभग 4.3 वर्ष
पृथ्वी से हमारी गैलेक्सी के किनारे (end) तक	लगभग 81,000 वर्ष
पृथ्वी से हमारे यूनिवर्स के किनारे (end) तक	लगभग 4650 करोड़ वर्ष

5.

ब्रह्मांड के ज्ञान केन्द्र

हम सभी अपने जीवन में ऐसे क्षणों का अनुभव करते हैं जब हम शारीरिक या भावनात्मक संघर्ष के साथ अपनी निराशा से थक जाते हैं और जीवन लगभग असहनीय लगता है। जब हम इन मुद्दों पर विचार करते हैं, तो हम में से कई नकारात्मक पैटर्न को नोटिस करना शुरू कर देते हैं और हम जीवन के विभिन्न पहलुओं में उन्हें दोहराते रहते हैं। हालांकि, हम उसे जानते हैं और समझते हैं, उसके बावजूद, हम उत्तेजित हो जाते हैं और उन भावनाओं से ऊपर आने में असमर्थ होते हैं।

आकाशीय अभिलेख शब्द की उत्पत्ति शब्द आकाश से हुई है, जिसका अर्थ संस्कृत में "वातावरण" या "ईथर" है। सीधे शब्दों में कहें तो आकाशीय रिकॉर्ड एक विशाल पुस्तकालय है जिसमें हर वस्तु की रिकॉर्डिंग होती है। जो कभी अतीत में हुई हो, जो कुछ भी वर्तमान क्षण में हो रहा है और जो कुछ भी भविष्य में होगा वह सब कुछ रिकॉर्ड होता है। आकाशीय रिकॉर्ड को अनंत के माध्यम से प्रत्येक आत्मा की यात्रा का रिकॉर्ड भी कहा जा सकता है। आकाश (ईथर) को हमारे ब्रह्मांड का मौलिक तत्व माना जाता है जिसमें से अन्य सभी तत्व निकले हैं। प्रत्येक आत्मा के अनंत जीवन काल की रिकॉर्डिंग आकाश तत्व में मौजूद है।

आइये इसको गहराई से बेहद के ज्ञान के दृष्टिकोण से समझते हैं। अनंता अनंत ब्रह्मांड हैं और अनंता अनंत ब्रह्मांडों के अलग-अलग रचयिता हैं। ब्रह्मांडों के रचयिता ब्रह्मांडों के केंद्र अर्थात परमधाम में रहते हैं। ब्रह्मांड के केंद्र के परमधाम में, उनके रचे ब्रह्मांड की हर एक चीज़, हर एक रचना का, हर एक हलचल का और ब्रह्मांड में रह रही हर एक आत्मा का, एक-एक पल का, भूत, भविष्य और वर्तमान का सारा रिकॉर्ड होता है। हमारे सूक्ष्म और स्थूल लोकों में जितने भी आयाम हैं, हर आयाम में परम तत्वों के छोटे-छोटे कण होते हैं जो उस आयाम को चलाते हैं। परम तत्वों के कणों में भी उस आयाम का सारा रिकॉर्ड होता है। हमारी धरती की मिट्टी के कण में, पानी की हरेक बूंद में, वायु तत्व के एक-एक सेल (Cell) में से भी उस

आयाम का रिकॉर्ड लिया जा सकता है। ब्रह्मांडों में अनंत काल का रिकॉर्ड समाया हुआ है। यह भी एक तथ्य है कि आज तक धरती पर जितनी भी बातें कही गयी हैं तथा जितने भी शब्द बोले गये हैं उनके कंपन आज भी किसी ना किसी स्वरूप में वायुमंडल में विचरण कर रहे हैं। यह बहुत संभव है कि श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया गीता ज्ञान आकाशीय रिकार्ड्स रूपी पुस्तकालय से दोबारा वैसा का वैसा हूबहू खोजा जा सकता है।

आकाशीय रिकार्ड्स को कैसे पढ़ें?

यदि हम अपनी आत्मा के आकाशीय रिकॉर्ड को जानना चाहते हैं या हमें किन्हीं भी ब्रह्मांडों और आयामों की रिकॉर्डिंग्स को समझना है तो हमें सबसे पहले अपनी यात्रा आत्म दर्शन की ओर ले जानी होगी। मनुष्य अपने आप को आत्मा नही स्थूल शरीर ही समझने लगा है। माया के पर्दे के कारण उसे केवल अपनी पाँच तत्वों से बनी देह ही दिखती है। मनुष्य जीवन को अमूल्य जीवन कहा गया है। क्योंकि मनुष्य इसी शरीर द्वारा पुरुषार्थ कर सकता है और जीवन मृत्यु के चक्र से छूटकर आत्मा और परमात्मा के स्वरुप को जान सकता है। जब मनुष्य इस शरीर के अभिमान, देह भान को छोड़ आत्म भाव की अनुभूति करता है तब उसकी आत्मा की शक्ति और चेतना का स्तर बढ़ता है। जब आत्मा की चेतना की शक्ति बढ़ती है और ऊपर के आयामों में सफर करती है। तब आत्मा जिस लोक या आयामों तक पहुँचती है वहाँ के रिकॉर्ड आत्मा देख सकती है। हमारे कई ऋषि- मुनियों के पास धरती से ऊपर 4, 5, 6 लोकों तक देखने की शक्ति होती है। आत्म स्वरूप में तीसरा नेत्र खुल जाये तो आत्मा में दूसरे आयामों के आकाशीय रिकॉर्ड देखने की शक्ति आ जाती है। पूरे ब्रह्मांड में क्या होने वाला है, भूत, भविष्य, वर्तमान सब देख सकती है। तुम्हारी आत्मा रिसीवर बन जाये तो वो हर सूक्ष्म तरंगें पकड़ कर देख सकती है। वो आत्मा जहाँ से आई है वहाँ तक का सारा रिकॉर्ड देख सकती है। समझने के लिए जैसे अगर आत्मा यूनिवर्स से आई है तो, वो वहाँ तक का रिकॉर्ड देख सकती है। लेकिन वो आत्मा उससे ऊपर का आकाशीय रिकॉर्ड नहीं देख सकती है।

इसका बहुत ही अच्छा उदाहरण हमारे शास्त्रों में भी दिया गया है, नारद मुनि जी अनेक विद्याओं में निपुण थे। उनको इतिहास, पुराण, व्याकरण, वेदांत, खगोल,

भूगोल, ज्योतिष, जैसे कई शास्त्रों का प्रचंड विद्वान माना जाता था। बापूजी ने बताया नारद जी ज्यादातर ब्रह्मा पुरी में रहते थे। नारद जी अपनी आत्मा की शक्ति से सातों लोकों को देख सकते थे। पाताल लोक को भी देख सकते थे। वो अपनी शक्ति से भविष्य को जान सकते थे। वह सब आकाशीय रिकॉर्ड को पढ़ सकते थे। वो ज्ञान की कोशिकाओं में पड़ी उन जानकारियों (डेटा) को देख सकते थे। इसी तरह कई ऋषि-मुनि भी भविष्य बता सकते थे। कई धर्मों के मैसेंजरों ने भी भविष्यवाणियां की और लोगों को धरती पर भविष्य में होने वाली विपदाओं और आपदाओं के प्रति सचेत किया।

6.

अलग-अलग ब्रह्मांडो में अलग-अलग शरीर

हर ब्रह्मांड में 84 लाख प्रकार के जीव हैं। जितने भी जीव हैं उन सभी के शरीर भी अलग- अलग प्रकार के हैं। प्रश्न यह उठता है कि सबसे बेहतरीन शरीर कौन सा और किस ब्रह्मांड में होगा?

इस सवाल का जवाब इस वक़्त शायद किसी के पास नहीं होगा, परन्तु बेहद का ज्ञान समझाता है कि जीव / आत्मा / जीवात्मा यह सब समय, स्पेस के साथ जुड़े हैं। जैसे-जैसे समय बदलता है शरीर भी बदलते हैं। जैसे मृत्यु लोक में मनुष्य का शरीर अलग-अलग अवस्था से गुज़रता है - बचपन, जवानी, बुढ़ापा, इन सब के बाद शरीर की मृत्यु होती है और फिर उस आत्मा का पुनः जन्म होता है। यह सब तो इस ब्रह्मांड में इस शरीर से जुड़े नियम हैं जो कि एक सामान्य बात है। पर जब आत्मा इस ब्रह्मांड के ऊपर के आयामों में जाती है तब वहाँ की सचाई बयाँ करनी मुश्किल ही नहीं नामुनकिन है। क्योंकि धरती लोक का मनुष्य अभी यह जानने तथा समझने में सक्षम नहीं है। मनुष्य की आत्मा की शक्ति का अभी विकास नहीं हुआ है। आने वाले समय में जब साइंस का विकास होगा तब शायद मनुष्य इस बात पर यकीन कर पायेगा। अभी के लिये इस विषय पर जितना हो सके उतना पर्दा उठाने की कोशिश करते हैं। इसको भाग्यवान आत्मा जरूर समझेगी।

वैसे तो अनंता अनंत ब्रह्मांड हैं, अनगिनत गैलेक्सी, अनगिनत यूनिवर्स, अनगिनत मल्टीवर्स हैं। सभी के बारे में जानना नामुमकिन है, आज मनुष्य जितना भी ज्ञान जानता है वो सिर्फ सागर की एक बूंद के समान है। बेहद की दुनिया का कोई अंत नहीं है, वो तो बेअंत है, यह सब मानव की बुद्धि से परे है, क्योंकि मनुष्य की बुद्धि, मन, संस्कार सभी कुछ माया से बना है और बेहद की दुनिया जो कि परम लाइट और परम तत्वों की है वह सब माया से परे की है। इसीलिये मनुष्य जब तक मायाजीत नहीं बनता तब तक यह सब समझना संभव नहीं है।

बेहद के ज्ञान में बापूजी बताते हैं कि, जब आत्मा की पावर बदलती है तब उसका शरीर भी बदलता है और उसकी गति भी बदलती है, इसीलिये हमें जानना

होगा कि प्रकाश की गति क्या है और परम गति क्या है?

परम गति वो है जो मनुष्य अपनी आत्मा के बल से परमात्मा से प्राप्त करता है। आत्मा जब अपने संकल्पों द्वारा कर्म बंधन खत्म करके शरीर छोड़ने के समय पर संकल्प शक्ति का प्रयोग करती है तब वो सीधी परम गति प्राप्त करके अपने मूलभूत धाम पर पहुँचती है। वही है बेहद की दुनिया (बेहद का परम धाम)। सिर्फ अंतिम संकल्प द्वारा वह परम गति को प्राप्त होती है। पर इसका अभ्यास पूरे जीवन काल में करना पड़ता है, तभी वह परम गति को प्राप्त कर सकती है। इस यात्रा के दौरान आत्मा अलग-अलग ब्रह्मांडों में से निकलती है और उस समय के दौरान उसका शरीर भी बदलता है। बापूजी ने अपने वीडियो "जर्नी ऑफ़ सोल" में काफी गहराई से यह बात समझाई है। आत्मा उर्ध्वगति और अधोगति में अपने शरीर को बदलती रहती है। जैसे-जैसे माया की दुनिया से परे होती है, वैसे-वैसे शरीर में आत्मा का प्रकाश बढ़ता चला जाता है। आत्मा जब अलग-अलग पीढ़ी में या अलग-अलग कला की दुनिया में पहुँचती है तब उसका शरीर भी उसी कला की पावर के अनुसार बदलता है, अलग-अलग प्रकाश का शरीर और उसमें ज्ञान की अलग-अलग मात्रा भी होती है। अगर मनुष्य आत्मा हमारे ब्रह्मांड के शरीर के रहस्य को गहराई से समझे तो उसकी आगे की यात्रा सरल हो जायेगी।

आत्मा क्या है? आत्मा कैसे लगती है? आत्मा कहाँ रहती है?

आत्मा के अस्तित्व को सभी धर्म मानते हैं। कोई "आत्मा" कहते हैं, कोई "रूह" कहते हैं तो कोई "Soul" कहते हैं। विज्ञान मानता है कि आत्मा एक Conscious Energy है, जो जागृत है। मैं एक आत्मा हूं, शरीर तो आत्मा का कर्म करने का एक साधन मात्र है। बेहद की आत्मा परम प्रकाश से बनी है। आत्मा के प्रकाश की किरणें चारों ओर फैलती हैं उसे Might कहते हैं। Might माना प्रकृति। लाइट के ऊपर हमेशा Might का सुरक्षा कवच होता है। Might लाइट की सुरक्षा करती है। जिससे आत्मा के अंदर किसी भी प्रकार का कचरा न जाये।

आत्मा बड़े माइंड(Mind) के केंद्र में निवास करती है, जहाँ हम तिलक करते हैं। आत्मा का मूल स्वरुप पवित्र, पावन और शुद्ध होता है। आत्मा का प्रकाश सफ़ेद चमकते हुए सितारे जैसा है। रात को आसमान में सितारे जैसे चमकते हैं वैसे ही हमारी आत्मा चमकती है। शास्त्रों में बताया गया है कि हमारी आत्मा, बाल की मोटाई के खरबवें भाग से भी छोटी होती है। आत्मा को स्थूल आँखों से नहीं देखा

जा सकता है। केवल आत्म स्वरूप में ही उसे जान सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं। आत्मा के अंदर मन, मन के अंदर बुद्धि और बुद्धि के अंदर संस्कार होते हैं। आत्मा मन के द्वारा शरीर को चलाती है। आत्मा निर्लेप होती है। अभी ब्रह्मा का दूसरा परार्ध चल रहा है। ब्रह्मा का पहला परार्ध बीत चुका है और आत्मा 198 करोड़ वर्ष से जन्म मृत्यु के चक्र में चली आ रही है। इसलिये मनुष्य की आत्मा के ऊपर कई जन्मों के कर्मों का आवरण चढ़ गया है। मृत्यु के बाद आत्मा के साथ सूक्ष्म और कारण शरीर साथ होता है। मनुष्य इन सभी शरीरों का मालिक है परन्तु वह उसे कभी नहीं जान पायेगा क्योंकि मनुष्य सिर्फ इन आँखों से दिखने वाले शरीर को ही सत्य मानता है और उसका ध्यान रखने में अपना ज्यादातर समय व्यतीत करता है।

आत्मस्वरूप की पढ़ाई के बगैर यह संभव नहीं, आइये मनुष्य शरीर के परम सत्य को जानने का प्रयत्न करते हैं।

स्थूल शरीर (Physical Body)

पँच महा-भूत से बने शरीर को हम स्थूल शरीर कहेंगे। हमारा स्थूल शरीर पाँच तत्वों से बना है - आकाश, वायु, अग्नि, जल और मिट्टी तत्व। जब आत्मा पाँच तत्वों के शरीर में होती है तब, मिट्टी और जल तत्व के कारण आत्मा में शक्ति कम होती है। शरीर भारी होता है। स्थूल शरीर के कारण मनुष्य के मन और बुद्धि स्थूल वस्तु में फँस जाती हैं और मनुष्य भोग में लिप्त हो जाता है जिससे आत्मा का ज्ञान छुप जाता है ।

सूक्ष्म शरीर (Subtle Body)

जब आत्मा मृत्यु को प्राप्त होती है तब उसका पाँच तत्वों का शरीर तीन तत्वों का हो जाता है। मिट्टी तत्व मिट्टी में मिल जाता है और जल, अग्नि में जल कर भाप बन जाता है। अर्थात उसका शरीर - आकाश, वायु और अग्नि तत्व का रह जाता है - उसे ही सूक्ष्म शरीर कहते हैं। सूक्ष्म शरीर को स्थूल आँखों से नहीं देख सकते हैं। मृत्यु के बाद सूक्ष्म शरीर में आत्मा की शक्ति बढ़ जाती है क्योंकि मिट्टी और जल तत्व का शरीर अब नहीं रहता हैं। जितना कर्मों का बोझ कम होगा, उतनी आत्मा हल्की होगी। तपस्या करने से आत्मा की ऊपर जाने की गति और शक्ति (power) बढ़ जाती है। आत्मा जितना ऊपर जाती हैं उतना ज्यादा सुख और शाँति का

अनुभव करती है। सूक्ष्म शरीर में सभी भावनाओं और कर्मों का रिकॉर्ड होता है। सूक्ष्म जगत में सूक्ष्म शरीर से ही यात्रा की जा सकती है। मरने के पश्चात आत्मा के सूक्ष्म शरीर के साथ ही मन, बुद्धि और संस्कार जाता है। ऊपर सूक्ष्म जगत में सूक्ष्म दुनिया है जहाँ अलग तत्वों की दुनिया है - जो इन आँखों से नहीं देखी जा सकती, उसे दिव्य दृष्टि से देखा जा सकता है। प्राचीन समय में ऋषि-मुनि अपने संकल्पों से सूक्ष्म शरीर को जहाँ भी लेकर जाना चाहें अपनी इच्छा से ले जा सकते थे।

कारण शरीर (Causal Body)

आत्मा का जब जन्म होता है तब, सबसे पहले आत्मा में मन आता है। मन फिर धीरे-धीरे सोचता है तो बुद्धि आती है। बुद्धि से कर्म करता है तो संस्कार बनता है, संस्कारों से कारण शरीर बनता है। कारण शरीर से सूक्ष्म शरीर बनता है और सूक्ष्म शरीर से स्थूल शरीर बनता है। हमारे मन, इच्छायें, संकल्पों, और कर्मों के कारण जो शरीर बनता है वह कारण शरीर है। कर्म बंधन से, पाप कर्म से, भोग करने की इच्छा, नकारात्मक सोचने से हमारे कारण शरीर की शक्तियां क्षीण हो जाती हैं। मनुष्य के सभी कर्मों का अभिलेख कारण शरीर में है, कारण शरीर चार्ज करके, विकर्मों को विनाश कर सकते हैं। कारण शरीर चार्ज होने से आत्मा में आकाश तत्व बढ़ जाता है और आत्मा विष्णुपुरी में (कारण जगत) चली जाती है। कोई भी रोग मनुष्य के स्थूल शरीर में आने से पहले कारण शरीर में आता है। कारण शरीर आकाश तत्व का होता है। कारण शरीर गले से लेकर नाभि तक, पतली Silver Chain जैसी Light का होता है जिस के आजू-बाजू में हल्की लाइट होती है। फरिश्ताओं का कारण शरीर होता है। विष्णुपुरी में आत्माओं का कारण शरीर होता है। कारण शरीर सिर्फ आकाश तत्व से बना है। आकाश तत्व वायु और अग्नि तत्व से सूक्ष्म होता है। वायु और अग्नि के अंदर आकाश तत्व है, इसलिये कारण शरीर के ऊपर सूक्ष्म शरीर बना है। जब आत्मा की इच्छायें कम हो जाती हैं और निःसंकल्प होती है तो वायु तत्व शांत हो जाता है और आत्मा कारण शरीर को अनुभव कर पाती है, इसके लिये अभ्यास करना पड़ता है। मन जितना विचलित रहेगा और इच्छायें जितनी ज्यादा होंगी वायु तत्व उतना भारी होगा और उत्तेजित रहेगा और आत्मा का औरा (Aura) तमो प्रधान यानि काले रंग का होगा।

महा कारण शरीर

महा कारण शरीर तीन परम तत्वों का होता है - परम आकाश, परम वायु तत्व और परम अग्नि। परमतत्व तत्व से भी सूक्ष्म होता है, तत्व के अंदर परम तत्व है यानि तत्व, परम तत्व से बना है। जब मन में इच्छायें बढ़ गयीं, तब आत्मा ज्यादा संकल्प करने लगी और तब परम तत्व धीरे-धीरे तत्व में परिवर्तित हो गये। आत्मा के संकल्प, तत्व के माध्यम से काम करते हैं। आत्मा जितना ज्यादा संकल्प करती है तत्व में उतनी ऊर्जा का क्षय होता है। इसलिये परम तत्व में ऊर्जा, तत्व से ज्यादा है। कारण शरीर के अंदर महा कारण शरीर है। जिस आत्मा में महा कारण शरीर है सिर्फ वो योग से अपने महा कारण शरीर को अनुभव करेगी और महा कारण जगत में यात्रा कर सकती है। जब आत्मा में आकाश तत्व बढ़ जाता है तो वो शांति का अनुभव करती है और जब आत्मा में परम तत्व की मात्रा बढ़ जाती है तो परम शांति का अनुभव करती है। जब आत्मा में सारी कामना, वासना का अंत हो जाता है तब वो महा कारण जगत में चली जाती है। शिवपुरी में आत्माओं का महा कारण शरीर होता है।

महा कारण शरीर परम तत्वों का और परम महा कारण शरीर परम प्रकाश का होता है। परम महा कारण शरीर एकदम उच्च गुणवत्तावाली आत्माओं का या बेहद की आत्माओं का होता है। परम महा कारण शरीर लाइट का शरीर है यानि बीज रूप स्थिति के पहले की अवस्था है। यानि परम महा कारण शरीर के बाद और कोई शरीर नहीं है इसके बाद केवल पूर्ण निराकार आत्मा ही है। परम महा कारण शरीर में भी "मन" रहता है लेकिन निराकार पूर्ण आत्म स्वरूप में "मन"नहीं रहता है। परम महा कारण शरीर सबसे सूक्ष्म है और सबसे ज्यादा ऊर्जावान है। महा कारण शरीर का आधार परम महा कारण शरीर है। जितना ऊपर की ओर आत्मा जाती है उसका शरीर सूक्ष्म से सूक्ष्म होता जाता है और ऊर्जावान हो जाता है।

पूर्ण आत्म स्वरूप में ना मन रहता है, ना ही कोई शरीर रहता है। वो निर्गुण निराकार बीज रूप स्थिति है।

आत्मा की यात्रा

सभी आत्माओं का अपना-अपना रचयिता होता है। कुछ आत्मायें सिर्फ आकाश तत्व से बनी हैं उन आत्माओं का सिर्फ कारण शरीर रहता है। उन आत्माओं का सृजन कारण जगत में होता है।

यानि वो सब आत्मायें हल्की Quality की आत्मायें हैं। ये आत्मायें संकल्पों की शक्ति से कुछ आयामों में यात्रा कर सकती हैं। उन आत्माओं की यात्रा का आरंभ कारण जगत से स्थूल जगत तक होता है। जब आत्मायें ज़्यादा विकर्म करती हैं तो 84 लाख योनियों में भटकती रहती हैं।

ऐसे अनेक प्रकार की आत्मायें हैं जो कोई तो परम तत्व से बनी हैं, तो कोई महा तत्व से बनी हैं, तो कोई परम प्रकाश से बनी हैं, इससे ऊपर की आत्मायें उच्च कोटि की कला के परम प्रकाश से बनी हैं। जो आत्मायें परम प्रकाश से बनी हैं उनको परम आत्मा कहते हैं। परम प्रकाश की भी Power के हिसाब से अनेक कला की आत्मायें होती हैं। जैसे 1 कला से शुरू हो कर 100 कला, और 100 कला से 2101 कला, 2101 कला से ऊपर बेहद की कला है जिनको हम बेहद की आत्मायें कहते हैं। आत्मायें जितनी ज्यादा कला की होती हैं उतनी उच्च गुणवत्ता की आत्मा होती हैं। सभी आत्माओं की यात्रा संकल्पों से विभिन्न आयामो में होती है। फिर जब आत्मा को अपने रचयिता का ज्ञान होता है तो वो वापस अपने रचयिता के पास लौट जाती है। इसको आत्मा की Return Journey कहते हैं।

आत्मा अपनी यात्रा के समय जैसे-जैसे विभिन्न आयामों से गुजरती है तो उस वायुमंडल के हिसाब से शरीर धारण करती है। इसको बोलते हैं **"यथा ब्रह्मांडे तथा पिंडे।"** आत्मा मुख्यतः तीन प्रकार का शरीर धारण करती है निराकारी, आकारी और साकारी। आत्मा अपनी यात्रा में जैसे-जैसे शरीर धारण करती ऐसे-ऐसे गुण

आत्मा की स्थिति	आत्मा का गुण	आत्मा का शरीर	ब्रह्मांड के आयाम
निराकारी	निर्गुण (गुणातीत)	परम प्रकाश, बीज रूप स्थिति	परमधाम
आकारी	सत्व (सतो) गुण (सत्व-सतो प्रधान)	परम तत्व का शरीर	शिवपुरी
	रजो गुण (रजो प्रधान)	परम तत्व और तीन तत्वों के मिश्रण का शरीर	विष्णुपुरी
साकारी	तमो गुण (तमो प्रधान)	स्थूल शरीर	मृत्यु लोक यानि पृथ्वी
विष्णुपुरी से पृथ्वी तक रजो गुण कम होता रहता है और तमो गुण बढ़ता रहता है। तमो गुण सबसे ज्यादा पृथ्वी पर स्थूल जगत में है।			

उसके अंदर आ जाते हैं। इस हिसाब से आत्मा की तीन अवस्थायें होती हैं : सत्व (सतो), रजो, तमो।

सत्व (सतो) प्रधान आत्मा :

आत्मा जब परम तत्व का शरीर धारण करती है तब वो सत्व (सतो) गुण धारी होती है। तब आत्मा के संकल्प शक्तिशाली होते हैं यानि वो जो भी संकल्प करती है वो सिद्ध हो जाते हैं। इस स्थिति को परम पुरुष कह सकते हैं। तब आत्मा में सारे दैवीय गुण रहते हैं। सत्व (सतो)प्रधान स्थिति में आत्मा की आभा शुद्ध सफ़ेद (Pure White) रहती है ।

रजोप्रधान आत्मा:

जब आत्मा संकल्प द्वारा सृजन करती है तो आत्मा की शक्ति क्षीण हो जाती है और आत्मा की आभा में परिवर्तन हो जाता है। आत्मा तीन तत्व का सूक्ष्म शरीर धारण करती है और उसकी संकल्प की शक्ति कम हो जाती है।

तमोप्रधान आत्मा:

जब आत्मा स्थूल शरीर धारण करती है तो आत्मा पूर्ण रूप से अज्ञानी बन जाती है और उसके संकल्प में कोई शक्ति नहीं रहती है। तब आत्मा पँच तत्व में फँस जाती है और भोगी बन जाती है।

आत्मा की स्थिति के हिसाब से वायुमंडल बनता है, जब आत्मा सत्व (सतो) प्रधान होती है तब वायुमंडल भी सत्व (सतो) गुण से भरा रहता है। जब आत्मा तमो प्रधान होती है तो वायुमंडल तमो प्रधान हो जाता है और प्राकृतिक आपदायें घटने लगती हैं, जो आज धरती के ऊपर दिख रहा है। इस समय तत्व में कोई शक्ति नहीं रही और प्रकृति दुख दायी हो गयी है और आत्मा दुःख और कष्ट का अनुभव कर रही है।

7.

हमारा ब्रह्मांड कितना बड़ा है?

ब्रह्मांड शब्द का अर्थ खगोल से लिया जाता है। अगर हम भौतिक रूप से ब्रह्मांड को समझना चाहें तो हम ब्रह्मांड को सरल भाषा में ऐसे परिभाषित कर सकते हैं कि ब्रह्मांड वो है जिसके क्षेत्र में सम्पूर्ण ग्रह, उपग्रह, तारे इत्यादि स्थित हैं और इस क्षेत्र के अस्तित्व का मूल आधार वो सारे तत्व हैं, जिनके द्वारा ब्रह्मांड में स्थित सम्पूर्ण ग्रह, उपग्रह, तारे आदि निर्मित हैं। बेहद के ज्ञान में ब्रह्मांड का अर्थ है एक सौर्य मंडल (Solar System) अर्थात एक सोलर सिस्टम यानि एक ब्रह्मांड। अभी हमने 14 लोकों की बात समझाई, वो हमारे सौर्य मंडल के अंदर हैं। हमारे ब्रह्मांड में सबसे ऊँचा स्तर परमधाम है । परमधाम को सबसे श्रेष्ठ धाम कहा गया है। उसके नीचे शिवपुरी, विष्णुपुरी, ब्रह्मापुरी, तप लोक, जनलोक, महर्लोक, स्वर्ग लोक, भुवर्लोक, भूलोक (धरतीलोक) हैं। धरती के ऊपर ये सात लोक है और धरती के नीचे सात पाताल लोक हैं और उसकें नीचे 55 करोड़ नर्क थे जो आज हमें बड़े-बड़े पत्थर, क्षुद्रग्रह और धूमकेतु इत्यादि के रूप में दिखते हैं।

हमारे ब्रह्मांड को कौन चलाता है?

सवाल यह उठता है कि जब एक धरती पर पड़ा हुआ पत्थर अपने आप नहीं हिल सकता, तो अंतरिक्ष में ब्रह्मांड में स्थित ग्रह, सूर्य, चाँद, सितारे कैसे चल रहे हैं? उनको कौन सी शक्ति गतिशील रखती है? हमारे ब्रह्मांड के रचयिता कौन हैं?

पहले तो हमें ये जानना होगा कि हम जिस ब्रह्मांड में रहते हैं वो ही एक ब्रह्मांड नहीं है। अनंता अनंत ब्रह्मांड हैं। हर ब्रह्मांड का मालिक शिव है। अनंता अनंत ब्रह्मांड हैं तो अनंता अनंत शिव हैं। अब दिलचस्प बात यह उठती है कि क्या हमारी पृथ्वी जैसे और पृथ्वी हैं? जब अनंता अनंत ब्रह्मांड हैं तो उसके मालिक भी अनंता अनंत होंगे, क्या उन सभी में पृथ्वी जैसे ग्रह हैं? हर एक सौर मंडल में 1 से ज़्यादा पृथ्वी (मृत्युलोक-स्थूल जगत) जैसे ग्रह हैं, चाँद जैसे उपग्रह, विष्णुपुरी, शिवपुरी और परमधाम हैं।

ब्रह्मांड की रचना कैसे हुई?

जब निराकारी महाशिव ने सोचा - मैं अनंत हो जाऊँ, तब उनके एक संकल्प से खरबों निराकारी शिव का सृजन हुआ। खरबों निराकारी शिव ने खरबों सौर मंडल की रचना की। शिव का रचयिता है महाशिव। हर ब्रह्मांड में उसके रचयिता के अनुसार शक्ति होती है। किसी शिव ने कम रचना की और अपनी शक्ति की कम क्षति की। कोई ब्रह्मांड 1 प्रकाश वर्ष का है, तो कोई 1.25, 1.5, 2, 3, 4 प्रकाश वर्ष का प्रकाश का गोला है। हमारा ब्रह्मांड 1 प्रकाश वर्ष का था, जिसे अब 1.6 प्रकाश वर्ष तक विकसित किया गया है। अर्थात उसका 15,13,760 करोड़ किलोमीटर का व्यास है। चाहे शिव, महाशिव या परम महा शिव हो, जब वो रचना करते हैं तो उनकी शक्ति कम होने लगती है। अनंता अनंत शिव हैं तो अनंता अनंत ब्रह्मा, विष्णु और शंकर हैं। हर ब्रह्मांड में ब्रह्मा (निर्माता), विष्णु (पालनहार), शंकर (विनाशकारी) त्रिदेव होते हैं। जब कभी ब्रह्मांड के सृजनकर्ता, पालनहार और विनाश करने वालों में शक्ति कम हो जाती है तब वो तीनों देव नीचे गिर जाते हैं। कभी- कभी ब्रह्मांड चलाने के लिए नये ब्रह्मा जी को नियुक्त कर दिया जाता है। जब ब्रह्मांड के मालिक शिव में भी शक्ति नहीं रहती या कम हो जाती है तो महाशिव नये शिव को ब्रह्मांड के लिये नियुक्त कर देते हैं।

जब निराकारी शिव ने सोचा "मैं सृष्टि की रचना करूँ" तब चारों ओर परम प्रकाश का एक घेरा बनाया और आकारी शिव की रचना की। निराकारी शिव परमधाम में निवास करते हैं। जो गैलेक्सी के सोलर सिस्टम के केन्द्र में रहते हैं। आकारी शिव ने अपने अंदर से अपनी प्रकृति (शक्ति) की रचना की। आकारी शिव शक्ति शिवपुरी में रहते हैं। शिव - शक्ति ने मिलकर अर्द्धनारेश्वर रूप में विष्णु की रचना की, और विष्णुपुरी (वैकुण्ठ) बनाया। विष्णु ने अपनी शक्ति लक्ष्मी की रचना की, विष्णु की नाभि से ब्रह्मा का सृजन हुआ और ब्रह्मपुरी बनाई। ब्रह्मा और सरस्वती ने संकल्प शक्ति से सप्तऋषि की रचना की। सप्तऋषियों ने संकल्पों द्वारा फरिश्तों (देवताओं से भी उत्तम और पावरफुल आत्मायें) की रचना की। पहले फरिश्तों की दुनिया थी। उनका शरीर परमतत्वों का था और उनकी आत्मा परम प्रकाश की थी। कई फ़रिश्ते परम तत्व में ऊपर रहे और कई फ़रिश्ते दिव्य लोक में आ गये। फरिश्तों की दुनिया से देवताओं की दुनिया बनने लगी। फरिश्तों ने संकल्पों

द्वारा सृष्टि बनाई और सात लोकों की रचना की और अनंता अनंत आत्माओं की भी रचना की। जिसके कारण आत्माओं की शक्तियाँ क्षीण होती गयी। उनकी आत्मा की शक्ति कम होने से धीरे-धीरे तीन तत्वों (आकाश, वायु और अग्नि) की दुनिया बन गयी। देवता संकल्पों से सृष्टि की रचना करते गये। इस प्रकार आत्माओं की रचना होती गयी और संख्या बढ़ती गयी। इससे देवताओं की शक्तियाँ क्षीण होने लगी, आत्मा की पावर कम होती गयी। आत्माओं की संख्या बढ़ती गयी और वे नीचे गिर गयी। अब देवता भी मनुष्य बन गये, वे स्वर्ग लोक से नीचे भुवर्लोक में आ गये। ब्रह्मा जी ने गिरते हुए मनुष्यों को बचाने के लिये धरती बनायी। धरती लगभग ब्रह्मा जी के पहले परार्ध के 10 साल बाद बनी, यानि हमारी धरती को बने लगभग 1244 ख़रब, 17 अरब साल हुए हैं। पहले शरीर हल्का था और आत्मा की खुद की रौशनी थी। लेकिन जैसे-जैसे आत्मा की गुणवत्ता गिरती गई, वैसे-वैसे आत्मा की लाइट कम होती गई और अँधेरा हो गया। धरती के अंधेरों को हटाने के लिये सूर्य नारायण की रचना की। पहले सूर्य का व्यास भी कम था। सूर्य की रचना धरती के अंधकार को हटाने के लिये की गई थी। ऊपर के लोकों में रौशनी की ज़रूरत नहीं होती थी क्योंकि आत्माओं में खुद का ही प्रकाश होता था। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि पहले सूर्य धरती के चारों ओर परिक्रमा करता था, सूर्य धरती के चक्कर लगाता था। फिर सूर्य की ग्रेविटी से ग्रह बने। संकल्पों से सृष्टि की रचना और आत्माओं की रचना करते-करते मनुष्य गिरते गये, पाँच तत्व और भी भारी होते गये। धरती के ऊपर जैसे 7 लोक हैं वैसे ही धरती के नीचे भी 7 निचले लोक हैं - अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल ओर पाताल लोक। लेकिन आत्माओं की भोग करने की इच्छायें बढ़ती गयी तो आत्मा और भारी होने लगी तो 7 पाताल लोक के नीचे 55 करोड़ नर्क बने। आज ये 55 करोड़ निचले लोक अस्तित्व में नहीं हैं। आज जो हम अंतरिक्ष में बड़े-बड़े पत्थर घूमते हुए देख रहे हैं वो 55 करोड़ नर्क हैं।

हर यूनिवर्स में असंख्य गैलेक्सी हैं और हर गैलेक्सी में सोलर सिस्टम हैं और हर सोलर सिस्टम में निराकारी, आकारी और साकारी दुनिया होती है। जैसे हमने बताया हर ब्रह्मांड (Solar System) का रचयिता शिव होता है। हर ब्रह्मांड के प्रलय का समय भी अलग-अलग होता है। जब शिव में ब्रह्मांड को चलाने की शक्ति नहीं रहती तब शिव महाकल्प प्रलय में काल अग्नि पैदा करता है और अपनी इस

सृष्टि का विसृजन कर देता है। हर यूनिवर्स में असंख्य गैलेक्सी हैं और हर गैलेक्सी में सोलर सिस्टम हैं और हर सोलर सिस्टम में निराकारी, आकारी और साकारी दुनिया होती है। शिव अपने रचयिता यानि महा शिव जो गैलेक्सी के रचयिता हैं उनसे शक्ति (परम लाइट) लेकर पुनः सृष्टि का सृजन करते हैं। जब शिव बहुत गिर जाता है तो महाशिव नये शिव को ब्रह्मांड चलाने के लिये नियुक्त कर देते हैं। यहाँ हमने एक ब्रह्मांड की बात की, ऐसे अनंता अनंत ब्रह्मांड हैं। हमारे शास्त्रों में भी इसका उल्लेख है "अनंता अनंत ब्रह्मांड बनते और बिगड़ते हैं।

8.

आत्माओं के लोक और तारों के बीच की यात्रा

पहले देवता मनुष्य का रूप धारण करके ऊपर के लोकों से धरती पर आया करते थे। वो तीन तत्व वाले शरीर से पाँच तत्वों का शरीर धारण कर लेते थे और उन्हें जन्म नहीं लेना पड़ता था। हमारे शास्त्रों में इसको प्रमाण देती हुई कई घटनायें हैं। पहले एक संकल्प मात्र से ही इंद्रलोक (स्वर्गलोक) की अप्सरायें नदी में स्नान करने पृथ्वी लोक पर आया करती थी और फिर स्नान करके चली जाती थी।

हम सभी जानते हैं कि नारद मुनि भी पूरे ब्रह्मांड में विचरण करते रहते थे। एक पल में अलग - अलग लोकों में चले जाया करते थे। एक पल में विष्णुपुरी, ब्रह्मपुरी, पृथ्वी लोक, पाताल लोक सभी जगह व्यक्त से अव्यक्त हो कर जा सकते थे। नारद जी परमधाम नहीं जा सकते थे क्योंकि परमधाम जाने के लिये अवस्था निराकारी होनी चाहिए।

ऐसे कई वृतांत हुए हैं जिसमें राजा बलि के अहंकार और सत्ता को खत्म करने के लिये भगवान विष्णु ने एक छोटे से ब्राह्मण का रूप लिया था, इस प्रकार और भी कई देवता हुए हैं। देवता अपने दिव्य विमानों से एक लोक से दूसरे लोकों में विचरण किया करते थे। पहले देवताओं के पास परम तत्वों से बने वाहन थे जैसे कि विष्णु जी के पास गरुड़ आकार का विमान था, ब्रह्मलोक से ब्रह्माजी हंस समान आकृति के विमान में पृथ्वी लोक में और दूसरे लोकों में आते जाते थे त्रिलोकीनाथ रावण के पास वायुतत्व का पुष्पक विमान (सूक्ष्म विमान) था जिससे रावण तीनों लोक में जाता था। रावण के पास ऐसी शक्ति थी कि वह अपने विमान के यात्री को वायु तत्व में बदल सकता था और विमान में यात्रा करने वाले लोगों की संख्या के अनुसार विमान को छोटा या बड़ा भी कर सकता था। सिर्फ एक संकल्प करने से ऊर्जा उत्पन्न होती थी और उसी ऊर्जा से वायुमंडल में विमान प्रकट हो जाता था। संकल्प एक ऊर्जा की तरंग है, ये वायुमंडल के अणु-परमाणु को नियंत्रित करके संकल्प के हिसाब से आकार देती है। आत्मा जितनी शक्तिशाली होगी संकल्पों में उतनी ताकत रहेगी। वाहन में बैठने वाले मनुष्य संकल्प द्वारा व्यक्त से अव्यक्त होकर बैठ जाते थे

और फिर संकल्प करते ही विमान वायुमंडल में विलीन हो जाता था। ये सब बातें हकीकत हैं और परम सत्य हैं। पहले देवताओं और मनुष्यों में इतनी शक्ति हुआ करती थी।

महाभारत काल भी वह काल था जब देवी और देवता धरती पर विचरण किया करते थे और किसी खास मंत्र के आहवान करने पर वो प्रकट हो जाया करते थे।

देवताओं में मुख्य इन्द्र, वरुण, दो अवश्वनी कुमार, 12 आदित्य गण, 11 रुद्र, सूर्य मित्र, विष्णु, शिव, सती, सरस्वती, लक्ष्मी, ऊषा, सविता, यौम, मृत्यु, श्रद्धा, सचिव, द्रोणाचार्य आदि थे। उन्ही में से एक देवी गंगा भी थी। देवी गंगा भी इंद्र द्वारा श्रापित होकर धरती लोक पर भेज दी गयी थी। अपने अहंकार और पाप कर्म को चुकता करने के लिये देवी-देवताओं को धरती लोक पर भेज दिया जाता था, जिससे वो धरती में दुःख और पीड़ा को सहन करके अपने पाप खत्म कर सकें और पुनः देवलोक वापिस जा सकें।

जब देवी-देवता धरती पर आते थे तब वो परम लाइट के गोले में आते थे जिससे उन पर स्थूल तत्वों का असर न हो। परम लाइट के गोले का कवच Anti-gravity का काम करता था और सुरक्षा करता था।

कुछ रहस्यमय बातें

बापूजी ने अपनी दिव्य दृष्टि से देख कर कई रहस्य खोले - जो ऊपर के लोकों, ब्रह्मांड, गैलेक्सी, अनंता अनंत यूनिवर्स से सम्बंधित हैं।

बापूजी ने बताया कि उनकी माँ कई बार दिव्यलोक में घूमने जाया करती थी अपने दिव्य विमान से यात्रा करती थी। देवी जोगनी बापूजी की माँ को दिव्य रथ में ले जाती थीं। वो 3 दिन तक अपने शरीर को ऐसे ही छोड़ जाती थी और हम उनके शरीर को संभाले रखते थे। 3 दिन बाद वो वापिस अपने शरीर में आ जाती थी।

बापूजी ने बताया एंड्रोमेडा गैलेक्सी की मंदाकिनी हमारी धरती पर आई थी और फिर अपनी गैलेक्सी में वापस चली गई थी। ध्रुव तारा जो है उसने भी धरती पर जन्म लिया था और उसे विष्णु से अडोल अचल का वरदान मिला था और वह वापस अपने तारे पर चला गया था इसलिये ध्रुव तारे को पृथ्वी से हमेशा एक ही जगह पर

देख सकते हैं। (अत: हिंदू शास्त्र स्कंद पुराण में भी लिखा है कि ध्रुव तारे पर स्वयं प्रकाशित लोक रहते हैं)। ध्रुव तारा जो हम देखते हैं वो भी एक ब्रह्मांड है, और बापूजी ने दिव्य दृष्टि से ये बताया है कि वो ब्रह्मांड हमारे ब्रह्मांड से कई गुना बड़ा है और वहाँ 7-8 कला का परम प्रकाश है जो कि एक ब्रह्मांड की तुलना में बहुत ज्यादा है। सप्त ऋषि जो थे उन्होंने भी धरती पर जन्म लिया था और धरती पर ऋषि बनकर रहे थे, फिर वापस अपने-अपने तारों पर चले गये थे।

ऊपर की दुनिया में सब एक दूसरे के ब्रह्मांडों में घूमते रहते हैं, वहाँ की दुनिया में कुछ तो काम होता नहीं, घूमना-फिरना ही होता है। मगर धरती से 200 किलोमीटर नीचे वे नहीं आते। वे स्वर्ग लोक के नीचे भी नहीं आते थे क्योंकि उन्हें पता है यदि वो धरती के आभामण्डल में आयेंगे तो फँस जायेंगे। 16 से 20 कला की पावर वाली आत्मा एक यूनिवर्स से दूसरे यूनिवर्स एक सेकंड में जा सकती है। आत्मा की कला (पावर) के ऊपर यह निर्भर है कि वो कितने समय में और कितनी दूर जा सकती है। आत्मा निराकारी रूप में यात्रा करें, तो समय कम लगता है और पावर भी कम खर्च होती है। कई आत्मायें निराकारी रूप में बिंदी बनकर एक जुट होकर एक साथ एक गोले में गैलेक्सी या यूनिवर्स की यात्रा करती हैं। सूक्ष्म शरीर के साथ यात्रा करने में आत्मा की शक्ति ज़्यादा लगती है और गति भी धीरे होती है। एक कला की आत्मा, एक कला के ब्रह्मांड को सेकंड के खरबवें भाग में पार कर सकती हैं। बापूजी ने ये भी बताया कि आत्मा को अंत समय में परम प्रकाश ज़्यादा देकर उसको ज़्यादा ऊपर लेकर जाया जा सकता है। 100 कला वाली आत्मा को यदि 200 कला में जाना हो तो, एक सेकंड में सोचा और पहुँच जाती है। बापूजी ने हमें बताया कि हमारे ब्रह्मांड के सूक्ष्म जगत, कारण जगत, परमधाम में दूर-दूर से आत्मायें आयी हैं जो कि निराकारी अवस्था में बैठी हैं। वो इस धरती लोक पर ऑलमाइटी को देखने और परिवर्तन की प्रक्रिया को देखने आयी हुई हैं। सूक्ष्म जगत की आत्मायें बहुत पावरफुल होती हैं और जो करना चाहे कर सकती हैं।

ऐसे कई घटनायें और खोज हैं जो हमारे धरती लोक को ऊपर के तारा मंडलों के पार की दुनिया से जोड़े रखी हैं। आज भी उन तारामंडलों में दुनिया व्याप्त है और उन तारों से कई आत्मायें हमारी धरती पर आती रहती हैं। इन रहस्यों को समझना बहुत कठिन है क्योंकि इनको इन स्थूल आँखों से नहीं देखा जा सकता है।

जैसे पश्चिम अफ्रीका में माली के रहने वाले डॉगन जनजाति के लोगों को, कई सैकड़ों सालों से SIRIUS A, SIRIUS B तारों के बारे में और उन तारों की निश्चित ORBIT CYCLE के बारे में पता है। उन जनजाति के लोगों को यह जानकारी है कि SIRIUS A बड़ा और एकदम चमकीला तारा है, SIRIUS B तारा कम रोशनी वाला और बहुत ही सघन सामग्री (dense material) से बना है। उन्हें यह कैसे पता चला? जबकि modern science को यह जानकारियां सालों के बाद पता चली थी। उन जनजाति का अपना एक पंचांग (calendar) भी है और उनका new year sirius तारों की निश्चित स्थिति के दिन पर होता है। वे कहते हैं उन्हें यह सारी जानकारियां उन तारों से आए हुए परग्रहीयों ने दी हैं और उनका आज भी उन परग्रहीयों से रिश्ता है।

9.

परग्रही दुनिया और उसमे जीवन

क्या परग्रही दुनिया होती है? क्या बाह्य अंतरिक्ष मे जीवन है? यह एक ऐसा सवाल है जिस पर कई वैज्ञानिकों की खोज चल रही है। परग्रही जीवन जो पृथ्वी से अलग किसी अन्य पिण्ड पर विद्यमान है। अंतरिक्ष मे जीवन की खोज करने वाले वैज्ञानिकों के अनुसार अंतरिक्ष मे जीवन के बारे मे कुछ भी निश्चित कह पाना कठिन है। वैज्ञानिकों का मानना है कि ज्ञात भौतिकी, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान के नियमों के अनुसार परग्रही जीवन के बारे में कुछ अनुमान ही लगाया जा सकता है। यदि पृथ्वी के बाहर जीवन है, तो उसकी खोज अभी तक क्यों नहीं कि गयी और यदि की गयी है तो अब तक उसे दुनिया के सामने क्यों नहीं लाया जा रहा है?

अमेरिका के रक्षा मंत्रालय ने भी अधिकारिक तौर पर तीन Ufo के वीडियोस जारी किए है। यह वीडियोस नवंबर 2004 और जनवरी 2015 में नेवी के पायलट ने रिकॉर्ड किए है। उन्होंने इसे Uap (unidentified aerial phenomenon) कहा है।

हाल ही में यानी करीब 2021 की शुरुआत में इजराइल के भूतपूर्व अंतरिक्ष सुरक्षा प्रमुख हेइम निशेद ने बहुत बड़ा सनसनीखेज खुलासा किया कि अमेरिका और इजरायल दोनों ही एलियंस के संपर्क में है। और अमेरिका ने एलियंस के साथ एक गुप्त galactic federation बनाया है। एलियंस और अमेरिका की गवर्नमेंट के बीच गुप्त समझौते के तहत मंगल ग्रह पर जमीन के अंदर अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री और एलियंस साथ में मिलकर परीक्षण का अड्डा (Research base) चला रहे है उन्होंने यह भी कहा कि एलियंस के बारे में जानकारी उस वक्त के प्रेसिडेंट डॉनल्ड ट्रंप सभी को देने ही वाले थे मगर एलियंस ने ऐसा करने से मना किया हेइम निशेद ने कहा कि एलियंस तब तक लोगों के सामने नहीं आएंगे जब तक कि मानवता विकसित होकर उस स्तर तक पहुंच नहीं जाती जब तक कि हम एलियंस, अंतरिक्ष, Spaceship (Ufo) के बारे में अपनी समझ विकसित नहीं कर लेते।

आइये इन प्रश्नों के जवाब को बेहद के ज्ञान की दृष्टि से समझें जो बापूजी ने हमें समझाया है।

मंगल पर जीवन

बापूजी ने परग्रही दुनिया के बारे में बहुत ही गहराई से समझाया है। परग्रही जीवन को विस्तार से समझने के लिये हम पहले मंगल पर जीवन के रहस्य को जानने की कोशिश करते हैं। मंगल ग्रह सौरमंडल में सूर्य से चौथा ग्रह है। इस ग्रह पर जीवन होने की संभावना पर हमेशा से सवाल उठते रहे हैं। बापूजी ने हमें समझाया कि मंगल ग्रह पर भी जीवन है।

हिंदू शास्त्रों के अनुसार मंगल धरती का पुत्र है। लगभग 8000 साल पहले मंगल पर पृथ्वी के जैसा ही जीवन था। मंगल पर हल्के तत्व के मनुष्य रहते थे। उनके पाँच तत्वों के शरीर में भारीपन नहीं था। उनमें जल तत्व और मिट्टी तत्व की मात्रा कम थी। वहाँ बहुत अच्छी दुनिया थी, जैसे हमारे सतयुग में होता है उसी तरह उनकी आत्माओं में शक्ति थी। उनके संकल्पों में शक्ति थी। उनके पास उच्च प्रौद्योगिकी (High Technology) थी। उनमें उड़ने की क्षमता भी थी। बहुत समय पहले मंगल पर दूसरी दुनिया से लोग आये थे। उनके पास भी उच्च प्रौद्योगिकी (High Technology) के साधन थे। मंगल ग्रह पर रहने वालों को आभास हो गया था कि परग्रही दुनिया से परमाणु हमला हो सकता है। इसलिये युद्ध से पहले कुछ मंगल ग्रह निवासी भूमिगत हो गये थे जो बच गये थे। जिस प्रकार धरती पर धर्म युद्ध होते रहे हैं, वैसे ही धर्म-अधर्म के बीच 8000 साल पहले बहुत बड़ा धर्म युद्ध हुआ था। उस परमाणु युद्ध से भूकंप आये थे । जिससे पूर्ण रूप से जीवन मंगल की सतह में धंस गया था और वह दुनिया खत्म हो गई थी। वहाँ का वायुमंडल रहने लायक नहीं रहा था। उस परमाणु युद्ध में जो बच गये थे वे दूसरे ग्रहों पर भाग गये और कुछ धरती पर भी आ गये। हमारी धरती का वायुमंडल पाँच तत्वों का होने के कारण, उन परग्रहवासियों के शरीर पर पाँच तत्वों का आवरण चढ़ गया और उनके शरीर में तत्वों का भारीपन आ गया। वे अपने मूल अस्तित्व को भूल गये। बापूजी ने बताया कि मंगल ग्रह पर अब सूक्ष्म जगत की तीन तत्वों वाली आत्मायें रहती हैं। आज भी मंगल ग्रह पर पानी है, जो उसकी सतह के नीचे है। यदि ऊपर की सतह देखें तो पानी का अस्तित्व नहीं पाया जायेगा।

परग्रही सभ्यता से संपर्क और मंगल पर जीवन है। इस बात की पुष्टि करता है एक रूसी लड़का जिसका नाम बोरिसका है। 20 साल की उमर में बोरिसका ने दावा किया है कि वह पहले मंगल ग्रह पर रहता था। इसके साथ बोरिसका ने अंतरिक्ष के

ग्रहों के बारे में ऐसी सटीक जानकारियां दी जिससे वैज्ञानिक भी हैरान रह गये। वैज्ञानिकों के मुताबिक इतनी कम उम्र में इस लड़के को ऐसी चीजें पता होना किसी पहेली से कम नहीं है।

बोरिसका जब स्कूल में था तब भी उसने यह दावा किया था कि मंगल ग्रह का मिस्र के पिरामिडों से संबंध है और आने वाले भविष्य में ये सबके सामने आ जायेगा। बोरिसका बताते हैं कि पूर्वजन्म में वह मंगल ग्रह के जिस हिस्से में रहते थे वह हिस्सा अतीत में किसी प्राकृतिक आपदा से ग्रस्त हुआ था। बोरिसका के मुताबिक मंगल ग्रह पर रहने वाले लोग लगभग 7 फीट तक लंबे होते थे। फिर भी वे जमीन के भीतर रहते थे और कार्बन डाईऑक्साइड में सांस लेते थे। मंगल ग्रह पर भयंकर तबाही के बाद उसने धरती पर आकर जन्म ले लिया।

इंडिगो / स्टार चाइल्ड

बापूजी ने हमें इंडिगो चाइल्ड और स्टार चाइल्ड के बारे में भी बेहद गहराई से समझाया है। यह बच्चे बहुत ही बुद्धिमान होते हैं। ये परग्रही आत्मायें धरती पर टेक्नोलॉजी और ज्ञान को बढ़ाने के लिये आती हैं। इन परग्रहीयों का धरती पर आने का मुख्य कारण धरती पर अच्छे कार्यों को बढ़ाना और मनुष्यों का कल्याण करना है। बोरिसका ने भी दावा किया कि मंगल से आये हुए सब परग्रहियों का ये पुनर्जन्म है और उन्हें "इंडिगो चाइल्ड" कहा जाता है। बापूजी ने बताया है कि ऐसे बच्चे कम उम्र में उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं। ऐसा देखा गया है कि इन बच्चों में अलौकिक क्षमताएं होती हैं। ये बच्चे असाधारण और विशेष गुणों वाले होते हैं। किसी में साइकिक पावर भी होती है। इन्हें स्टार चाइल्ड भी कहते हैं। स्टार चाइल्ड वो आत्मायें हैं जो दूसरे ब्रह्मांडों से आकर सीधा 60 से 90 दिन के अंदर किसी गर्भ में प्रवेश करती हैं। ऐसी आत्माओं में अधिक शक्तियाँ होती हैं। ऐसी आत्माओं को धरती पर जन्म लेने से कोई रोक नहीं सकता । ऐसी आत्माओं का औरा बेहद शक्तिशाली होता है और किसी भी प्रकार की नेगेटिव आत्मायें इनको कोई परेशानी या हानि नहीं पहुँचा सकती। चीन ने 1982 में ऐसे असाधारण अलौकिक स्टार चाइल्ड की खोज के लिये पूरे देश में एक कार्यक्रम का आयोजन किया था जिसमे उन्होंने असाधारण गुणों वाले 1 लाख स्टार चाइल्ड को ढूंढा था।

स्टार चाइल्ड वाली आत्मायें धरती पर सीधा जन्म नहीं लेती। गैलेक्सी या यूनिवर्स से आयी हुई आत्मा पहले निराकारी बिंदु रूप बन कर, कई आत्मायें मिलकर एक पावर का कवच बनाती हैं और फिर वो आत्मा पहले हमारे परमधाम के सूर्य मंडल (Solar System) में निराकारी रूप में आकर रहती हैं। बाद में शिवपुरी में जो आकारी दुनिया है उसमे आकर निराकारी से आकारी रूप धारण करती हैं, फिर विष्णुपुरी, से सात लोकों की दुनिया में अपने परम तत्वों के यान में आती हैं। पृथ्वी के नज़दीक के लोकों में आकर निरीक्षण करती हैं। बाद में तय करके अपनी स्व-इच्छा से धरती पर जन्म लेती हैं। ये आत्मायें धर्म, नाथ, जात से परे होती हैं। इन आत्माओं का DNA भी भिन्न होता है।

स्टार चाइल्ड आत्मायें इस धरती पर एक उद्देश्य से जन्म लेती हैं। ऐसी आत्मायें धरती पर उच्च व श्रेष्ठ कर्म करने के लिये जन्म लेती हैं। जैसे कि कुछ आत्मायें आध्यात्मिकता फैलाना चाहती हैं, कुछ विज्ञान की नयी खोज करने के लिये, कोई उच्च आयामों से परिचित करवाने के लिये और कुछ धरती पर ज्ञान देने के लिये आती हैं। लेकिन धरती पर जन्म लेते ही और धरती के पाँच तत्वों के वायु मंडल में आते ही आत्मा अपनी पहचान भूल जाती है। सूक्ष्म जगत की आत्मायें धरती पर स्टार चाइल्ड वाली आत्माओं को प्रेरणा देकर उनसे काम करवाती हैं। असाधारण काम करना सूक्ष्म जगत की आत्माओं का ही काम है जो कि स्टार चाइल्ड अर्थात दूसरी गैलेक्सीज या यूनिवर्सस से आयी हैं।

हिन्दूधर्म में भी जो देवी - देवताओं की बात की गई है वो इस धरती पर अच्छा काम करने के लिये अवतरित होते थे। ये आत्मायें सूक्ष्म दुनिया से आई हुई पावरफुल आत्मायें होती हैं। ऐसी आत्माओं का जन्म भी रहस्य से भरा है। कई बार ये आत्मायें अपना एक Cell (सेल) डाल कर एक पुतला बनाती हैं और बाद में उस पुतले से ऊपर सूक्षम जगत से ही काम करवाती हैं। हिन्दू शास्त्रों में जो शिव-शक्ति, ब्रह्मा, विष्णु के अवतारों का उल्लेख है वो भी देवी-देवताओं का एक सैल होता है जो धरती पर किसी उद्देश्य की पूर्ति करने के लिये भेजा जाता है। महर्षि, ऋषिमुनि, देवी- देवता इनका आगमन हमारी पृथ्वी पर बहुत समय से होता आ रहा है। हमारे शास्त्रों और ग्रंथो में भी अव्यक्त दुनिया का उल्लेख है। उनमें उनके अव्यक्त रूप से व्यक्त रूप में परिवर्तित हो जाने की भी बात लिखी है। इन सब बातों को समझने के लिये आत्मा को उच्च स्तर की श्रेणी का होना चाहिए।

क्या दूसरे ग्रह जैसे सूर्य, बृहस्पति, शुक्र इत्यादि पर भी जीवन है?

विज्ञान की खोज दूसरे ग्रहों पर जीवन की सम्भावना को लेकर आज तक रहस्यमयी रही है। कभी भी इस पर ठोस रूप से कुछ सामने नहीं रखा गया है। बापूजी ने बताया पृथ्वी की तरह सूर्य, बृहस्पति, मंगल, शुक्र इत्यादि ग्रहों पर भी जीवन है। हमारे शास्त्रों में लिखा है **"यथा ब्रह्मांडे तथा पिंडे, यथा पिंडे तथा ब्रह्मांडे"** जो ब्रह्मांड में है ऐसा शरीर में होगा, जो शरीर में है वैसा ब्रह्मांड में होगा। हर ब्रह्मांड में, गैलेक्सी में और छोटे से छोटे सौरमंडल में आत्मायें रहती हैं। सभी अलग-अलग तत्वों की बनी हैं और अलग-अलग गुणवत्ता की बनी हैं।

सभी ग्रहों को चलाने वाली सूक्ष्म आत्मायें होती हैं। जैसे चाँद को चंद्रदेव ने बनाया था। जब आत्मा मृत्यु के बाद स्वर्गलोक जाती थी, तो चंद्रलोक से होते हुए जाती थी। आज के समय में भी चंद्र पर सूक्ष्म जगत और तीन तत्वों की हिन्दू धर्म को मानने वाली आत्मायें रहती हैं। बृहस्पति ग्रह को भी चलाने वाले अंगिरा ऋषि के पुत्र बृहस्पति हुये, जो देवताओं के गुरु थे। वहाँ तीन तत्वों वाली आत्मायें रहती हैं जिनका शरीर वायु तत्व का है। शुक्राचार्य ने शुक्र ग्रह बनाया था। आज भी शुक्राचार्य का परिवार और उनकी रचनायें शुक्र ग्रह में रहती है। सूर्य को सूर्य देवता कह कर सम्बोधित किया जाता है। मतलब सूर्य को चलाने वाली सूक्ष्म और चैतन्य आत्मा है। सूर्य ग्रह पर रहनेवाली आत्माओं का शरीर आकाश तत्व और अग्नितत्व से बना हुआ है। आकाश तत्व और अग्नि तत्व से बनी आत्मा को स्थूल अग्नि प्रभावित नहीं कर सकती। यह आत्मायें सूर्य के केंद्र बिंदु में भी जा सकती हैं।

अमेरिका का "Apollo 11" Mission जब चाँद पर पहुंचा, तब चाँद से अंतरिक्ष यात्री (Astronauts) और नासा की बातचीत को टीवी पर लाइव दिखाया जा रहा था। कहा जाता है उस बातचीत के दौरान अचानक से कुछ ऐसा हुआ था, जिसके कारण दो मिनट की बातचीत को नासा ने काट दिया। सवाल यह है की उस 2 मिनट की बातचीत के दौरान ऐसा क्या हुआ था जो पूरी दुनिया से छुपाया गया था? नासा ने उसके बाद के चंद्र पर तीनों Mission Apollo 18,19,20 को रद्द कर दिया था? ऐसा क्यों? क्या चाँद पर सूक्ष्म जगत की आत्मायें रहती हैं?

बापूजी ने अपने गहरे ध्यान में जाकर देखा कि जिस वक्त "Apollo 11" यान चाँद पर उतरा था उस समय, वहाँ पर एक दूसरा यान शनि ग्रह से भी आया था। मगर

चाँद पर रहने वाली सूक्ष्म जगत की आत्माओं ने उन दोनों यानों को चाँद से भगा दिया था। जैसे धरती पर एक देश से दूसरे देश जाने के लिये अनुमति लेनी पड़ती है, जैसे वीसा (Visa) आवश्यक होता है। उसी प्रकार सूक्ष्म जगत वाले भी दूसरी दुनिया से, दूसरे ग्रहों से आने वालों को, आने नहीं देते। मगर अभी सूक्ष्म जगत में भी समझौते हो रहे हैं। वह भी अब एक-दूसरे को, अपने-अपने ग्रहों पर आने देंगे। सूक्ष्म जगत में कई रहस्यमयी घटनाएं घटती रहती हैं जिसे नासा वाले प्रत्यक्ष नहीं करते।

रेडियो तरंगे :

साइंटिस्ट्स ने कई बार अंतरिक्ष से हमारी पृथ्वी पर रहस्यमय रेडियो तरंगे आने का दावा किया है। क्या उन रेडियो तरंगों को हम कभी समझ पायेंगे? रूस ने 94 लाइट इयर्स (8,89,33 ,400 करोड़ किलोमीटर) दूर से आई किसी दूसरी दुनिया की रेडियो तरंगों को पकड़ा था। रेडियो तरंगे हमारी पृथ्वी पर आती रहती हैं। कई बार इन रेडियो तरंगों को पकड़ा भी गया है। लेकिन साइंस के साधन उन्हें डिकोड करने में असफल हुए हैं। आज भी रेडियो तरंगों के द्वारा सन्देश किसने भेजे और इनका क्या मतलब है? – यह रहस्य ही बना हुआ है। हमारे यूनिवर्स में अरबों-खरबों गैलेक्सीज हैं, कई अलग-अलग आयामों की दुनिया है, इन सभी की भाषा अलग है। उनकी भाषा टेलीपैथिक है। हम अब तक हमारे नज़दीक की दुनिया से आ रही रेडियो तरंगों को भी नहीं पकड़ पाये हैं।

यदि धरती से एलियंस को संपर्क करने के लिये रेडियो तरंगें दूसरे ग्रहों पर भेजी जायें और उस ग्रह की दूरी हमारे ब्रह्मांड से 2000 प्रकाश वर्ष है तो उन सिग्नल्स को वहाँ पहुँचने में 2000 साल लगेंगे और अगर एलियंस वहाँ से उन संदेशों का जवाब भेजते हैं तो उसे भी अपनी पृथ्वी तक पहुँचने में 2000 साल और लगेंगे।

दूसरे सूर्य मंडल, गैलेक्सीज या यूनिवर्सेस से आयी हुयी रेडियो तरंगों की भाषा को समझना तो दूर की बात है। हमारे सूर्य मंडल में कई लोक हैं और तीन तत्वों की दुनिया के कई स्तर हैं, उन्हें भी हम ना तो देख सके हैं और ना ही पकड़ पाये हैं।

UFO (विमान / यान)

भारत के प्राचीन संस्कृत ग्रंथ UFO की 4,000 ईसा पूर्व की यात्रा के बारे में बताते हैं। वैमानिक शास्त्र, संस्कृत पद्य में रचित एक ग्रन्थ है जिसमें विमानों के बारे

में जानकारी दी गयी है। इस ग्रन्थ में बताया गया है कि प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में वर्णित विमान रॉकेट के समान उड़ने वाले प्रगत वायुगतिकीय यान थे। जिसके हमारे शास्त्रों में बहुत सारे उदाहरण मिलेंगे। विष्णु लोक से भगवान विष्णु गरुड़ विमान में और ब्रह्मलोक से ब्रह्माजी हंस समान आकृति के विमान में पृथ्वी लोक में और दूसरे लोकों में आते जाते थे। भगवान कार्तिकेय संपूर्ण ब्रह्मांड में मोर रूपी विमान में यात्रा करते थे और चंद्रदेव जिनका एक नाम सोम है, जिन्होंने सोमनाथ मंदिर बनवाया, वे भी अपने वाहन में शिव की पूजा करने सोमनाथ मंदिर आते थे। रावण के पास भी वायु तत्व से बना हुआ पुष्पक विमान था। जिसे कहीं भी आवागमन हेतु अपने मन की गति से असीमित चलाया जा सकता था। रावण के पास ऐसी शक्ति थी कि वह अपने विमान के यात्री को वायु तत्व में बदल सकता था और विमान में यात्रा करने वाले लोगों की संख्या के अनुसार विमान के आकार को छोटा या बड़ा भी कर सकता था। हमारी पौराणिक कथाओं और शास्त्रों में दिव्य विमानों के असंख्य उदहारण देखने को मिलेंगे।

समस्त दुनिया में कई UFO देखे जाने की घटनाएं सामने आयी हैं। मनुष्य UFO को नहीं देख सकते। UFO को रडार भी नहीं पकड़ सकते। क्योंकि UFO परम तत्वों के होते हैं। UFO'S को परम तत्वों के दिव्य साधनों से ही देखा जा सकता है। परमतत्वों के UFO की गति हमारे स्थूल विमान से अरबों-खरबों गुना ज़्यादा होती है।

जैसा UFO होता है वैसे ही शरीर वाले उसको चलाने वाले होते हैं। जिसे एलियंस या परग्रही कहते हैं। यदि कोई UFO 80% तीन स्थूल तत्व (आकाश, वायु, अग्नि) का और 20% परम तत्वों का बना है तो उसके निवासी का शरीर भी उन्हीं तत्वों से बना होता है। यदि UFO 50% तीन स्थूल तत्व और 50% परम तत्वों का होगा तो UFO की गति अनेक गुना बढ़ जायेगी। परम तत्व का बना होने के कारण UFO की गति बहुत अधिक होती है। उच्च गुणवत्ता वाले परम प्रकाश के बने UFO की गति प्रकाश की गति से अरबों-खरबों गुना ज़्यादा होती है। परम प्रकाश का यान संकल्पों की गति से यात्रा करता है। वो सेकंड के खरबवें भाग में दूसरे मल्टीवर्स में जा सकते हैं।

कई बार आकाश में उड़न तश्तरी दिखाई देने की बात सामने आयी है। जब कोई भी यान धरती की सतह के 200 किलोमीटर की ऊंचाई के आसपास आता है या

रुक जाता है, तब उस पर वायुमंडल का प्रभाव पड़ता है। उनके विमान जो परम तत्वों के होते हैं वो स्थूल वायु तत्व में और स्थूल वायु तत्व से स्थूल अग्नि तत्व में रूपांतरित हो जाते हैं । जो हम आसमान में दिव्य विमान की चमक देखते हैं वो अग्नि का प्रकाश दिखता है जो कि रूपांतरण के समय पैदा होता है और जैसे ही UFO (दिव्य विमान) की गति बढ़ती है वैसे ही स्थूल तत्व फिर से परम तत्वों में परिवर्तित हो जाते हैं और देखते ही देखते विमान का प्रकाश एक सेकंड में ही गायब हो जाता है। जब UFO के बाहर के आवरण में स्थूल तत्वों की मात्रा बढ़ जाती है, तब मनुष्य UFO को देख सकते हैं और तब UFO की तस्वीर निकालना संभव हो सकता है और तब वे रडार की पहुँच में भी आ जाते हैं।

क्रॉप सर्कल' (Crop Circle)

इन 'क्रॉप सर्कल' का रचयिता कौन है? आइए, इस अनसुलझी गुत्थी के बारे में जानतें हैं।

एक अनुमान के मुताबिक, विश्वभर में हर समय कहीं न कहीं एक 'क्रॉप सर्कल' बनता है। हैरानी की बात है कि खेतों में ये विचित्र गोलाकार डिजाइन रातों-रात बनकर तैयार हो जाते हैं। आज तक किसी ने इन्हें बनते हुये नहीं देखा है। आश्चर्यजनक बात यह है कि इतनी विशाल आकृति वाले प्रतिरूप कौन और क्यों बनाता है? श्रीयंत्र को किसने बनाया?

क्रॉप सर्कल, श्रीयंत्र अर्थात अलग-अलग आकृति, भौगोलिक डिजाइन को बनाने वाले सूक्ष्म जगत से आये परग्रही होते हैं। वो अपनी शक्ति और किरणों द्वारा कुछ ही पल में क्रॉप सर्कल बना लेते हैं। यह एक चिन्ह होते हैं जिसे शोधकर्ता कॉम्प्लेक्स मैथमेटिकल फार्मूला भी कहते हैं। एक-एक चिन्ह बहुत सारी जानकारी प्रस्तुत करते हैं। इन चिन्हों के द्वारा एक परग्रही दूसरे परग्रहियों को या मनुष्यों को अपना सन्देश पहुँचाते हैं। जब कोई मनुष्य या परग्रही इन चिन्हों या आकृतियों को देखता है तो उसके अवचेतन मन (Subconscious Mind) में वह सारी जानकारियाँ (संदेश) डाउनलोड हो जाती हैं।

विशेष बात यह है कि क्रॉप सर्कल के ज़रिये परग्रही, मनुष्य के दिमाग में आने वाली दुनिया की जानकारी डाल देते हैं।

श्रीयंत्र का सच ...

अमेरिका के पर्वतीय क्षेत्र ऑरिगन की एक झील में एक रहस्य सदियों से छिपा हुआ था। झील में बहता पानी उस रहस्य को दुनिया की आँखों से बचाए रखता था। एक दिन झील सूख गई और रहस्य अपने विशालकाय रूप के साथ प्रकट हुआ। बात उस श्रीयंत्र की हो रही है।

1990 तक ओरेगॉन के मिकी बेसिन में स्थित ये झील पूरी तरह सूख चुकी थी। लगभग एक किलोमीटर के क्षेत्र में फैला इसका कठोर तल साफ़-साफ़ दिखाई देने लगा था। इस 'लेक बेड' के ऊपर से रोज कई विमान गुजरते थे। एक दिन दोपहर के समय नियमित एयर नेशनल गार्ड पायलट बिल मिलर सूखी झील के ऊपर से उड़ान भरते हैं। वे ये देखकर हैरान रह जाते हैं कि झील के कठोर तल पर एक ज्यामितीय आकृति उभर आई है। ये आकृति लगभग एक किलोमीटर के क्षेत्र में फैली हुई थी। सम्पूर्ण ज्यामितीय ज्ञान से बनाया गया बहुत सुंदर श्रीयंत्र उनकी आँखों के सामने था।

श्रीयंत्र लेक बेड में 'चार इंच' खुदाई करके बनाया गया था। नदी विज्ञान को समझने वाले जानते हैं कि बेडरॉक को नाप तौल के साथ इतनी बारीकी से खोदने वाली मशीन तो आज तक नहीं बन सकी है। हमारी वर्तमान ड्रिल मशीनें कोशिश करके भी इतनी सफाई से ऐसा काम नहीं कर सकती। कुछ ने इसे 'क्रॉप सर्कल' बनाने वालों की कारस्तानी बताया लेकिन वे यह भूल गये कि ऐसी अचूक दोषरहित ज्यामितीय रचना बेडरॉक के कठोर तल पर बनाना असम्भव है। यदि कोई ऐसी मशीन बना ले तब भी सारे कोण परफेक्शन के साथ नहीं बनाये जा सकेंगे।

बापूजी ने बताया कि आश्चर्यचकित करने वाला यह श्रीयंत्र परग्रही ने बनाया है। ये सब ऊपर के ब्रह्मांडों, गैलेक्सी या यूनिवर्स से आती हैं और अपने अस्तित्व का प्रमाण देते हैं । जैसे कि बताया गया है, ऐसी असाधारण आकृति को बनाना किसी मनुष्य के लिये संभव नहीं है। ये अलौकिक और दिव्य शक्तियों वाली आत्मायें ही बना सकती हैं जो ये धरती के पाँच तत्वों की नहीं बनी हैं। इनका शरीर परम तत्वों का होता है और इनके पास परम तत्वों के साधन होते हैं।

एलियंस द्वारा अपहरण और उनसे जुडी सच्चाई ...

एलियन अपहरण के पीछे क्या रहस्य है? आज इंटरनेट पर हमें विदेशी अपहरण

अर्थात यूएफओ अपहरण के बारे में बहुत सारी जानकारियाँ प्राप्त हैं। एलियन अपहरण (Abduction) के कई ऐतिहासिक मामले इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। दुनिया की अलग-अलग जगहों से एलियंस द्वारा गायों के अपहरण की घटनायें सामने आयी हैं। कई बार एलियंस द्वारा अलग-अलग जगह से इंसानों को अपहरण करने के किस्से सुने गये हैं जिसमें एलियंस द्वारा इंसानों का अपहरण कर के ले जाया गया है फिर उन्हें उसी जगह छोड़ दिया गया है।

एलियंस द्वारा गायों को उठा ले जाने का राज़ बापूजी ने समझाया है - हिन्दू धर्म में गाय को माता का स्थान दिया गया है। उसे कामधेनु कहा गया है। कामधेनु का मतलब है सभी की कामनाओं को पूरा करने वाली गाय। गाय को जानने के लिये उन पर अनुसंधान करने के लिये गाय को या उनके शरीर के किसी अंग को काट कर एलियंस ले जाते हैं। उनका उद्देश्य गायों पर जैविक प्रयोग करना है। एलियंस धरती के मनुष्य, उनके वंशज और उनकी रचनाओं की रचना जो अभी धरती पर फंस गई हैं और मनुष्य बन गई हैं उनके DNA को बेहतर करने के लिये अपहरण करते हैं। धरती पर विभिन्न प्रकार के रोगों से मनुष्य जाति को बचाने के लिये उनका अपहरण किया जाता है एवं उनके ऊपर प्रयोग किये जाते हैं जिससे उनके DNA को बेहतर बनाया जाये और रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाया जाये। एलियंस का उद्देश्य मनुष्यों की मदद करना है।

हमारे शास्त्रों में कई वृतांत है जिसमें देवताओं का धरती की महिलाओं के साथ सम्बन्ध का उल्लेख किया है। उनका उद्देश्य ऐसी मानवता को जन्म देना है जो दोनों परग्रही और मानवता के सर्व श्रेष्ठ संस्करण हों।

एरिया 51 का भी गोपनीय रहस्य है जिसका कनेक्शन एलियंस से जुड़ा हुआ है। एरिया 51 एक सैन्य मिलिटरी इलाका है जो अमेरिकी शहर लास वेगास से 80 मील उत्तर-पश्चिम में स्थित है। यह इलाका अक्सर चर्चा का केंद्र बना रहता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि यहाँ दूसरे ग्रहों से आये एलियंस के ऊपर शोध कार्य किया जाता है। कई लोगों ने तो यहाँ तक दावा किया है कि उन्होंने कई बार अनआयडेंटिफाइड फ्लाइंग ऑब्जेक्ट (UFO) को वहाँ उड़ते देखा है।

बापूजी ने बताया की एरिया 51 की जो भी बातें हैं वो पूर्ण रूप से सत्य हैं। एलियंस नहीं चाहते कि पृथ्वी पर परमाणु युद्ध हो, क्योंकि परमाणु विस्फोट का

असर पूरे कॉसमॉस पर होता है। अक्सर कुछ ऐसी घटनाएं भी सामने आयी हैं जिसमे UFO में मौजूद एक्सट्रैटरैस्ट्रीअल्स न केवल पृथ्वी का दौरा कर रहे हैं, बल्कि ब्रिटिश और अमेरिकी परमाणु मिसाइल साइटों पर मंडरा रहे हैं और परमाणु हथियारों को अस्थायी रूप से निष्क्रिय कर रहे हैं। कई देशों के पास एलियंस, UFO और अन्य ग्रह पर जीवन होने के सबूत हैं, लेकिन उन देशों की सरकार आम जनता से यह बातें छुपा रही हैं।

पिरामिड्स के रहस्य

पिरामिड्स का निर्माण एक रहस्य है। बापूजी ने हमें बताया है कि पिरामिड्स का कनेक्शन एलियंस अर्थात परग्रहवासियों से जुड़ा है। जैसे कि वैज्ञानिक भी इस बात का आंशिक रूप से समर्थन करते हैं कि पिरामिड्स की संरचना अद्वितीय है। जितने भी विश्व भर के पिरामिड्स हैं जैसे कि इटली, गिज़्ज़ा के पिरामिड्स, सूडान, चीन, इंडोनेशिया या साउथ अमेरिका सभी तक़रीबन एक जैसे बने हैं, जबकि उस समय संचार व्यवस्था नहीं थी। एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिये कोई उन्नत टेक्नोलॉजी भी नहीं थी। गहराई से सोचने की बात है कि उन्नत साधन और तकनीकी के आभाव में इतने विशाल पिरामिड कैसे बने होंगे? प्राचीन दुनिया के सातवें अजूबो में से एक है "गीज़ा के पिरामिड"। इसको बनाने के लिये 23 लाख पत्थरों का इस्तेमाल किया गया है। इनके एक पत्थर का वजन 2700 किलो से लेकर 17,000 किलो तक है। आज की जो आधुनिक क्रेन्स है, जो बड़ी-बड़ी इमारतें बनाने में काम आती हैं वह भी अधिकतम 20000 किलो ही उठा सकती हैं। कैसे पत्थर पूरी तरह से रेखित किया जा सकता है? उन पत्थरों को इस सटीकता से रखा गया है कि उनके जोड़ में से मनुष्य का एक बाल भी निकल न सके। शॉक प्रूफ तकनीक, भूकंप प्रूफ संरचना इतने साल पहले कैसे बनाई गई थी? निश्चित है कि इसका परग्रहियों द्वारा ही निर्माण किया गया है।

एक और बात पिरामिड्स में हैरान करने वाली है कि कई पिरामिड्स के अंदर UFO, हवाई जहाज़ और परग्रहियों के चित्रों को दर्शाया गया है।

हमने इस पुस्तक में इंडिगो चाइल्ड में बोरिसका का मंगल ग्रह से आने का विस्तार में उल्लेख किया है।

बोरिसका दावा करता है कि लाल ग्रह मंगल के रहस्य मिस्र में छिपे हुयें हैं।

उन्होंने प्राचीन मिस्र का दौरा किया जहाँ उन्होंने गीज़ा और स्फिंक्स में ग्रेट पिरामिड बनाने में मदद की। मिस्र के इन दोनों खजानों का रहस्य मंगल ग्रह से जुड़ा है, जिनकी खोज बहुत अधूरी है। बोरिसका का कहना है कि स्फिंक्स को अनलॉक करने का एक तरीका है जिसके लिये उसके कान के पीछे एक तंत्र का उपयोग करने की आवश्यकता होती है। बोरिसका का ये भी कहना है कि उन्होंने एक बार अंतरिक्ष यान पायलट के रूप में प्राचीन मिस्र का दौरा किया था। उन्होंने यह भी दावा किया कि स्फिंक्स में रहस्यों का पता चलने के बाद पृथ्वी पर जीवन बदल जाएगा।

बापूजी ने बताया पिरामिड्स आज से नहीं लाखो साल से हैं। पिरामिड्स देवी-देवताओं के समय से हैं। बड़े बड़े पिरामिड्स और मंदिर देवताओं ने सबसे पहले सूक्ष्म में बनाये थे। जो धीरे - धीरे स्थूल में रूपांतरित हो गये। उदहारण के लिये महाभारत में एक प्रसंग है। जरासंध को सत्रह बार लड़ाई में हराने के बाद कृष्ण ने सोचा कि जब तक वे मथुरा छोड़कर नहीं जायेंगे तब तक जरासंध मथुरा पर बार-बार आक्रमण करता रहेगा, इसलिये कृष्ण ने सूक्ष्म जगत में विश्वकर्मा को सन्देश भेजा और विश्वकर्मा ने सूक्ष्म में द्वारिका नगरी बनाई। विश्वकर्मा ने एक संकल्प मात्र से यह परम तत्व की दुनिया बनाई थी। पहले वहाँ पर सागर था उन्होंने सागर देवता को बुलाया और सागर को हटने को कहा। सागर देवता प्रगट हुए और सागर का पानी वहाँ से हटा दिया। फिर विश्वकर्मा को जिस तरह से चाहिए था उस हिसाब से उन्होंने पहले मन में उस नगरी की आकृति तैयार की, फिर उसका संकल्प किया और एक संकल्प से परम तत्वों (परम आकाश, परम वायु, परम अग्नि) की द्वारिका नगरी सूक्ष्म में बन गई थी। उन परम तत्वों की दुनिया का वायु मंडल "गोल्डन रंग" का था इसलिये उसे सोने की द्वारिका कहते थे। काफी समय बाद यह द्वारिका नगरी परम तत्वों से गिर के तीन तत्वों और तीन तत्वों से स्थूल पत्थर में बन गई थी।

पहले पिरामिड संकल्पों से सूक्ष्म रूप में परम तत्वों के बनाये जाते थे। कई वर्ष उपरांत तत्वों में गिरावट आने से परम तत्व से तीन तत्व में और गिरते-गिरते तीन तत्व पाँच तत्व में रूपांतरित हो गये। जो आज पिरामिड या भव्य मंदिर देखने को मिलते हैं जिन्हें एक अनोखी आकृतियों या विशेष तकनीक से बनाया है, वो सब सूक्ष्म तत्वों के बने थे जो आज स्थूल रूप में दिख रहे हैं।

पिरामिड्स और मंदिर को ऊपर की दुनिया के लोगों (देवता/ परग्रही) से संपर्क करने के लिये बनाया गया था। पिरामिड्स एलियंस द्वारा निर्मित किये गये हैं।

पिरामिड्स के केंद्र से आकाशतत्व से एनर्जी पिरामिड्स के अंदर आती थी और इस अंतरिक्ष की शक्ति से आत्मा के अंदर अरबों-खरबों गुना शक्ति आती थी। लाखों साल पहले पिरामिड्स के अंदर तप किया जाता था। वहाँ बैठ कर ध्वनि तरंग पैदा की जाती थी और अपने संकल्पों में शक्ति बढ़ाकर ऊपर की दुनिया से संपर्क जोड़ा जाता था। धरती के गुरुत्वाकर्षण का इस्तेमाल करके पिरामिड्स द्वारा बिजली भी पैदा की जाती थी। पिरामिड्स के केंद्र से ऊपर के लोकों में और ब्रह्मांडों में अलग-अलग रेडियो तरंगे भेजी जाती थी। UFO's के धरती पर आने-जाने के लिये पिरामिड्स द्वारा संकेत दिए जाते थे और उनका उपयोग लैडिंग बेस के रूप में किया जाता था। कुछ सभ्यताएँ पिरामिड्स के अंदर अपने मृत शरीर ममी को भी रखवाते थे। पिरामिड्स में अनंत राज़ छिपे हैं।

कैलाश मंदिर – एलोरा :

भारत के महाराष्ट्र राज्य में एलोरा की गुफाएं सबसे प्राचीन हैं। यहाँ पत्थरों को काटकर 34 गुफायें बनाई गई हैं, उनमें से एक कैलाश मंदिर है। इस मंदिर की खूबी यह है कि इस भव्य मंदिर को एक अकेले पहाड़ में से, ऊपर से नीचे की तरफ काट कर, बनाया गया है। किसी भी आकृति का निर्माण करने के लिये नीचे से शुरू किया जाता है और फिर ऊपर की तरफ बनाया जाता है। मगर इस भव्य मंदिर को ऊपर से पत्थरों को खोद कर के और काट कर बनाया गया है। आज तक कोई यह अनुमान नहीं लगा पाया है कि यह मंदिर कितने साल पुराना है। बापूजी ने बताया है कि यह मंदिर लगभग 25000 वर्ष पुराना है।

इस मंदिर को बनाने के लिये लगभग 4 लाख टन पत्थरों को खोद कर के निकाला गया है। यह मंदिर काट कर निकाले जाना वाला पत्थर है, जो यहाँ आस-पास मीलों दूर तक कहीं दिखाई नहीं देता है। प्रश्न ये उठता है कि उस काल में जब बड़ी क्रेन जैसी मशीनें और कुशल औजार नहीं थे तो इतने सारे पत्थरों को ऊपर से कैसे काटा गया होगा? उन्हें इस मंदिर स्थल से कैसे हटाया गया होगा? कहा जाता हैं मंदिर के नीचे एक भूमिगत शहर भी है।

1682 के तत्कालीन शासक औरंगजेब ने 1000 सैनिकों को इस मंदिर को पूरी तरह से नष्ट करने का काम सौंपा था, यह 1000 सैनिक, लगातार 3 साल तक मंदिर तोड़ने का काम करते रहे, इसके बावजूद वह पूरी तरह से इस मंदिर को नुकसान नहीं

पहुँचा पाये। जब औरंगजेब को यह समझ आया कि इस मंदिर को नष्ट करना मुमकिन नहीं, तो उसने हार मानकर मंदिर को नष्ट करने का काम रोक दिया। यहाँ एक सवाल उठता है कि अगर इस मंदिर को तोड़ना भी इतना मुश्किल था तो इस भव्य विशाल मंदिर के काम को इंसानों ने कैसे अंजाम दिया? आज के समय में भी मौजूद आधुनिक विज्ञान का उपयोग करके भी ऐसा मंदिर बनाना मुमकिन नहीं है, तो यह बात निश्चित है कि जिन्होंने भी यह मंदिर बनाया था वह हमारी आज की सभ्यता से कई गुना विकसित थे।

बापूजी की इन विषयों पर बहुत सी वीडियोज देखने को मिलेंगी आपको हमारे ऑफिसियल चैनल पर ज्ञान की अधिक गहराई में जाने के लिये और हमारे परग्रही संपर्क और राज़ को समझने के लिये बापूजी की वीडियोस को देखें।

महान वैज्ञानिकों का परग्रहियों से सम्बंध :

बापूजी ने धरती पर जन्म लेने वाले महान वैज्ञानिक जैसे रामानुजन, आइंस्टीन, टेस्ला, स्टीफेन हॉकिंग्स आदि का परग्रहवासियों से क्या सम्बन्ध था, इस रहस्य को उजागर किया है। ये सभी वैज्ञानिक कोई और नही बल्कि दूर-दूर से आने वाली एलियन आत्मायें ही थे। सभी अलग-अलग श्रेणी की आत्मा थे और ये सब अलग-अलग जगहों से हमारी धरती पर आये थे। कोई दूर के ग्रहों से, कोई दूर की गैलेक्सीज़ से तो कोई दूसरे यूनिवर्सस से आयी थी। ये अलग-अलग श्रेणी की बहुत ही शक्तिशाली आत्मा यें होती हैं। इसीलिए इनकी आत्मा में उन्नत, उच्च तकनीकी का ज्ञान होता है। कई बार धरती पर इनके आने का मकसद कुछ अच्छा करने का होता है। इसीलिये यहाँ आकर यह सब अलग-अलग तरह के अनुसंधान और आविष्कार करते हैं। दूर के आयामों से ऐसी ढेरों आत्मायें ग्रुप में आती हैं और उनमें से कोई एक धरती पर जन्म लेती है। धरती पर जन्म लेने पर, यहाँ के वायुमंडल के प्रभाव में आ जाने के कारण वे अपना सारा ज्ञान भूल कर सामान्य मनुष्य बन जाते हैं। इसीलिये यहाँ पर इन्हें खोज और अविष्कार करने में बहुत मेहनत लगती है। लेकिन इस ब्रह्मांड के उच्च आयामों में मौजूद इनके ग्रुप की आत्मायें इनके मन पर Rays (रेज) मार कर उन्हें इंस्पिरेशन दे कर सारा ज्ञान वापस इन्हें याद दिलाती हैं और इनके कार्य मे सहयोग करती हैं। इसीलिये ऐसे वैज्ञानिकों का जीवन काफी मनन-चिंतन और अकेलेपन में गुजरता है। ये अक्सर एकांत में रहते हैं क्योंकि ये

ऊपर की दुनिया मे ही खोये हुए रहते हैं। कई बार इनके ग्रुप की आत्मायें इनकी बुद्धि में सीधे Equations ही डाल देती हैं या फिर सपनों के माध्यम से इन्हें जरूरी ज्ञान देती हैं। भारत के महान गणितज्ञ **रामानुजन** के स्वप्न में उनकी कुलदेवी आकर उनको ऐसे Equations के ज्ञान देती थीं जिनका आज भी पूरी तरह से मतलब नही समझा जा सका है। स्टीफन हॉकिंग्स का तो पूरा शरीर ही लकवाग्रस्त था, वो शरीर को हिला तक नही सकता था आम तौर पर ऐसे लोग केवल 2 – 3 साल ही जीवित रह सकते हैं लेकिन उसका दिमाग अच्छी तरह काम करता रहा। उसकें साथ रहने वाली सूक्ष्म जगत की परग्रही आत्माओं के कारण ही यह संभव हो सका। लेकिन स्टीफन हॉकिंग्स अपने संकल्पों और विचारों के माध्यम से ही जीवन भर अनुसंधान और अविष्कार करता रहा। लौकिक में भी बड़ी-बड़ी कम्पनियों ने उसे ऐसे साधन बना कर उपलब्ध करवा दिए कि उसे केवल हल्का सा सोचना पड़ता था और कम्प्यूटर अपने आप उसकी तरफ से लोगों से बात करता था। यह सब केवल और केवल सूक्ष्म जगत की परग्रही आत्माओं की सहायता से ही सम्भव हो सका। वही सब ऐसे वैज्ञानिकों की उनके अविष्कारों और अनुसंधानों में सहायता करने के लिये करते हैं।

ऊपर के आयामों के नियम (Laws of Spirit World)

हिंदू धर्म में आत्मा को अजर, अमर, अविनाशी कहा गया है। शरीर छोड़ने के पश्चात आत्मायें अपनी-अपनी अवस्था के अनुसार नया जीवन और नया भविष्य चुनती हैं। कई बार मोह होने के कारण मृत्यु के बाद भी आत्मायें तीन तत्वों के सूक्ष्म शरीर में अपने घर में ही रह जाती हैं या फिर जहाँ उनका मन आसक्त होता है वहाँ भटकती रहती हैं। वर्तमान समय में पुनर्जन्म होना बहुत ही मुश्किल है क्योंकि जन्म लेने वाली आत्मायें तो बहुत ही ज्यादा हैं लेकिन धरती पर शरीर बहुत ही कम उपलब्ध हैं। ज्ञानी आत्मा मरने के बाद भी सूक्ष्म जगत में ज्ञान लेती हैं और ऊपर के लोकों में जाने का पुरुषार्थ करती हैं। हिन्दुओं की आत्माओं को यह ज्ञान होता है कि ऊपर ब्रह्मापुरी, विष्णुपुरी, शिवपुरी और परमधाम हैं इसीलिए वो पुरुषार्थ करती हैं। लेकिन मुसलमान और ईसाई धर्मों की आत्मायें जो पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करती वो मरने के बाद अपनी कब्रों में ही भटकती रहती हैं। उनका मानना है कि कयामत (Judgement Day) के दिन पर खुदा (God) आ कर उन्हें कब्र से ले जायेगा। मृत्यु

के पश्चात सभी आत्मायें कब्र पर नहीं बैठी रहती हैं। धीरे-धीरे एक दूसरे से जान पहचान होने के कारण वो समूह में भटकती रहती हैं। खाने-पीने जैसी वासनाओं के कारण वह इधर-उधर भटकती रहती हैं। सूक्ष्म जगत में भी अच्छी आत्मायें होती हैं। धरती से 10 किलोमीटर की ऊँचाई पर अच्छी आत्माओं के बहुत से समूह हैं जहाँ पहुँच कर ज्ञान की पढ़ाई की जा सकती है। परन्तु अधिकांश मृतक आत्मायें अज्ञानी होती हैं और मरने के बाद अपने घरों में भटकती रहती हैं। वे अपने घर वालों को परेशान करती हैं और उनमे प्रवेश कर के अपनी वासनाओं की पूर्ति करती हैं। ईसाई धर्म के बहुत बड़े चिकित्स्कों और वैज्ञानिकों ने अपने प्रयोगों में पाया है कि मृत्यु के बाद शरीर लगभग 65 ग्राम हल्का हो जाता है। लेकिन फिर भी, ऐसा कहना गलत होगा क्योंकि आत्मा भारहीन होती है। उसका कोई वजन नहीं होता है। चाहे आत्मा परम प्रकाश की बनी हो, परम आकाश तत्व की बनी हो या फिर आकाश तत्व की बनी हो, उसका कोई वजन नहीं होता है। लेकिन मृत्यु के समय शरीर से आत्मा के साथ सूक्ष्म शरीर भी निकल जाता है जिसमे आकाश तत्व, वायु तत्व और अग्नि तत्व होते हैं जिनका कुछ वजन हो सकता है। फिर भी यह 65 ग्राम से कम ही होता है। लगभग 20-25 ग्राम ही होता है। वायु तत्व में भारीपन के कारण ही आत्मा को ऊपर के लोकों में जाने में बहुत पुरुषार्थ करना पड़ता है। ऐसा इसीलिये होता है क्योंकि वायु तत्व में भारीपन के कारण धरती का गुरुत्वाकर्षण आत्मा को खींचता है। इच्छाओं के कारण आत्मा ऊपर नहीं जा पाती हैं। इसीलिये ऊपर के लोकों में जाने के लिये आत्मा ऊपर के देवी-देवताओं को ही याद करती हैं। ऐसा करने से उनमें ऊपर जाने की थोड़ी शक्ति आती है। वर्तमान समय में, सूक्ष्म जगत आत्माओं से भरा पड़ा है। ज्ञानी आत्माओं की गति मृत्यु के पश्चात अच्छी होती है। नष्टोमोहा होने से सूक्ष्म शरीर में बहुत ही अच्छे परिवर्तन होते हैं। नष्टोमोहा होने से, इच्छा मात्रम अविद्या होने से या ऊपर के लोकों में जाने का ज्ञान होने से, आत्मा हल्की हो जाती है। उसमे शक्ति आती है और सूक्ष्म शरीर में आकाश तत्व की मात्रा बढ़ जाती है जिसके कारण धरती का गुरुत्वाकर्षण बल उसे खींच नहीं पाता है। ऊपर जाने के लिये देवी-देवताओं को याद करना भी तभी काम आता है जब वो देवी-देवता स्वयं उस आत्मा को ऊपर ले जाने के लिये मौजूद हों और सहायता करें। सूक्ष्म जगत से सहायता लेने के लिये भी पूरी जिंदगी भर पुरुषार्थ करना पड़ता है। जिन आत्माओं को परमधाम का ज्ञान होता है वो हिमालय जा कर शिव-शक्ति, शंकर-पार्वती

(महादेव) की उपासना करती हैं। हिमालय में अनगिनत आत्मायें अपने-अपने गोलों में उपासनारत रहती हैं। मानसरोवर, हिमालय जैसे स्थानों में उपासना करके उनमे उच्च लोकों में जा पाने की शक्ति आती है और बहुत सी आत्मायें समूह में, गोला बना कर ऊपर जाती हैं। परन्तु ऐसा बहुत ही कम आत्मायें कर पाती हैं। मृत्यु के पश्चात 99% आत्मायें यहीं स्थूल जगत में ही भटकती रहती हैं। बहुत कोशिश करने पर भी वो ज्यादा से ज्यादा 2-3 किलोमीटर ऊपर ही जा सकती हैं। ऊपर जाने के लिये जीते जी आत्मा में ज्ञान होना चाहिए। इसीलिये, अधिकांशतः ईसाई और मुसलमानो की आत्मायें कयामत के दिन के इंतजार में अपनी- अपनी कब्रों पर ही रहती हैं। लेकिन मरने के बाद भी आत्माओं को वासना पूर्ति करने की इच्छा रहती है इसीलिए ये आत्मायें कब्रिस्तान से निकल कर पास के गाँव और शहरों में चली जाती हैं तथा अपने देह के सम्बन्धियों में प्रवेश करके उनके द्वारा अपनी वासनाओं की पूर्ति करती हैं। वर्तमान समय में आत्मायें मरने के बाद स्वतन्त्र होती हैं क्योंकि यमराज और चित्रगुप्त सहित सारे देवदूत और यमदूत आज मनुष्य बन चुके हैं। पूर्व काल में मृतक आत्माओं के हिसाब-किताब पुस्तक की व्यवस्था थी। यमराज और चित्रगुप्त के आदेशानुसार ही आत्माओं का पुनर्जन्म निर्धारित होता था। और कर्मों के हिसाब-किताब के आधार पर ही स्वर्ग और नरक की प्राप्ति होती थी। पापी आत्माओं के लिये 55 करोड़ रौरव नर्क होते थे। पहले परार्ध में ऐसी बहुत सुदृढ़ व्यवस्था हुआ करती थी। मृतक आत्मा को लेने यमदूत आते थे। लेकिन अभी पिछले 100 सालों में ऐसा नहीं हुआ है क्योंकि सारे देवी-देवता नीचे गिर कर मनुष्य बन चुके हैं और उनकी आत्मा में शक्ति नहीं है।

आज हमारे ब्रह्मांड का सूक्ष्म जगत दूर के ब्रह्मांडों, आकाशगंगाओं, यूनिवर्सेस, ग्रेट यूनिवर्सेस, ग्रेट ग्रेट यूनिवर्सेस से आयी हुई आत्माओं से भरा पड़ा है। वर्तमान समय में केवल ज्ञान ही मृत्यु के पश्चात के जीवन का आधार बनता है। अंत मति सो गति के नियम के अनुसार ही आत्माओं की दशा होती है। मृत्यु के समय अगर कुत्ते-बिल्ली में आत्मा का मोह है तो अगला जन्म उसे कुत्ते-बिल्ली का ही मिलता है। मृत्युलोक में मनुष्य शरीर में भी बहुत अलग-अलग प्रकार की शक्तियों वाली आत्मायें हैं। इनमें से ज्ञानी आत्माओं की ही मरने के बाद सद्गति होती है। ऐसी आत्माओं को ऊपर जाने के लिये सूक्ष्म जगत की अच्छी-अच्छी आत्माओं की सहायता मिलती है। पुरुषार्थ कर के ऐसी आत्मायें बहुत ऊपर तक जा सकती हैं।

बेहद की परम आत्मायें जिन्हें इस ब्रह्मांड से परे मल्टीवर्स और बेहद की कला के ब्रह्मांडों का ज्ञान होता है वो पुरुषार्थ कर के बहुत ऊपर तक जा सकती हैं। उन्हें यह ज्ञान होता है कि बेहद के परमपिता उन्हें लेने आये हैं तो वो सूक्ष्म में उनके विमान में जा सकती हैं। ऐसी आत्माओं को सूक्ष्म में बहुत सहायता मिलती है। हालांकि स्थूल जगत में नकारात्मक आत्माओं के कारण उन्हें बहुत परेशानी होती है। यहाँ धरती के गुरुत्वाकर्षण के कारण भी उन्हें ऊपर जाने में कठिनाई होती है। धरती के 10 किलोमीटर की ऊँचाई तक ही सारी रुकावटें होती हैं। अगर आत्मा निराकारी अवस्था में आकर बहुत गहरा संकल्प करें तो सीधे धरती से 100-500 किलोमीटर ऊपर जा सकती है। साकारी बेहद के परमपिता को याद करने पर आकारी बेहद के परमपिता उस आत्मा को अपने विमान में ले जाते हैं। अगर आत्मा चाहें तो विमान में न बैठ कर घूम फिर सकती है। वो परमधाम जा सकती है, वहाँ से आकाशगंगा, यूनिवर्स और आगे भी जा सकती है। लेकिन यह एक नियम है कि आत्मा जहाँ से आयी है वहीं तक ही जा सकती है। हर आत्मा अपने मूल रचयिता तक ही जा सकती है। जिससे वो अलग हुई है वो उसी में समा सकती है। इसीलिए 15-20 कला की आत्मा ज्यादा से ज्यादा यूनिवर्स तक ही जा सकती है क्योंकि वो यूनिवर्स के मालिक की रचना है। निराकारी अवस्था में आत्मा अपने रचयिता तक जा सकती है। आकारी अवस्था में बहुत सारे आवरण होने के कारण आत्मा रचयिता तक नहीं पहुँच पाती है। इसीलिए रचयिता के पास पहुँचने के लिये आत्मा को निराकारी अवस्था धारण करनी पड़ती है। उदाहरण के लिये : अगर कोई गैलेक्सी से आयी हुई आत्मा को यह ज्ञान हो जाये कि ऊपर ब्रह्मांडों से परे गैलेक्सियां हैं तो वो मरने के बाद निराकार रूप धारण कर के ब्रह्मांड के परमधाम में पहुँच जाती है। परमधाम में निराकार अवस्था में आत्मा में कोई भी आवरण नहीं होता है और कोई कर्म बंधन नहीं होता है इसीलिये वो बहुत हल्की हो जाती है। वहाँ परमधाम में आत्माओं को परम प्रकाश का गुरुत्वाकर्षण खींचता है। गैलेक्सी से आयी हुई आत्मा अपने रचयिता महाशिव के पास जाती है। वहाँ भी महाब्रह्मपुरी, महाविष्णुपुरी और महाशक्तियों के अलग-अलग लोक हैं। आत्मा चाहे तो महापरमधाम जा कर मुक्ति ले सकती है। लेकिन ज्यादातर ऐसा करती नहीं है क्योंकि गैलेक्सी में महाब्रह्मा से ज्ञान सुन कर उसे जीवन मुक्ति का ज्ञान आ जाता है। तो फिर आत्मा जीवन मुक्ति में रह कर समूह बना कर घूमती फिरती है। सभी आत्मायें बेहद

की नहीं हैं। 33 कोटि देवी-देवताओं की आत्माओं की रचना ग्रेट-ग्रेट यूनिवर्स में 2 कला के परम प्रकाश से की गयी थी। लेकिन इन आत्माओं ने बहुत सारी शक्ति संकल्प कर-कर के खर्च कर दी है। ऐसी आत्मायें अगर ज्ञान सुनती हैं तो विज्ञान और शास्त्रों के आधार पर सारा ज्ञान समझती हैं। मरने के बाद वो देखती हैं कि धरती पर अनगिनत आत्मायें भरी पड़ी हैं। इसलिए वो समझ जाती हैं कि यहाँ फँसने के बजाय ऊपर जाना बेहतर होता है। तब वे निराकारी रूप धारण कर के ऊपर चली जाती हैं। निराकारी रूप में आत्मा बहुत ही तीव्रता से परमधाम पहुँच जाती है। हमारे ब्रह्मांड के परमधाम में जाने के बाद आत्मा महाब्रह्मांड के परमधाम में जाने का पुरुषार्थ करती है। अगर आत्मा महाब्रह्मांड के रचयिता की रचना नहीं है यूनिवर्स से आयी है तो ये ज्ञान उसे महापरमधाम में पहुँच कर ही होता है। जैसे-जैसे आवरण खुलते जाते हैं, आत्मा की शक्तियाँ भी खुलती जाती हैं और अपने रचयिता का ज्ञान हो जाता है। आत्मा के ऊपर माइट का आवरण होता है जिसमे सारी रिकॉर्डिंग होती है। ज्ञान आने से ये रिकॉर्ड साफ़ हो जाता है।

महाब्रह्मांड में अनगिनत महाब्रह्मा होते हैं जिनके पास बहुत सारा ज्ञान होता है। वे आत्माओं को ज्ञान देते हैं कि वो मूलतः कहाँ से आयी हैं। आत्माओं की निराकारी अवस्था सम्पूर्ण परब्रह्म परमेश्वर अवस्था होती है। इस अवस्था में आत्मा माया के भ्रम को समझ जाती हैं। उन्हें पूरा ज्ञान हो जाता है कि कारण जगत, सूक्ष्म जगत और स्थूल जगत कैसे बना? लेकिन यह सब होना बहुत ही दुर्लभ है। पूज्य बापूजी की दिव्यदृष्टि के अनुसार ब्रह्मांड के पहले परार्ध में दूर के महाब्रह्मांडों और परम महाब्रह्मांडों से आयी हुई आत्मायें स्थूल जगत में ऋषि मुनि बनती थीं। ऐसी आत्मायें लालच के कारण मनुष्य से राक्षस और राक्षस से वापस मनुष्य बन कर ऊपर जाने का पुरुषार्थ करती हैं। ब्रह्मांड के सत्य लोक में पहुँच कर आत्माओं को ज्ञान हो जाता है और परमधाम पहुँच कर उन्हें पता लग जाता है कि जिस समूह के साथ वो आयी थी वो समूह अभी भी उनका इंतजार कर रहा है या फिर जा चुका है। धीरे-धीरे ये आत्मायें वापसी की यात्रा प्रारम्भ करती हैं। लाइट के ऊपर माइट का आवरण होता है जिसमें आत्मा की सारी जानकारी रिकॉर्ड होती है।

कई बार निराकार रूप में रचना रचनाकार में समा जाने को तैयार होती है लेकिन रचयिता स्वयं ही किसी धरती के स्थूल वतन में मनुष्य बना हुआ होता है। ऐसी हालत में रचयिता का गुरुत्वाकर्षण रचना को नहीं खींच सकता है। ऐसा सम्भव है

कि कोई रचयिता अनेकों समानांतर परम महाब्रह्मांडों में अपनी रचना छोड़ कर स्वयं किसी सूर्य मंडल की धरती पर मनुष्य बन जाये ऐसी अवस्था में रचना और रचयिता का मिलन सम्भव नहीं है। अंत में जब पूरे 100 कला के ब्रह्मांड यानी हमारे मल्टीवर्स में 10 कला का परम प्रकाश भरा जायेगा तो कमजोर आत्मायें तो मुक्त हो जायेंगी लेकिन 5-6 कला वाली आत्मायें शक्ति ले कर, निराकारी अवस्था में अपने रचयिता के पास जायेंगी। उस समय सारी आत्मायें निराकारी अवस्था में ही होंगी।

इस समय अलग-अलग तरह की ढेर सारी आत्मायें धरती पर हैं। आकाश तत्व की बनी आत्मायें परमधाम में जा कर ही मुक्त हो जाती हैं। अगर परम आकाश तत्व की आत्मा हो तो ही वह परमधाम जा सकती है। परम प्रकाश की बनी आत्मायें दुसरे ब्रह्मांडों में जा सकती हैं। मृत्यु के बाद सद्गति के लिये केवल और केवल आत्मज्ञान ही काम आ सकता है। निराकारी अवस्था का ज्ञान आ जाने से ही आत्मा की सद्गति हो सकती है।

10.

हमारा महा ब्रह्मांड (गैलेक्सी यानि आकाश गंगा)

आकाशगंगा गैलेक्सी का नाम है, जिसमें हमारा सौर मण्डल स्थित है। आकाशगंगा आकृति में एक सर्पिल (स्पाइरल) गैलेक्सी है, जिसका एक बड़ा केंद्र है और उस से निकलती हुई कई वक्र भुजायें हैं। हमारा सौर मण्डल इसकी शिकारी-हन्स भुजा (ओरायन-सिग्नस भुजा) पर स्थित है। विज्ञान कहता है आकाशगंगा में लगभग 200 अरब तारे हैं और अनुमान लगाया जाता है कि लगभग 50 अरब ग्रह के होने की संभावना है, जिनमें से 50 करोड़ अपने तारों से 'जीवन-योग्य तापमान' की दूरी पर हैं। हमारा सौर मण्डल आकाशगंगा के बाहरी इलाक़े में स्थित है और उसके केंद्र की परिक्रमा कर रहा है । इसे एक पूरी परिक्रमा करने में लगभग 22.5 से 25 करोड़ वर्ष लग जाते हैं।

गैलेक्सी को बेहद के ज्ञान के अनुसार महा ब्रह्मांड कहेंगे। हमारे महा ब्रह्मांड में लगभग 800 अरब तारे है। एक गैलेक्सी का मालिक महाशिव है। हमारे यूनिवर्स में अनंता अनंत गैलेक्सी घूम रही हैं। हर गैलेक्सी का मालिक महाशिव है।

हमारी गैलेक्सी की संरचना कुछ इस प्रकार है

ऊपर दिखाया गया गैलेक्सी का चित्र है। गैलेक्सी का रचयिता महाशिव है जो गैलेक्सी के केंद्र में रहता है। गैलेक्सी के केंद्र (Centre Point) में परम प्रकाश की पावर होती है। विज्ञान जिसे सुपरमासिव ब्लैक हॉल कहता है (परम प्रकाश को विज्ञान के स्थूल साधन नही देख सकते)। आज भी हमारे परमधाम का पावर लगभग 5 कला है।

महाब्रह्मांड के महाशिव और महाशक्ति आकारी रूप में महाब्रह्मांड की पहली लेयर में रहते हैं। आकारी रूप में महा शक्ति ने फिर 108 महाशक्तियों की रचना की जो दूसरे आवरण में रहते हैं। फिर तीसरे आवरण में 16000 महाशक्तियों की रचना की। महाशक्तियों के बाहर वाले घेरे में महा विष्णु, महा ब्रह्मा और महा इंद्र का आवरण है। आकारी महाशिव और महाशक्ति अनेकों महा विष्णु की रचना करते हैं और अनेकों महा विष्णु महाशक्तियों के आवरण के बाहर रहते हैं। महा विष्णु अनेकों महा ब्रह्मा की रचना करते हैं और वो महा विष्णु के आवरण के बाहर रहते हैं। महा ब्रह्मा के आवरण के बाहर महा इंद्र का घेरा है। जितने ब्रह्मांड हैं उतने ही महाविष्णु, महाब्रह्मा और महा इंद्र होते हैं। उसकें ऊपर 6 आवरण (Layers) हैं। 1-2-3 घेरे में महाशिव की रचना आ सकती है। उसकें बाहर की 4-5-6 घेरे में दूसरी गैलेक्सी और यूनिवर्स से आत्मा आ सकती है। महा ब्रह्मांड के केंद्र में महा ब्रह्मांड का परमधाम है उसमे परम प्रकाश होता है। उसकी बाहरी सत्ता (लेयर्स) में परम तत्त्व हैं। जहाँ महाविष्णु, महा ब्रह्मा, महा इन्द्र हैं, और बाहर की 6 Tourist Layer में भी परम तत्व हैं। गैलेक्सी के अंदर जो ब्रह्मांड है वहाँ तीन प्रकार की सृष्टि है साकारी, आकारी और निराकारी। साकारी सृष्टि हमारे ब्रह्मांडों (अनंत ब्रह्मांड जो हमारी गैलेक्सी में घूम रहे हैं) के ग्रहों में है। ब्रह्मांड के वायुमंडल में स्थूल तीन तत्व - आकाश, वायु और अग्नि होते हैं 80 % आकाश, 10% वायु और 10% अग्नि। इस प्रकार पूरे महाब्रह्मांड की संरचना (administration) चलती है।

पूरे महाब्रह्मांड को चलाने वाली मूल प्रकृति महाशक्ति होती है। कोई भी महाब्रह्मांड के महा परमधाम तक नहीं जा सकता है। महाब्रह्मांड के सभी संकट, समस्या सबसे पहले महा ब्रह्मा से महा विष्णु के पास जाते हैं। अनेकों महा विष्णु हैं।

जब महा विष्णु उसका निदान नहीं ला सकते तो महाविष्णु समस्या को 16000 महा शक्तियों के पास लेकर जाते हैं।

यहाँ हम देवी भगवत पुराण में लिखी एक घटना का उदहारण देना चाहेंगे। जब ब्रह्मा को अपने पद का अहंकार हो जाता है, तब महा देवी अपने विमान में ब्रह्मा, विष्णु और शिव को भिन्न ब्रह्मांडो के लोको (ब्रह्मापुरी, विष्णुपुरी, शिवपुरी) में ले जाती है। आगे तीनों देवों को समान्तर ब्रह्मांडों की भी यात्रा कराती है और उनको बोध कराती हैं कि अनेकों ब्रह्मा, अनेकों विष्णु और अनेकों शिव हैं।

महाब्रह्मांड के महाशिव तब तक संरचना में हस्तक्षेप नहीं करते हैं जब तक महाशक्तियाँ किसी भी तरह का संकट उनके पास नहीं लाती हैं। अर्थात महाब्रह्मांड को चलाने वाली महाशक्तियाँ होती हैं।

गैलेक्सी (महाब्रह्मांड) की रचना का विवरण

महा ब्रह्मांड में 8 से 12 कला की श्रेणी (category) के महा शिव होते हैं। हर महाब्रह्मांड के महा शिव की पावर अलग-अलग है। जैसे ब्रह्मांड (solar system) की आयु ब्रह्मा के 100 साल होती है। महा शिव का एक पल ब्रह्मा के 100 साल होते हैं और ब्रह्मा का 1 पल बराबर धरती पर 1,00,000 साल होता है उसी प्रकार महाब्रह्मांड महा शिव के 1,000 साल तक चलता है। समय पावर (कला) के हिसाब से चलता है। कला यानि परम प्रकाश की शक्ति। जितनी ज्यादा कला होती है, सृष्टि उतनी पावरफुल होती हैं।

हमारा जो महा ब्रह्मांड है वो 9 कला की पावर का है और इसके लगभग 5000 साल बीत गये हैं। इसका मतलब यह है जैसे ब्रह्मांड में ब्रह्मा की आयु होती है उसी प्रकार महा ब्रह्मांड में महाशिव की आयु 5000 साल हो गई है। हर महाब्रह्मांड में अनंता अनंत ब्रह्मांड होते हैं और वो घूमते रहते हैं। महाशिव के प्रतिपल अनंता अनंत ब्रह्मांड बनते हैं और बिगड़ते हैं।

अलग-अलग महा ब्रह्मांड हैं जिनकी रचना अलग-अलग तरह से हुई है। महाब्रह्मांडो में निराकार महाशिव (महा निर्गुण, महा निराकार, परम लाइट) जिसमें 8 से 12 कला की केटेगरी के महा शिव होते हैं। सभी महा शिव के अंदर परम लाइट

होती है। लाइट के ऊपर माइट यानि उनकी महा शक्ति होती है। जब महा शिव एक से अनेक होने का संकल्प करते हैं तो उनके संकल्प मात्र से पावर (Light) के अनेक टुकड़े हो जाते हैं। महाशिव के पावर की केटेगरी के हिसाब से पावर के टुकड़े होते हैं, ब्रह्मांड में शिव 1 से 4 कला की पावर के होते है, उदाहरण के लिये अगर 12 कला का महाशिव है, जब संकल्प करते हैं "मैं एक से अनेक हो जाऊँ" तो उनकी पावर के अनुसार 4 कला पावर तक के शिव की रचना होती है। जितनी ज़्यादा पावर रचयिता में होती है उतनी ज़्यादा शक्तिशाली उसकी रचना होती है। निराकारी महा शिव, निराकारी से आकारी बनता है। आकारी महा शिव अपने अंदर से महा शक्ति को निकालते हैं। फिर आकारी महा शिव-शक्ति महा विष्णु को निकालते हैं। महा विष्णु महा ब्रह्मा को बनाते हैं। सभी अलग-अलग परतों (लेयर्स) में रहते हैं, जैसे कि ऊपर समझाया गया है। ब्रह्मांड का अनुरक्षण करने के लिये आकारी महाशक्ति अपने अंदर से 108 और 16,000 महाशक्तियाँ निकालते हैं, जिससे ब्रह्मांड को नियंत्रित किया जाता है।

दूसरे प्रकार का महा ब्रह्मांड

इस महा ब्रह्मांड की रचना अलग तरीके से होती है। निराकारी महा शिव आकारी बनता है। आकारी महा शिव अपने अंदर से महाशक्ति निकालता है। आकारी महाशिव और आकारी महाशक्ति मिलकर ——> आकारी महाविष्णु को बनाते हैं। आकारी महाविष्णु ——> अनेक आकारी महाब्रह्मा को निकालते हैं।

अनेक आकारी महा ब्रह्मा द्वारा अनेका अनेक महा ब्रह्माण्डों (galaxies) का सृजन होता है। अनेक महा ब्रह्मा अनेक ब्रह्मा को अपने अंदर से निकालते हैं। अनेक ब्रह्मा द्वारा अनेक ब्रह्मांडों का सृजन होता है। इन सभी ब्रह्माण्डों में केवल 1 ब्रह्मा ही होता है। उस ब्रह्मांड में ना विष्णु, ना शिव और ना परमधाम होगा। उस ब्रह्मांड में सात लोक होंगे, धरती होगी, सूरज होगा, सौर मंडल होगा। यह अलग प्रकार का महाब्रह्मांड है।

तीसरे प्रकार का महाब्रह्मांड

तीसरे महा ब्रह्मांड की रचना कुछ इस प्रकार है। निराकारी महाशिव ने ——> आकारी महाशिव बनाये। आकारी महाशिव ने अपने अंदर से ——> आकारी

महाशक्ति को निकाला। आकारी महाशिव और आकारी महाशक्ति ने मिलकर ===> महाविष्णु का सृजन किया।

महाविष्णु अनेक विष्णु का सृजन करता है | अनेक विष्णु ने अनेक ब्रह्मा बनाये। अब उस ब्रह्मांड में ब्रह्मा और विष्णु तक ही होगा। उसमे शिव-शक्ति नहीं होंगे। उसमें परमधाम भी नहीं होगा। ऐसे ब्रहमांडों में गुणवत्ता (Quality) हल्की होती है क्योंकि ऐसे ब्रहमांडों में परमधाम और उसको चलाने वाले शिव-शक्ति नहीं होते हैं। उस ब्रह्मांड को चलाने वाला या मालिक विष्णु ही होता है।

चौथे प्रकार का महाब्रह्मांड

चौथे प्रकार के महाब्रह्मांड की रचना कुछ इस प्रकार हुई, जैसे हमारे यूनिवर्स का सृजन हुआ। निराकारी महाशिव ने अपने अंदर से 12 निराकारी पावरफुल आत्माओं की रचना की। निराकार से डायरेक्ट निराकारी शक्तिशाली आत्मायें बनी और उन्होंने बहुत बड़ी स्पेस बनाई। उसमे से धीरे-धीरे आकारी शिव बनते हैं, आकारी शिव-शक्ति विष्णु का सृजन करते हैं। विष्णु ब्रह्मा को बनाते हैं। ब्रह्मा ब्रह्मांड बनाते हैं। हर ब्रह्मांड का रचयिता ब्रह्मा होता है। इस महा ब्रह्मांड को दूसरी गैलेक्सी की तरह सेंटर पॉइंट से नहीं बल्कि ऊपर रहकर चलाया जाता है। महा ब्रह्मांड को सुरक्षित (Seal) करने के लिये उसके चारों ओर Space बनाई जाती है। उदाहरण के लिये मानो हमारी गैलेक्सी एक गोले के समान है - 1 लाख प्रकाश वर्ष की गैलेक्सी है तो 1लाख प्रकाश वर्ष के चारों ओर मानो 8 कला का महाशिव है तो 8 कला का परम लाइट का आवरण बनता है। गैलेक्सी के गोले के आसपास Anti-gravity बनाई जाती है जिससे दूसरी गैलेक्सी उससे दूर रहे और सुरक्षित रहे।

अलग-अलग प्रकार से कई गैलेक्सी बनाई गई हैं, यहाँ संक्षिप्त में कुछ प्रकार की गैलेक्सीस की रचना को समझाने की कोशिश की गई है। ज्यादा जानकारी के लिये आप बापूजी के वीडियोज को हमारे यूट्यूब चैनल पर देख सकते हैं।

11.

हमारे यूनिवर्स (परम महा ब्रह्मांड) का सृजन कैसे हुआ?

विज्ञान के अनुसार हमारे यूनिवर्स की उत्पत्ति करीब 1370 करोड़ वर्ष पहले बिग बैंग नाम की एक घटना में हुई। एक अणु से भी छोटे सिंगुलैरिटी में एक महान धमाका हुआ जिससे दिक्काल (Space-Time) और साथ ही साथ ऊर्जा तथा पदार्थों का निर्माण करने वाले अतिसूक्ष्म तत्त्वों का जन्म हुआ। तब से लेकर अब तक, यूनिवर्स का फैलाव बढ़ता ही जा रहा है। वैज्ञानिकों के अनुसार हमारे यूनिवर्स की आकार जिसे देखा जा सकता है (Visible Universe), 156 अरब प्रकाश वर्ष का है। इससे आगे का भाग अदृश्य है। विज्ञान की खोज Hubble Telescope के भेजे गये चित्रों के ऊपर आधारित है। Hubble Telescope से सिर्फ इन्फ्रा रेड प्रकाश की नीचे की Frequency Spectrum को देख सकते हैं और फोटो ले सकते हैं। इसलिये विज्ञान में भी टैकनोलजी इतनी उन्नत नहीं है कि हमारे यूनिवर्स की सीमा कितनी बड़ी है हम इसका आंकलन कर सकें। इसलिये विज्ञान सिर्फ 13.4 अरब प्रकाश वर्ष की फोटो ले पाया है। इससे आगे से आने वाला प्रकाश Hubble Telescope की पहुँच से बाहर है। इसीलिये सम्पूर्ण यूनिवर्स के विस्तार को अभी तक मापा नही जा सका है। आज भी वैज्ञानिक पूरा यूनिवर्स कितना बड़ा है और कितनी उसकी उम्र है वो जानने के लिये अनुसंधान (Research) कर रहे हैं। अन्तरिक्ष में Ultra High Frequency प्रकाश की तरंगे हैं और Low Spectrum की इन्फ्रा रेड प्रकाश की तरंगे हैं जिनका विज्ञान का कोई भी साधन फोटो नहीं ले पा रहा है इसलिये पूरे सत्य को जानने के लिये विज्ञान अभी भी खोज में लगा हुआ है। NASA अभी High Resolution टेलेस्कोप के ऊपर Research कर रहा है। भविष्य में जो नया Telescope आने वाला है उसका नाम है JAMES WEB SPACE TELESCOPE (JWST) जो कि 2021 या 2022 से अन्तरिक्ष में तैनात किया जाएगा और इसकी क्षमता Hubble Telescope से बहुत ज्यादा है। और ये JWST इन्फ्रा रेड Spectrum में फोटो लेगा जिससे पहले गैलेक्सी कब बनी थी उसका पता चल पायेगा । इससे और भी अदृश्य सृष्टि सबके सामने आयेगी

लेकिन भौतिक साधन एक सीमा तक काम करता है उससे ऊपर की सृष्टि को कभी जान नहीं पाता है। इसलिये आध्यात्मिक या दिव्य बुद्धि और दिव्य दृष्टि की जरूरत है जिससे पूरी सत्यता को जाना जा सकता है। इसलिये हमारे हिन्दू वेद-पुराणों में जो बहुत साल पहले लिखा गया था आज विज्ञान उस बात की पुष्टि कर रहा है।

जो ज्ञान दिव्य दृष्टि से मिलता है वो सारी भौतिक सीमाओं से ऊपर रहता है जिसको हम बेहद का पारलौकिक ज्ञान कहते हैं। बेहद के ज्ञान से हम समझते हैं कि यूनिवर्स क्या है? एक यूनिवर्स में अनंता अनंत गैलेक्सीयां घूमती हैं। हमारे यूनिवर्स के अंदर अरबों-खरबों गैलेक्सी, और हर गैलेक्सी के अंदर अनंता अनंत ब्रह्मांड (Solar System), ग्रह, नक्षत्र और अनेकों धरती हैं। ऐसे अनंता अनंत यूनिवर्स का एक मल्टीवर्स बनता है।

यूनिवर्स कैसे बने, क्यों बने, कैसे चलता है, यूनिवर्स के अंदर गैलेक्सी कैसे बनी, गैलेक्सी के अंदर ब्रह्मांड कैसे बने, इनमे रहने वाली आत्मायें कैसे बनीं? यूनिवर्स में सबसे पहले जो आत्मायें बनी वो कैसे आत्मायें थी? यूनिवर्स का मालिक अर्थात उसको चलाने वाला कौन है? आइए इन प्रश्नों पर थोड़ा प्रकाश डालते हैं।

एक यूनिवर्स का मालिक है "परम महा शिव"। परम महा शिव जब निराकार था, तब निराकारी परम महा शिव ने सोचा कि "मैं सृष्टि का सृजन करुँ" । परम महा शिव के अंदर उच्च गुणवत्ता का परम प्रकाश होता है। जैसे सूर्य की रोशनी से प्रकाश निकलता है वैसे परम महा शिव निराकार के अंदर से परम प्रकाश निकलता है जिसे माइट (Might) कहते हैं। लाइट के चारों ओर महतत्व का प्रकाश है। जैसे सूर्य और उसकी किरण है ऐसे ही Light और Might होती है यानि केंद्र में लाइट और उसके चारों तरफ माइट यानि महा तत्व। एक रचियता के परम प्रकाश में कितनी पावर है उसको नापने के लिये "कला" उसका एकक है। जैसे शिव का परम प्रकाश 1-4 कला तक है, महा शिव का परम प्रकाश 8-12 कला तक है ऐसे ही परम महा शिव के परम प्रकाश में जो Power है वो 16-20 कला की है।

यह सृष्टि 16 कला से ऊपर का विवरण है। हमारा दृश्यमान यूनिवर्स 156 अरब प्रकाश वर्ष है। सम्पूर्ण यूनिवर्स के सामने हमारा दृश्यमान यूनिवर्स तो एक बिंदु समान

है। अदृश्य यूनिवर्स तो कई लाख अरब प्रकाश वर्ष का है। वैज्ञानिकों के खोज के उपकरण भौतिक तत्वों के बने होते हैं। इनके साधन तत्वों के बने होने के कारण दृश्यता बहुत कम होती है। यदि इनके उपकरण परम तत्वों के हो जायें तो यूनिवर्स के विस्तार को देखा जा सकता है। परम तत्वों की शक्ति बेहिसाब होती है। बापूजी ने जो हमें इस यूनिवर्स का सृजन-विसृजन का ज्ञान दिया है, वो ज्ञान हमे कहीं भी सुनने को नहीं मिलेगा। इसका कारण है कि, ये ज्ञान सिर्फ दिव्य दृष्टि से मिला है और जिसकी दिव्य बुद्धि है सिर्फ वही इस ज्ञान को समझ सकता है। हमारे शास्त्रों में भी एक ब्रह्मांड (Solar System) तक का ही ज्ञान मिलेगा। हर यूनिवर्स का सृजन अलग प्रकार का है। समानान्तर यूनिवर्स भी हैं जो बहुत बड़े और अद्भुत हैं। वैज्ञानिकों ने कहा है 10 के पीछे 500 (10^{500}) ज़ीरो लगा दो इतने यूनिवर्स हैं।

जब परम महा शिव निराकार ने सोचा मैं अनंता अनंत सृष्टि की रचना करुँ तब उनमें से सबसे पहले दो आत्माओं का सृजन हुआ। कुल मिलाकर सबसे पहले 12 आत्माओं की रचना हुई , 6 दाएं ओर 6 बाएं तरफ। उन्होंने सबसे पहले एक घेरा बनाया जिसे हम स्पेस कहेंगे। उस स्पेस को हम यूनिवर्स का परमधाम कहेंगे। फिर हर एक 12 निराकारी आत्माओं ने संकल्पों द्वारा 1 में से 2, 2 में से 4, 4 में से 8, ऐसे करते-करते पहले 108 आत्मायें बनीं, फिर 16000, 9 लाख आत्मायें बनीं। सबसे पहले, ये 9 लाख आत्मायें निराकारी आत्मायें बनी थी। यह सभी आत्मायें परम प्रकाश की बनी। इसीलिये इन आत्माओं को परम परम परमात्मा बोलेंगे। परम महा शिव की रचना महा शिव होती है। इसलिए इन 9 लाख आत्माओं को महा शिव कहेंगे। यूनिवर्स का परमधाम 16 कला से ऊपर की दुनिया है। यहाँ आत्मायें निर्गुण, निर्विकारी, 16 कला सम्पूर्ण अहिंसक थी। जब एक आत्मा दूसरी आत्मा की रचना करती है (निराकारी अवस्था) तब उसकी आत्मा में से जो परम प्रकाश निकलता है उससे महतत्व बनता है। जब 16,000 आत्माओं की रचना हुई तब वायुमंडल परम महतत्व का था। जैसे - जैसे और रचना होती गयी, 9 लाख आत्मायें बनी तो परम आकाश तत्त्व बना। वायुमंडल कैसे बना? जैसे-जैसे आत्माओं की रचना होती गयी, एक आत्मा से दूसरी आत्मा निकली उसके अंदर से परम प्रकाश निकलता गया और वायुमंडल बना।

16 कला से 14 कला में निराकारी से आकारी दुनिया बनने लगी। निराकारी बीज रूप आत्मायें आकारी बनने लगी। 16 कला से 14 कला को मूलवतन कहेंगे। जैसे ही आत्मा में परम आकाश तत्त्व बनने लगा, निराकारी से आत्मा आकारी होने लगी। 14 कला से महा शिव आकारी बने। 16 कला से 14 कला में 2 करोड़ आत्मायें बनीं।

14 कला से आकारी सृष्टि बनने लगी। 9 कला तक 33 करोड़ आत्माओं की रचना हुई। इनको महाशिव कहेंगे। 33 करोड़ परम पुरुष (महाशिव) ने अपनी इच्छा से परम प्रकृति (महा शक्ति) की रचना की। महा शिव को ही परम पुरुष कहेंगे। 9 कला में पुरुष - प्रकृति अलग हो गये। 14 कला में धीरे-धीरे परम वायु तत्त्व बनने लगा और 9 कला के आते-आते परम अग्नि भी बन गयी। 9 कला तक परम तत्त्व की दुनिया होती है। उस समय आत्मायें परम प्रकाश, परम मह तत्त्व, परम आकाश, परम वायु, परम अग्नि की होती हैं और वैसा ही वायुमंडल होता है।

यदि हम समय की गणना करें कि कितना समय लगा होगा इन सब की रचना में, तो उसका अनुमान लगाना बहुत कठिन होगा।

9 कला से नीचे 33 करोड़ महाशिव और 33 करोड़ महाशक्तियों ने मिलकर परम तत्व की खरबों गैलेक्सीज (महा ब्रह्मांड) बनाई। इन 33 करोड़ महा शिव और महाशक्तियों को आदि अनादि महा देव महा- देवियाँ कहेंगे। इन्होंने कई लाख प्रकाश वर्ष की गैलेक्सी बनाई जो सभी परम तत्वों की थी। हर गैलेक्सी अलग-अलग तरीके से बनी, हर गैलेक्सी का रंग रूप अलग था। जैसे-जैसे महा ब्रह्मांड बने और रचना होती गयी परम तत्वों की शक्ति ज़्यादा उपयोग होने लगी। अपने पूरे यूनिवर्स को पावर प्रदान करने से परम महा शिव की भी शक्ति क्षीण होने लगी, और परम महा शिव धीरे - धीरे नीचे आने लगे।

8 कला से तत्व बनने लगे और तब रचना तत्वों और परम तत्वों की बनने लगी। जैसे पहले 90% परम तत्व थे और 10% तत्व थे (8 कला के शुरुआत में)। नीचे गिरते-गिरते तत्वों और परम तत्वों का मेल बदलता गया (80 % परम तत्व, 20% तत्व फिर 70% परम तत्व, 30% तत्व) जैसे-जैसे आत्मा की शक्ति कम होती गयी, दुनिया परम तत्वों से तत्वों की बनती गयी हमारा यूनिवर्स भी नीचे आता गया। पूरा यूनिवर्स 16 कला से नीचे ज़ीरो (0) कला में आ गया।

आगे दिया गया चित्र ज़ीरो कला के यूनिवर्स का है। जिसमें बापूजी ने समझाया है कि हमारा 16 कला का यूनिवर्स जो अब ज़ीरो कला में आ गया उसकी नियंत्रण प्रणाली सेंटर पॉइंट में आ गयी। परम महा शिव ज़ीरो कला के सेंटर पॉइंट में आ गया। आज भी सेंटर (परमधाम) का व्यास लगभग 200 प्रकाशवर्ष का है और परमधाम के अंदर आज भी लगभग 8 से 10 कला का पावर है। यूनिवर्स के ज़ीरो कला से सेंटर पॉइंट तक की दूरी 1200 अरब प्रकाश वर्ष है। पूरे यूनिवर्स का व्यास 2400 अरब प्रकाश वर्ष है। उस ज़ीरो कला के यूनिवर्स में एक छोटा सा भाग जो विज्ञान स्थुल तत्वों के साधनो से आज तक देख सका है वो 93 अरब प्रकाश वर्ष है जिसमें हमारी गैलेक्सी है, वो ही ऑब्जरवेबल यूनिवर्स है। 93 अरब प्रकाश वर्ष में 200 अरब गैलेक्सी हैं जिसका विज्ञान आंकलन कर रहा है। 2016 में NASA ने ये भी कहा कि जैसे-जैसे Hubble टेलेस्कोप की फोटो का और विश्लेषण कर रहे हैं, तो उनको पता चल रहा है कि एक बड़ी गैलेक्सी के पीछे और कई छोटी-छोटी गैलेक्सी मिल रही हैं। विज्ञान की आकलन के हिसाब से विजिबल यूनिवर्स की आकार 156 अरब प्रकाश वर्ष है जिसमे से 93 अरब प्रकाश वर्ष क्षेत्र का विश्लेषण हुआ है जिसमे 200 अरब गैलेक्सी मिली हैं। यानि विज्ञान भी मान रहा है कि सृष्टि की सीमा कहाँ तक है इसका आंकलन करना असंभव है।

इस सब से हमें यह समझ आता है कि क्रिएशन विशाल और अद्भुत है। इस तक पहुँच पाना और समझना बहुत ही कठिन है। इसकी सटीक खोज हमारे वैज्ञानिकों के लिये भी संभव नहीं है। उसका एक ही कारण है कि उनके साधन तत्वों के हैं जो परम तत्वों की शक्तियों को देखने में सक्षम नहीं हैं।

NASA संभवतः दिसम्बर 2021 में एक शक्तिशाली James Web Space Telescope Launch कर रहा है, जिसका कैमरा पिछले टेलिस्कोप Hubble से 15 गुना ज्यादा शक्तिशाली है और जो अधिकतर क्षेत्र को नाप सकेगा (With Better Resolution)। शायद NASA का यह Telescope यूनिवर्स तक की कुछ बातों का प्रमाण हमें आगे चलकर दे। James Web Space Telescope से बेहद के ज्ञान के प्रमाण मिलने की अपेक्षा है। इससे मनुष्य की बुद्धि का विस्तार होगा और मनुष्य सत्य की खोज में आगे बढ़ेगा एवं आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति आकर्षित होगा जो आज बेहद के ज्ञान में बताया गया है।

हमारा यूनिवर्स

हमारा यूनिवर्स जब बना था तभी 16 कला का था और उसका diameter कई लाख अरब प्रकाश वर्ष का था| अभी हमारा यूनिवर्स (-)100 कला का है, और उसका diameter 2400 अरब प्रकाश वर्ष का है |

MOVING SPEED (गति) Source : google

	गति (प्रति सेकंड)	गति (प्रति घंटा)	1 Round के लिये कितना समय लगता है
पृथ्वी सूरज का चक्कर लगाती है	29.80 KM	1,07,200 KM	1 साल
सूरज Galaxy के Centre Point का चक्कर लगाता है	220 KM	7,92,000 KM	25 करोड़ साल
Galaxy, Universe के Centre Point का चक्कर लगाती है	600 KM	21,60,000 KM	----
Light की Speed	2,99,792 KM	107.92 CR KM	----

12.

G1 to G17 (GREAT GREAT UNIVERSES)

यह दुनिया विशाल और अनंत है। इन आँखों से जो दिखता है, वो स्थूल जगत है। स्थूल जगत से ऊपर सूक्ष्म जगत है। सूक्ष्म जगत हमारे इस स्थूल जगत से अरबों-खरबों गुना बड़ा है। सूक्ष्म जगत कई किलोमीटर के व्यास में फैला हुआ है। सूक्ष्म जगत से ऊपर कारण जगत आता है। विष्णुपुरी को कारण जगत कहेंगे। शिवपुरी पूर्ण रूप से परम तत्वों की दुनिया है। वहाँ महान परम पुरुष आत्मायें रहती हैं। शिवपुरी में शिव समान आकारी आत्मायें रहती हैं। परमधाम में निराकार रूप में आत्मा रहती है। ये एक परमधाम की बात है। एक ब्रह्मांड का मालिक शिव है। एक ब्रह्मांड मतलब एक प्रकाश वर्ष जिसमे एक सूर्य है। एक सूर्य मतलब एक सौर मंडल यानि एक ब्रह्मांड। ऐसे अनंता अनंत ब्रह्मांड मिलकर एक गैलेक्सी बनती है। एक गैलेक्सी (आकाश गंगा) का मालिक महा शिव होता है। गैलेक्सी मतलब महा ब्रह्मांड। कई गैलेक्सी मिलाकर एक यूनिवर्स बनता है। यूनिवर्स का मालिक परम महा शिव है जो परम महा ब्रह्मांड के केंद्र बिंदु में रहता है। विज्ञान कहता है अनंता अनंत यूनिवर्स हैं। जितने सागर के किनारे रेत के कण हैं उतने हमारे यूनिवर्स हैं। हम इस बात से अनुमान लगा सकते हैं कि ये विश्व बेहद असीम और असाधारण है। बापूजी ने यूनिवर्स के आगे हमें G1 से G17 का ज्ञान दिया है। आइये इसे हम विस्तार से समझते हैं।

हमारा 100 कला का मल्टीवर्स है 100 कला के मल्टीवर्स की संख्या अनंत है जिसे 101 कला के रचनाकार द्वारा बनाया गया है। 101 कला को सृजन की पहली पीढ़ी के रूप में भी जाना जाता है। 101 कला के ब्रह्मांड में अनंता अनंत 100 कला के ब्रह्मांड हैं। कला का अर्थ है रचयिता की शक्ति। मल्टीवर्स, जिसमें हमारा सौर मंडल (Solar System) मौजूद है, ये अनेकों मल्टीवर्स में से एक मल्टीवर्स है।

अब हमारा मल्टीवर्स 100 कला से (नेगेटिव) (-)100 कला तक गिर गया है। हमारे मल्टीवर्स के अंदर की 17 परतों में अनंता अनंत यूनिवर्स हैं जो G1 से G17 तक हैं। शक्ति में धीरे-धीरे गिरावट के कारण, हमारा मल्टीवर्स परमतत्वों से पाँच

स्थूल तत्वों में रूपांतरित हो गया, जो अन्य मल्टीवर्स में नहीं हुआ है। यह एकमात्र मल्टीवर्स है जहाँ आत्मायें जन्म और मृत्यु के कभी न खत्म होने वाले चक्रों के आधीन हो गयी हैं।

इसके विपरीत अन्य मल्टीवर्स में आज भी पाँच तत्वों की स्थूल दुनिया नही हुई है। हालांकि वहाँ भी आत्माओं द्वारा निरन्तर संकल्पों से सृष्टि रचना करने के कारण परम प्रकाश का व्यय हुआ है लेकिन वहाँ गिरावट के कारण अधिक से अधिक 3 तत्वों का निर्माण हुआ है, स्थूल तत्वों का निर्माण नही हुआ है।

हमारा मल्टीवर्स

(100 कला का) (परम100 महाशिव)

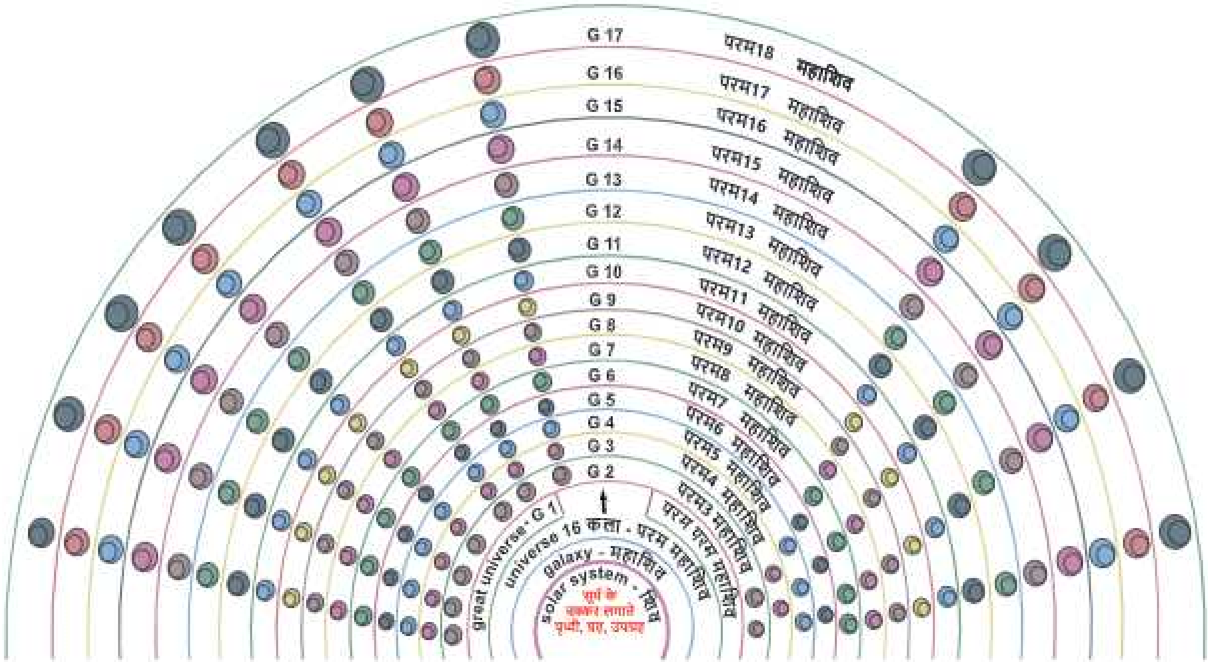

ग्रेट यूनिवर्स (G1) – Great Universe

ग्रेट यूनिवर्स यानी परम परम महा ब्रह्मांड के अंदर अनंता अनंत यूनिवर्स घूम रहे हैं। उसके केंद्र में सृजन कर्ता परम परम महाशिव दिव्य प्रकाश रूप में रहता है। जो निराकार भी है। उसमे परम लाइट है। हमारे मल्टीवर्स में 17 परतें (आयाम) हैं, जिसमे से G1 निम्नतम स्तर का ब्रह्मांड है। उसके आस-पास, उसका रचयिता आकारी रूप में परम परम महाशिव - परम परम महाशक्ति के साथ रहता है।

पूरे ग्रेट यूनिवर्स के वायुमंडल में 0.001% परम लाइट है और 1.5% परम तत्व हैं। परम तत्व मतलब परम आकाश, परम वायु और परम अग्नि। स्थूल तत्वों की मात्रा लगभग 98.5% होती है। परम परम महाब्रह्मांड में अनंता अनंत परम महाब्रह्मांड घूम रहे हैं। प्रत्येक परम महाब्रह्मांड के अंदर अनंता अनंत गैलेक्सी घूम रही हैं। हर गैलेक्सी के अंदर अनंता अनंत सौर मंडल यानि कि ब्रह्मांड (Solar System) घूम रहे हैं। परम परम महा शिव-शक्ति आकारी रूप में रहकर परम परम महा ब्रह्मांड को चलाते हैं। परम परम महा ब्रह्मांड को नियंत्रित करने के लिये 108, 16000, 9 लाख परम परम परम शक्तियाँ बनाई गई थी। 108 परम परम महाशक्तियाँ G1 के सृजन कर्ता के बहुत करीब स्थित रहती हैं। 16000 परम परम महाशक्ति और 9 लाख परम परम महाशक्तियाँ रक्षा करने के लिये बाहरी परतों में विद्यमान हैं। 9 लाख परम परम महाशक्तियों के घेरे के बाद लगभग 6 और परतें है। पहली तीन सुरक्षा परतों के बाद परम परम महा विष्णु, परम परम महा ब्रह्मा और परम परम महा इन्द्र के घेरे हैं। पहले तीन घेरे G1 की रचनाओं के निवास करने के लिये होते हैं। बाहरी तीन परतें (4,5,6) बाहर के यूनिवर्स से आने वाली आत्माओं के लिये होती हैं।

G1 में किसी भी समस्या को सबसे पहले परम परम महा ब्रह्मा के सामने रखा जाता है। यदि उसका हल नहीं मिलता तो उसका समाधान करने को परम परम महा विष्णु को कहा जाता है। यदि फिर भी समस्या का हल नहीं निकलता, तो उसे 9 लाख परम परम महाशक्तियों को भेजा जाता है। इसके बाद, इसे 16000 परम परम महाशक्तियों को दिया जाता है। अंत में इसे 108 परम परम महा शक्तियों के समक्ष भेजा जाता है। लगभग कोई भी समस्या कभी भी G1 के मालिक (परम परम महा शिव) तक नहीं पहुँचती है।

ग्रेट यूनिवर्स के वातावरण में 80% आकाश तत्व, 10% वायु तत्व और 10% अग्नि तत्व होते हैं। खरबों आकाशगंगायें एक यूनिवर्स के अंदर घूमती हैं। खरबों सौरमंडल एक आकाशगंगा के अंदर परिक्रमा कर रहे हैं और वहाँ पृथ्वी जैसे कई ग्रह मौजूद हैं। ऐसे अनंता अनंत G1 एक मल्टीवर्स के अंदर हैं।

ग्रेट ग्रेट यूनिवर्स (G2) – Great Great Universe

G2 अर्थात परम परम परम महा ब्रह्मांड। G2, G1 के ऊपर की परत में स्थित है। इसलिये इसे G2 कहते हैं। G2 की अनंता अनंत संख्या है जो हमारे मल्टीवर्स के अंदर घूम रहे हैं। हमारे इस मल्टीवर्स का सोलर सिस्टम (सौर मंडल) बहुत खास है क्योंकि हमारा G2 इस मल्टीवर्स के सेंटर पॉइंट में है। प्रत्येक G2 के अंदर G1 के अंदर अनंता अनंत ब्रह्मांड घूम रहे हैं। G2 के मालिक ने G1 बनाये हैं। अनंत संख्या में यूनिवर्स प्रत्येक G1 के अंदर घूम रहे हैं। अनंत संख्या में आकाशगंगायें प्रत्येक यूनिवर्स के अंदर परिक्रमा कर रही हैं और अनंत संख्या में सौर मंडल प्रत्येक आकाशगंगा के अंदर घूम रहे हैं। सबके सेंटर(परमधाम) में उसके रचयिता की पावर (गुरुत्वाकर्षण-Gravity) से सब सेंटर के राउंड में चक्कर लगाते हैं।

21 पीढ़ी (2101 कला) वाले के मालिक ने अपने निराकारी रूप में से एक निराकार रूप निकाल कर G2 (परम परम परम महा ब्रह्मांड) के सेंटर पॉइंट में बेहिसाब समय पहले भेजा। बेहद के PM के निर्देश के अनुसार 21 पीढ़ी के रचनाकार इस मल्टीवर्स की सभी जानकारी एकत्र करने के लिये G2 में आये। कई रूप निकाल कर G2 से G1 में भेजे गये, G1 से यूनिवर्स में, यूनिवर्स से गैलेक्सियों में भेजे गये। सारी जानकारी बेहद के PM के द्वारा ऑलमाइटी अथॉरिटी को भेजी गई। हमारा G2 बहुत ही विशेष है। इसलिये हमारे G2 के केंद्र में जबरदस्त शक्ति (परम लाइट) विद्यमान है, लेकिन इस शक्ति का केवल एक छोटा सा अंश बाहर आता है, शेष शक्ति को उसके चारों ओर अवरोध बनाकर केंद्र में छिपा कर रखा गया है। मल्टीवर्स की पूरी रचना इस G2 के केंद्र में घूमती है। परिक्रमण की क्रिया परम प्रकाश की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण होती है लेकिन केवल बहुत कम शक्ति के साथ जो हमारे G2 के सर्वोच्च निवास के बाहर फैलती है। इस G2 में - 2 करोड़ और 2 करोड़ से अधिक कुछ अतिरिक्त शक्ति का सृजन किया गया था। ये शक्तियाँ फिर G2 से G1 में भेजी गयी। इस मल्टीवर्स की विस्तृत जानकारी इकट्ठा करने के लिये G1 से यूनिवर्स और यूनिवर्स से लेकर फिर सभी आकाशगंगाओं तक शक्तियों

को भेजा गया। शक्तियों द्वारा एकत्र की गई जानकारी, 21 पीढ़ी के रचयिता को भेजी गई थी, तब उन्होनें सभी सूचनायें बेहद के PM के पास भेज दी थीं।

हमारे G2 का केंद्र एक परत से घिरा हुआ है जहाँ आत्माओं का सुरक्षा समूह मौजूद है और इस परत में 100% परम तत्व हैं। अन्य G2 की तरह हमारे G2 के वातावरण में 0.01% परम प्रकाश, 1.5% परम तत्व और 98.5% तीन तत्व हैं। अन्य G2 की तरह, इसमें भी 6 से 7 परतें होती हैं, जहाँ परम परम परम महाशक्तियाँ निवास करती हैं और G2 की संपूर्ण रचनाओं को नियंत्रित करती हैं। मल्टीवर्स में G2 की कुल 300 परतें मौजूद हैं, प्रत्येक G2 के अंदर G1 की अनंत सँख्या केंद्र के चारों ओर घूमती है। यह हमारे G2 और अन्य G2 के संचालन का प्रबंधन और बनावट है।

ग्रेट ग्रेट ग्रेट यूनिवर्स (G3) – Great Great Great Universe

ग्रेट ग्रेट ग्रेट यूनिवर्स यानि परम परम परम परम महा ब्रह्मांड। इसका रचयिता परम परम परम परम महा शिव हैं। G2 के रचनाकारों का रचयिता और G3 का मालिक परम परम परम परम महा शिव है। G3 के अंदर अनंता अनंत G2 के ब्रह्मांड घूम रहे हैं। G3 का रचयिता अपने ब्रह्मांड के केंद्र में परम प्रकाश स्वरुप अर्थात निराकार रूप में रहता है। केंद्र के आसपास, G3 का रचयिता अपने आकारी रूप में अपनी शक्तियों के साथ रहता है। उसकी बाहर की परत में 108 शक्तियों वाले की लेयर है। रचयिता केंद्र में रहते हैं और उनके चारों तरफ 6-7 परत यानि लेयर की सुरक्षा कवच है फिर रचना रहती है। पहले की परतों में 108, 16000, 9 लाख और 2 करोड़ परम परम परम परम महा शक्तियाँ रहती हैं उसके बाद की लेयर में परम परम परम परम महा ब्रह्मा, महा विष्णु और महा इन्द्र रहते हैं, ये सब सुरक्षा लेयर हैं। ये परम परम परम परम महा शक्तियाँ G3 का ध्यान रखती हैं और G3 को चलाती हैं। सुरक्षा लेयर के बाद और 6 लेयर हैं ये सब यात्रा करने वाली यानि घूमने फिरने वाली आत्माओं के लिये हैं, अंदर की तीन लेयर G3 की रचनाओं के लिये हैं और बाहर की तीन लेयर दूसरे ब्रह्मांडों से आनेवाले यात्रियों के लिये हैं। जो आत्मायें दूसरे G1 या G2 से घूमने आती हैं वो सब बाहर के तीन घेरे में विश्राम करती हैं। 108, 16000, 9 लाख, 2 करोड़ परम परम परम परम महा शक्तियों को G3 की सृष्टि के बारे में पूरा ज्ञान है, G2 की किसी भी समस्या का समाधान शक्तियों के पास रहता है। ये शक्तियाँ G3 सृष्टि की प्रशासक और प्रबंधक हैं। ऐसे ही व्यवस्था G1 से

G17 तक सभी ब्रह्मांडों में है। अनंता अनंत G2 यूनिवर्स G3 के अंदर घूम रहे हैं। ऐसे ही असंख्य G1 यूनिवर्स G2 के अंदर घूम रहे हैं। अनगिनत यूनिवर्स G1 यानि ग्रेट यूनिवर्स के अंदर घूम रहे हैं। आकाश गंगा जैसे असंख्य गैलेक्सी एक यूनिवर्स के अंदर घूम रही हैं। असंख्य ब्रह्मांड एक गैलेक्सी के अंदर घूम रहे हैं। सबसे निचली लेयर में ब्रह्मांड है यानि G1, G2, G3 सभी के नीचे ब्रह्मांड हैं जिसमे पाँच तत्वों की सृष्टि है।

G3 के वायुमंडल में 0.02% परम प्रकाश, 2.5% परम तत्व, और लगभग 97.5% तत्व है। यहाँ तत्व का मतलब तीन तत्व वायु, अग्नि और आकाश है। तीन तत्व का विश्लेषण करें तो G3 में 80% आकाश तत्व, 10% वायु तत्व और 10% अग्नि तत्व हैं। लेकिन G3 के केंद्र के आस पास जो सुरक्षा लेयर है उसमे 100% परम तत्व हैं। हमारे मल्टीवर्स के अंदर G3 यूनिवर्स की 200 लेयर हैं और जिसमें असंख्य G3 हर लेयर में घूम रहे हैं। हर G3 के अंदर यूनिवर्स, गैलेक्सी, ब्रह्मांड हैं और सब एक-दूसरे से अलग-अलग हैं। यानि यूनिवर्स, गैलेक्सी, ब्रह्मांड की बनावट अलग-अलग है। इन सब सृष्टियों का सृजन और विसृजन हो रहा है यानी कोई भी सृष्टि G3 के अंदर स्थायी नहीं है। यहाँ तक कि G17 तक का यूनिवर्स और मल्टीवर्स भी स्थायी नहीं है उनमे भी सृजन-विसर्जन न हो रहा है। सृजन विसर्जन यानि सृष्टि के प्रलय का चक्र चल रहा है। सृजन-विसर्जन का समय चक्र यानि काल चक्र सभी में अलग-अलग है, जैसे कि ये समय चक्र सबसे ज्यादा मल्टीवर्स में है और सबसे कम ब्रह्मांड (Solar System) में है। यानि एक सृजन विसर्जन अंतराल की समय सीमा ब्रह्मांड में सबसे कम है और ये एक आनुपातिक रूप से बढ़ती जाती है। यानि ये समय सीमा गैलेक्सी में ब्रह्मांड से ज्यादा है और यूनिवर्स में गैलेक्सी से ज्यादा है इसी तरह G3 के सृजन-विसर्जन का समय चक्र G2 से ज्यादा है और G2 के G1 से ज्यादा है। समय का मापदंड हर सृष्टि में अलग-अलग है। जो समय हम धरती पर देखते हैं, गैलेक्सी के समय की तुलना में वो बहुत ही कम है, लगभग न के बराबर है यानि G1, G2, G3 की तुलना में हमारी धरती का समय एक पहाड़ के सामने एक राई के दाने से भी कम है।

ग्रेट ग्रेट ग्रेट ग्रेट यूनिवर्स (G4) – Great Great Great Great Universe

जैसे ही यूनिवर्स से पहले चार बार ग्रेट लग जाता तो वो G4 है। G4 का रचयिता यानि मालिक परम परम परम परम परम महा शिव है। एक G4 के अंदर असँख्य G3 यूनिवर्स घूम रहे हैं। G4 के मालिक यानि सृष्टिकर्ता, G4 के केंद्र में परम प्रकाश के स्वरूप में रहते हैं जिसको निराकार कहा जाता है। केंद्र में निराकारी रचयिता के आस-पास चारों तरफ एक बहुत ही सूक्ष्म लेयर है जिसमे आकारी रचयिता और उनकी शक्ति रहते हैं। इस लेयर के बाहर एक के बाद एक सुरक्षा लेयर रहता है, रचयिता के सबसे नजदीक पहले सुरक्षा लेयर में 108 परम परम परम परम परम महा शक्तियाँ (5 बार परम महा शक्तियाँ) रहती हैं इसके बाद के लेयर में क्रम अनुसार 16000, 9 लाख फिर 2 करोड़ (5 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं। परम महा शक्तियों की सुरक्षा लेयर के बाहर (5 बार) परम महा विष्णु, परम महा ब्रह्मा की लेयर होती है। G4 के वायुमंडल में 0.06% परम प्रकाश, 6% परम तत्व और 94% तत्व रहते हैं। तत्व यानि 80% आकाश, 10% वायु और 10% अग्नि। सुरक्षा लेयर जहाँ (5 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं वहाँ का वायुमंडल 100% परम तत्व का है। परम प्रकाश और परम तत्व की मात्रा और गुणवत्ता धीरे-धीरे केंद्र से बाहर की ओर कम होती जाती है। जिस लेयर में (5 बार) परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा रहते हैं वहाँ 50% परम तत्व और 50% तत्व हैं। यानि तत्व की ऊर्जा केंद्र से बाहर की लेयर में क्रमशः कम होती जाती है। मल्टीवर्स के अंदर G4 की 200 लेयर हैं और हर लेयर में अनगिनत G4 घूम रहे हैं।

ग्रेट ग्रेट ग्रेट ग्रेट ग्रेट यूनिवर्स (G5) – Great Great Great Great Great Universe

यूनिवर्स से पहले पाँच बार ग्रेट लगाने से G5 यूनिवर्स है। G5 का रचयिता (6 बार) परम महा शिव है। G5 के अंदर अनंता अनंत G4 यूनिवर्स उनके रचयिता के चारों तरफ घूम रहे हैं। G5 के मालिक G5 यूनिवर्स के केंद्र में परम प्रकाश के स्वरूप में रहते हैं जिसको निराकारी कहते हैं। रचयिता की शक्ति का परम प्रकाश की कला से अंदाजा लगाया जाता है। G1 से लेकर G17 तक सारे रचयिता के परम प्रकाश की कला का सटीक आंकलन नहीं है। हमारा मल्टीवर्स मूल रूप से 100 कला के

परम प्रकाश से बनाया गया था। G1 से G17 यूनिवर्स का सृजन मल्टीवर्स के अंदर विभिन्न चरणों में हुआ था यानि जैसे-जैसे मूल मल्टीवर्स में सृष्टि की रचना होती गयी, G17 से लेकर G1 तक समय के विभिन्न चरणों में बनते गये और साथ ही साथ रचयिता की सृजन करने की शक्ति यानि कला कम होती गई। अलग-अलग यूनिवर्स अलग-अलग कला में हैं। सृजन करने की शक्ति यानि कला। जिस यूनिवर्स का सृजन 60 कला में हुआ वो 60 कला का है ऐसे ही G17 से G1 यूनिवर्स की कला 60 से लेकर 40 कला की है। G1 से लेकर G17 तक कला बढ़ती रहती है। G1 से G17 यूनिवर्स बहुत समय पहले बनाये गये थे और उनके मालिक भी बहुत सृजन करने में लग गये इसलिये आज उनके रचयिता की शक्ति यानि कला कम हो गई है। निराकार रचयिता को परम ब्रह्म परमेश्वर कहते हैं। जैसे-जैसे रचयिता की कला यानि शक्ति क्षीण हो जाती है तो उसकी सृष्टि में परम तत्व की गुणवत्ता भी घट जाती है और स्थूल तत्वों का परिमाण बढ़ जाता है। G5 के वायुमंडल में 0.1% परम प्रकाश, 10% परम तत्व, 90% तत्व हैं। तत्व यानि 80% आकाश, 10% वायु और 10% अग्नि तत्व। हमारे मल्टीवर्स में 300 लेयर में G5 घूम रहे हैं। G5 के निराकारी रचयिता के चारों तरफ भी सुरक्षा लेयर है, जैसे बाकी G1 से G4 में बताया गया है। रचयिता के आस-पास की सुरक्षा लेयर में 108, 16000, 9 लाख और 2 करोड़ (6 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं वहाँ के वायुमंडल में 100% परम तत्व हैं। (6 बार) परम महा शक्तियाँ G5 के सृष्टि का परिचालन और नियंत्रण करती हैं यानि G5 की प्रशासन व्यवस्था परम महा शक्तियों द्वारा संचालित होती है। (6 बार) परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा G5 के सृष्टि परिचालन में (6 बार) परम महा शक्तियों की सहायता करते हैं। G5 में सुरक्षा लेयर के बाहर 6 लेयर हैं जैसे G1 से G4 में हैं। G1 से G17 तक यूनिवर्स की बनावट एक जैसी है।

G6 यूनिवर्स :

G6 यूनिवर्स का रचयिता (7 बार) परम महा शिव है। अनंता अनंत G5 यूनिवर्स G6 के अंदर घूम रहे हैं। G6 के मालिक G6 के केंद्र में परम प्रकाश के स्वरूप में रहते हैं जिसको निराकारी कहा जाता है। निराकारी के चारों तरफ एक सूक्ष्म लेयर हैं जिसमे G6 के रचयिता और उनकी शक्ति आकारी रूप में रहते हैं। उसकें बाद की लेयर में 108, 16000, 9 लाख, 2 करोड़, और 33 करोड़ (7 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं जो G6 की देख भाल करती हैं और G6 का प्रशासन

उनके हाथों में है। उसकें बाद की लेयर में (7 बार) परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा रहते हैं और वो परम महा शक्तियों की G6 यूनिवर्स के संचालन में सहायता करते हैं। परम महा शक्तियाँ जिस लेयर में रहती हैं वहाँ के वायुमंडल में 1% से कम परम प्रकाश और 100% परम तत्व हैं। सुरक्षा लेयर के बाद 6 और लेयर हैं। अंदर की 3 लेयर में G6 से आने वाला कोई भी यात्री यानि घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं और बाहर की 3 लेयर में बाहर के यात्री यानि G6 के अलावा और किसी भी यूनिवर्स की घूमने-फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं। G6 के वायुमंडल में 0.12% परम प्रकाश, 12% परम तत्व और 88% तत्व हैं। तत्व यानि 80% आकाश, 10% वायु और 10% अग्नि तत्व। हमारे मल्टीवर्स के अंदर G6 की 600 लेयर हैं और G6 की लेयर G5 के ऊपर है। हर लेयर में अनंता अनंत G6 घूम रहें हैं।

G7 यूनिवर्स :

G7 यूनिवर्स का रचयिता यानि मालिक (8 बार) परम महा शिव है, अनंता अनंत G6 यूनिवर्स G7 के अंदर घूम रहे हैं। G7 के मालिक G7 के केंद्र में परम प्रकाश के स्वरूप में रहते हैं जिसको निराकारी कहा जाता है। निराकारी के चारों तरफ एक सूक्ष्म लेयर है जिसमे G7 की रचयिता और उनकी शक्ति आकारी रूप में रहते हैं। उसके बाद की लेयर में 108, 16000, 9 लाख, 2 करोड़, और 33 करोड़ (8 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं जो G7 की देख भाल करती हैं और G7 का प्रशासन करती हैं। उसके बाद की लेयर में (8 बार) परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा रहते हैं और वो परम महा शक्तियों को G7 यूनिवर्स के संचालन में सहायता करते हैं। परम महा शक्तियाँ जिस लेयर में रहती हैं वहाँ के वायुमंडल में 1% से कम परम प्रकाश और 100% परम तत्व हैं। सुरक्षा लेयर के बाद 6 और लेयर हैं, अंदर की 3 लेयर में G7 से आने वाले कोई भी यात्री यानि घूमने फिरने-वाली आत्मायें विश्राम करती हैं और बाहर की 3 लेयर में बाहर के यात्री यानि G7 के अलावा और किसी भी यूनिवर्स की आत्मायें विश्राम करती हैं। G7 के वायुमंडल में 0.19% परम प्रकाश, 19% परम तत्व और 81% तत्व हैं। तत्व यानि 80% आकाश, 10% वायु और 10% अग्नि तत्व। हमारे मल्टीवर्स के अंदर G7 की 700 लेयर हैं और G7 की लेयर G6 के ऊपर हैं। हर लेयर में अनंता अनंत G7 घूम रहें हैं।

G8 यूनिवर्स :

G8 यूनिवर्स का रचयिता यानि मालिक (9 बार) परम महा शिव है, अनंता अनंत G7 यूनिवर्स G8 के अंदर घूम रहे हैं। G8 के मालिक G8 के केंद्र में परम प्रकाश के स्वरूप में रहते हैं जिसको निराकारी कहा जाता है। निराकारी के चारों तरफ एक सूक्ष्म लेयर है जिसमे G8 का रचयिता और उनकी शक्ति आकारी रूप में रहते हैं। उसके बाद की लेयर में 108, 16000, 9 लाख, 2 करोड़, और 33 करोड़ (9 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं जो G8 की देख भाल करती हैं और G8 का प्रशासन उनके हाथों में है। उसके बाद की लेयर में (9 बार) परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा रहते हैं और वो परम महा शक्तियों की G8 के संचालन में सहायता करते हैं। परम महा शक्तियाँ जिस लेयर में रहती हैं वहाँ के वायुमंडल में 1% से कम परम प्रकाश और 100% परम तत्व हैं। सुरक्षा लेयर के बाद 6 और लेयर हैं, अंदर की 3 लेयर में G8 से आने वाले कोई भी यात्री यानि घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं और बाहर की 3 लेयर में बाहर के यात्री यानि G8 के अलावा और किसी भी यूनिवर्स की घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं। G8 के वायुमंडल में 0.2% परम प्रकाश, 20% परम तत्व और 80% तत्व हैं। तत्व यानि 80% आकाश, 10% वायु और 10% अग्नि तत्व। हमारे मल्टीवर्स के अंदर G8 की 700 लेयर हैं और G8 की लेयर G7 के ऊपर है। हर लेयर में अनंता अनंत G8 घूम रहें हैं।

G9 यूनिवर्स :

G9 यूनिवर्स का रचयिता यानि मालिक (10 बार) परम महा शिव है, अनंता अनंत G8 यूनिवर्स G9 के अंदर घूम रहे हैं। G9 के मालिक G9 के केंद्र में परम प्रकाश के स्वरूप में रहते हैं जिसको निराकारी कहा जाता है। निराकारी के चारों तरफ एक सूक्ष्म लेयर है जिसमे G9 का रचयिता और उनकी शक्ति आकारी रूप में रहते हैं। उसके बाद की लेयर में 108, 16000, 9 लाख, 2 करोड़, और 33 करोड़ (10 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं जो G9 की देख भाल करती हैं और G9 का प्रशासन उनके हाथों में है। उसके बाद की लेयर में (10 बार) परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा रहते हैं और वो परम महा शक्तियों की G9 के संचालन में सहायता करते हैं। परम महा शक्तियाँ जिस लेयर में रहती हैं वहाँ के वायुमंडल में 1% से कम परम प्रकाश और 100% परम तत्व हैं । जैसे हम केंद्र से बाहर की ओर जायेंगे तो

परम तत्वों की मात्रा और गुणवत्ता कम हो जाती है यानि सुरक्षा लेयर से बाहर की ओर जायेंगे जहाँ (10 बार) परम महा विष्णु और (10 बार) परम महा ब्रह्मा रहते हैं वहाँ परम तत्वों की मात्रा कम हो जाती है। इसके बाद 6 और लेयर हैं, अंदर की 3 लेयर में G9 से आनेवाले यात्री यानि घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं और बाहर की 3 लेयर में बाहर के यूनिवर्स के यात्री यानि G9 के अलवा और किसी भी यूनिवर्स की आत्मायें विश्राम करती हैं। मल्टीवर्स के अंदर G8 की 700 लेयर के ऊपर G9 की 2000 लेयर हैं और हर लेयर में अनंता अनंत G9 घूम रहे हैं। G9 की संख्या इतनी ज्यादा है कि इनमे परम प्रकाश और परम तत्वों की मात्रा अलग-अलग है। एक G9 से दूसरे G9 के वायुमंडल में परम प्रकाश और परम तत्वों की मात्रा अलग-अलग है। G9 के वायुमंडल में परम प्रकाश 0.2% से लेकर 0.25% तक है , परम तत्व 20% से लेकर 25% तक है और तत्व 80% से लेकर 75% तक हैं। तत्व यानि 80% आकाश, 10% वायु और 10% अग्नि तत्व।

G10 यूनिवर्स :

G10 यूनिवर्स का रचयिता (11 बार) परम महा शिव है, अनंता अनंत G9 यूनिवर्स G10 के अंदर घूम रहे हैं। G10 के मालिक G10 के केंद्र में परम प्रकाश के स्वरूप में रहते हैं जिसको निराकारी कहा जाता है। निराकारी के चारों तरफ एक सूक्ष्म लेयर है जिसमे G10 का रचयिता और उनकी शक्ति आकारी रूप में रहते हैं। उसके बाद की लेयर में 108, 16000, 9 लाख, 2 करोड़, और 33 करोड़ (11 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं जो G10 की देख भाल करती हैं और G10 का प्रशासन उनके हाथों में है। उसके बाद की लेयर में (11 बार) परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा रहते हैं और वो परम महा शक्तियों को G10 के संचालन में सहायता करते हैं। परम महा शक्तियाँ जिस लेयर में रहती हैं वहाँ के वायुमंडल में 1% से कम परम प्रकाश और 100% परम तत्व हैं। जैसे हम केंद्र से बाहर की ओर जायेंगे तो परम तत्वों की मात्रा और गुणवत्ता कम हो जाती है यानि अगर सुरक्षा लेयर से बाहर की ओर जायेंगे जहाँ (11 बार) परम महा विष्णु और (11 बार) परम महा ब्रह्मा रहते हैं तो वहाँ परम तत्वों की मात्रा कम हो जाती है। इसके बाद 6 और लेयर हैं, अंदर की 3 लेयर में G10 से आनेवाले कोई भी यात्री यानि घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं और बाहर की 3 लेयर में बाहर के यूनिवर्स के यात्री यानि G10 के अलावा और किसी भी यूनिवर्स की घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं।

मल्टीवर्स के अंदर G9 लेयर के ऊपर G10 की 2000 लेयर हैं और हर लेयर में अनंता अनंत G10 घूम रहे हैं। G10 की संख्या इतनी ज्यादा है कि इनमे परम प्रकाश और परम तत्व की मात्रा अलग- अलग है। एक G10 से दूसरे G10 के वायुमंडल में परम प्रकाश और परम तत्वों की मात्रा अलग-अलग है। G10 के वायुमंडल में परम प्रकाश 0.25% से लेकर 0.30% तक है, परम तत्व 25% से लेकर 30% तक है और तत्व 75% से लेकर 70% तक हैं। तत्व यानि 80% आकाश, 10% वायु और 10% अग्नि तत्व।

G11 यूनिवर्स :

G11 यूनिवर्स का रचयिता (12 बार) परम महा शिव है, अनंता अनंत G10 यूनिवर्स G11 के अंदर घूम रहे हैं। G11 के मालिक G11 के केंद्र में परम प्रकाश के स्वरूप में रहते हैं जिसको निराकारी कहा जाता है। निराकारी के चारों तरफ एक सूक्ष्म लेयर है जिसमे G11 के रचयिता और उनकी शक्ति आकारी रूप में रहते हैं। उसके बाद की लेयर में 108,16000, 9 लाख, 2 करोड़, और 33 करोड़ (12 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं जो G11 की देखभाल करती हैं और G11 का प्रशासन उनके हाथों में है। उसके बाद की लेयर में (12 बार) परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा रहते हैं और वो G11 के संचालन में परम महा शक्तियों की सहायता करते हैं। जिस लेयर में (12 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं उसको सुरक्षा लेयर कहते हैं, वहाँ के वायुमंडल में 1% परम प्रकाश और 99% परम तत्व हैं। परम महा शक्ति को परम महा प्रकृति भी कहा जाता है। जैसे हम केंद्र से बाहर की ओर जायेंगे तो परम तत्वों की मात्रा और गुणवत्ता कम हो जाती है यानि सुरक्षा लेयर से बाहर की ओर जहाँ (12 बार) परम महा विष्णु और (12 बार) परम महा ब्रह्मा रहते है वहाँ परम तत्वों की मात्रा कम हो जाती है। इसके बाद 6 और लेयर हैं, अंदर की 3 लेयर में G11 के कोई भी यात्री यानि घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं और बाहर की 3 लेयर में बाहर के यूनिवर्स के यात्री यानि G11 के अलावा और किसी भी यूनिवर्स की घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं।

एक गैलेक्सी के अंदर अनंता अनंत ब्रह्मांड (Solar system) घूम रहे हैं, एक यूनिवर्स के अंदर अनंता अनंत गैलेक्सी घूम रही हैं, एक ग्रेट यूनिवर्स यानि G1 के अंदर अनंता अनंत यूनिवर्स घूम रहे हैं, एक G2 के अंदर अनंता अनंत G1 घूम रहे हैं, एक G3 के अंदर अनंता अनंत G2 घूम रहे हैं ऐसे ही जब हम और भी ऊपर की

सृष्टि में जायेंगे तो अनंता अनंत G10 एक G11 के अंदर घूम रहे हैं। यानि यहाँ हम जिस सृष्टि या रचना की बात कर रहे हैं वो बहुत ऊपर की है उसके सामने हमारा ब्रह्मांड एक राई के दाने से भी छोटा है। मल्टीवर्स के अंदर G10 लेयर के ऊपर G11 की 3000 लेयर हैं और हर लेयर में अनंता अनंत G11 घूम रहे हैं। G11 की संख्या इतनी ज्यादा है कि इनमे परम प्रकाश और परम तत्व की मात्रा अलग-अलग है। एक G11 से दूसरे G11 के वायुमंडल में परम प्रकाश और परम तत्व की मात्रा अलग-अलग है। G11 के वायुमंडल में परम प्रकाश 0.3% से लेकर 0.35% तक है, परम तत्व 31% से लेकर 35% तक है और तत्व 69% से लेकर 65% तक है। तत्व यानि 80% आकाश, 10% वायु और 10% अग्नि तत्व। G11 के रचयिता की परम प्रकाश की मूल शक्ति या पावर कितने कला की है वो बताना मुमकिन नहीं है क्योंकि 100 कला के मल्टीवर्स में रचना का आरंभ तभी हुआ जब पावर 100 कला से कम होती गयी। जैसे-जैसे रचना यानि सृष्टि बढ़ती गयी कला घटती गयी। G17 से लेकर G1 तक यूनिवर्स अलग- अलग समय में अलग-अलग पड़ाव में हुआ है। जब मल्टीवर्स की कला 100 कला से नीचे आ गयी थी, तो किस पड़ाव और समय में G11 बना था वो आकलन करना कठिन है इसलिये G11 का मालिक कितनी कला के परम प्रकाश वाला है वो बताना कठिन है।

G12 यूनिवर्स :

G12 यूनिवर्स का रचयिता (13 बार) परम महा शिव है, अनंता अनंत G11 यूनिवर्स G12 के अंदर घूम रहे हैं। G12 के मालिक G12 के केंद्र में परम प्रकाश के स्वरूप में रहते हैं जिसको निराकारी कहा जाता है। निराकारी के चारों तरफ एक सूक्ष्म लेयर है जिसमे G12 का रचयिता और उनकी शक्ति आकारी रूप में रहते हैं। उसके बाद की लेयर में 108, 16000, 9 लाख, 2 करोड़, और 33 करोड़ (13 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं जो G12 की देख भाल करती हैं और G12 की प्रशासन व्यवस्था उनके हाथों में है। उसके बाद की लेयर में (13 बार) परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा रहते हैं और वो परम महा शक्तियों को G12 के संचालन में सहायता करते हैं । परम महा शक्तियाँ जिस लेयर में रहती हैं वहाँ के वायुमंडल में 1% परम प्रकाश और 99% परम तत्व हैं। जैसे हम केंद्र से बाहर की ओर जायेंगे तो परम तत्वों की मात्रा और गुणवत्ता कम हो जाती है यानी सुरक्षा लेयर से बाहर की ओर जायेंगे जहाँ (13 बार) परम महा विष्णु और (13 बार) परम महा ब्रह्मा रहते हैं वहाँ

परम तत्व की मात्रा कम हो जाती है। इसके बाद 6 और लेयर हैं। अंदर की 3 लेयर में G12 से आने वाले कोई भी यात्री यानी घूमने-फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं और बाहर की 3 लेयर में बाहर की यूनिवर्स के यात्री यानि G12 के अलावा और किसी भी यूनिवर्स की घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं। मल्टीवर्स के अंदर G11 लेयर के ऊपर G12 की 3000 लेयर हैं और हर लेयर में अनंता अनंत G12 घूम रहे हैं। G12 की संख्या इतनी ज्यादा है कि इनमें परम प्रकाश और परम तत्वों की मात्रा अलग- अलग है। एक G12 से दूसरे G12 के वायुमंडल में परम प्रकाश और परम तत्व की मात्रा अलग-अलग होती है। G12 के वायुमंडल में परम प्रकाश 0.36% से लेकर 0.40% तक है, परम तत्व 36% से लेकर 40% तक हैं और तत्व 64% से लेकर 60% तक हैं। तत्व यानि 80% आकाश, 10% वायु और 10% अग्नि तत्व।

G13 यूनिवर्स :

G13 यूनिवर्स का रचयिता (14 बार) परम महा शिव है, अनंता अनंत G12 यूनिवर्स G13 के अंदर घूम रहे हैं। G13 के मालिक G13 के केंद्र में परम प्रकाश के स्वरूप में रहते हैं जिसको निराकारी कहा जाता है। निराकारी के चारों तरफ एक सूक्ष्म लेयर है जिसमे G13 के रचयिता और उनकी शक्ति आकारी रूप में रहते हैं। उसके बाद की लेयर में 108, 16000, 9 लाख, 2 करोड़, और 33 करोड़ (14 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं जो G13 की देखभाल करती हैं और G13 का प्रशासन उनके हाथों में है। उसके बाद की लेयर में (14 बार) परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा रहते हैं और वो परम महा शक्तियों की G13 चलाने में सहायता करते हैं। परम महा शक्तियाँ जिस लेयर में रहती हैं वहाँ के वायुमंडल में 1% परम प्रकाश और 99% परम तत्व हैं। जैसे हम केंद्र से बाहर की ओर जायेंगे तो परम तत्व की मात्रा और गुणवत्ता कम हो जाती है यानी सुरक्षा लेयर से बाहर की ओर जायेंगे जहाँ (14 बार) परम महा विष्णु और (14 बार) परम महा ब्रह्मा रहते हैं वहाँ परम तत्वों की मात्रा कम हो जाती है। इसके बाद 6 और लेयर हैं, अंदर की 3 लेयर में G13 से आने वाला कोई भी यात्री यानी घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं बाहर की 3 लेयर के बाहर के यूनिवर्स के यात्री यानि G13 के अलावा और किसी भी यूनिवर्स की घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं। मल्टीवर्स के अंदर G12 लेयर के ऊपर G13 की 4000 लेयर हैं और हर लेयर में अनंता अनंत G13 घूम रहे

हैं। G13 की संख्या इतनी ज्यादा है कि इनमें परम प्रकाश और परम तत्व की मात्रा अलग-अलग है। एक G13 से दूसरे G13 के वायुमंडल में परम प्रकाश और परम तत्वों की मात्रा अलग अलग है। G13 के वायुमंडल में परम प्रकाश 0.40% से लेकर 0.50% तक है, परम तत्व 40% से लेकर 50% तक हैं और तत्व 60% से लेकर 50% तक हैं। तत्व यानि 80% आकाश, 10% वायु और 10% अग्नि तत्व ।परम तत्व यानि 80% परम आकाश, 10% परम वायु और 10% परम अग्नि। इन तत्वों और परम तत्वों का अनुपात सभी यूनिवर्स में समान है।

G14 यूनिवर्स :

G14 यूनिवर्स का रचयिता (15 बार) परम महा शिव है, अनंता अनंत G13 यूनिवर्स G14 के अंदर घूम रहे हैं। G14 के मालिक G14 के केंद्र में परम प्रकाश के स्वरूप में रहते हैं जिसको निराकारी कहा जाता है। निराकारी के चारों तरफ एक सूक्ष्म लेयर है जिसमे G14 के रचयिता और उनकी शक्ति आकारी रूप में रहते हैं। उसके बाद की लेयर में 108, 16000, 9 लाख, 2 करोड़, और 33 करोड़ (15 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं जो G14 की देख भाल करती हैं और G14 का प्रशासन उनके हाथों में है। उसके बाद की लेयर में (15 बार) परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा रहते हैं और वो परम महा शक्तियों की G14 चलाने में सहायता करते हैं। परम महा शक्तियाँ जिस लेयर में रहती है वहाँ के वायुमंडल में 1% परम प्रकाश और 99% परम तत्व हैं । जैसे हम केंद्र से बाहर की ओर जायेंगे तो परम तत्व की मात्रा और गुणवत्ता कम हो जाती है यानि सुरक्षा लेयर से बाहर की ओर जायेंगे जहाँ (15 बार) परम महा विष्णु और (15 बार) परम महा ब्रह्मा रहते हैं वहाँ परम तत्व की मात्रा कम हो जाती है। (15 बार) परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा भी अनंता अनंत हैं यानि जितने G13 यूनिवर्स G14 के अंदर हैं इतने ही परम महा विष्णु और ब्रह्मा है। इसके बाद 6 और लेयर हैं, अंदर की 3 लेयर में G14 से आने वाला कोई भी यात्री यानि घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं और बाहर की 3 लेयर में बाहर के यूनिवर्स के यात्री यानि G14 के अलावा और किसी भी यूनिवर्स की घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं । मल्टीवर्स के अंदर G13 लेयर के ऊपर G14 की 3000 लेयर हैं और हर लेयर में अनंता अनंत G14 घूम रहे हैं। G14 की संख्या इतनी ज्यादा है कि इनमें परम प्रकाश और परम तत्व की मात्रा अलग-अलग है। एक G14 से दूसरे G14 के वायुमंडल में परम प्रकाश और परम तत्वों की

मात्रा अलग-अलग है। G14 के वायुमंडल में परम प्रकाश 0.50% से लेकर 0.60% तक है, परम तत्व 50% से लेकर 60% तक हैं और तत्व 50% से लेकर 40% तक हैं। तत्व यानि 80% आकाश, 10% वायु और 10% अग्नि तत्व। परम तत्व यानि 80% परम आकाश, 10% परम वायु और 10% परम अग्नि। इन तत्वों और परम तत्वों का अनुपात सभी यूनिवर्स में समान है।

G15 यूनिवर्स :

G15 यूनिवर्स का रचयिता (16 बार) परम महा शिव है, अनंता अनंत G14 यूनिवर्स G15 के अंदर घूम रहे हैं। G15 के मालिक G15 के केंद्र में परम प्रकाश के स्वरूप में रहते हैं जिसको निराकारी कहा जाता है। निराकारी के चारों तरफ एक सूक्ष्म लेयर है जिसमे G15 का रचयिता और उनकी शक्ति आकारी रूप में रहते हैं। उसके बाद की लेयर में 108, 16000, 9 लाख, 2 करोड़, और 33 करोड़ (16 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं जो G15 की देख भाल करती हैं और G15 का प्रशासन उनके हाथों में है। उसके बाद की लेयर में (16 बार) परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा रहते हैं और वो परम महा शक्तियों की G15 के संचालन में सहायता करते हैं। परम महा शक्तियाँ जिस लेयर में रहती हैं वहाँ के वायुमंडल में 1% परम प्रकाश और 99% परम तत्व हैं। जैसे हम केंद्र से बाहर की ओर जायेंगे तो परम तत्व की मात्रा और गुणवत्ता कम हो जाती है यानि सुरक्षा लेयर से बाहर की ओर जायेंगे जहाँ (16 बार) परम महा विष्णु और (16 बार) परम महा ब्रह्मा रहते हैं वहाँ परम तत्व की मात्रा कम हो जाती है। (16 बार) परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा भी अनंता अनंत हैं यानि जितने G14 यूनिवर्स G15 के अंदर हैं इतने ही परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा हैं। इसके बाद 6 और लेयर हैं, अंदर की 3 लेयर में G15 के कोई भी यात्री यानि घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं और बाहर की 3 लेयर में बाहर के यूनिवर्स के यात्री यानि G15 के अलावा और किसी भी यूनिवर्स की आत्मायें विश्राम करती हैं। मल्टीवर्स के अंदर G14 लेयर के ऊपर G15 की 2000 लेयर हैं और हर लेयर में अनंता अनंत G15 घूम रहे हैं। G15 की संख्या इतनी ज्यादा है कि इनमें परम प्रकाश और परम तत्वों की मात्रा अलग-अलग है। एक G15 से दूसरे G15 के वायुमंडल में परम प्रकाश और परम तत्वों की मात्रा अलग-अलग है। G15 के वायुमंडल में परम प्रकाश 0.61% से लेकर 0.69% तक है, परम तत्व 61% से लेकर 69% तक हैं और तत्व 39% से लेकर 31% तक हैं। तत्व

यानि 80% आकाश, 10% वायु और 10% अग्नि तत्व। परम तत्व यानि 80% परम आकाश, 10% परम वायु और 10% परम अग्नि। इन तत्वों और परम तत्वों का अनुपात सभी यूनिवर्स में समान है।

G16 यूनिवर्स :

G16 यूनिवर्स का रचयिता (17 बार) परम महा शिव है, अनंता अनंत G15 यूनिवर्स G16 के अंदर घूम रहे हैं। G16 के मालिक G16 के केंद्र में परम प्रकाश के स्वरूप में रहते हैं जिसको निराकारी कहा जाता है। निराकारी के चारों तरफ एक सूक्ष्म लेयर है जिसमे G16 के रचयिता और उनकी शक्ति आकारी रूप में रहते हैं। उसके बाद की लेयर में 108, 16000, 9 लाख, 2 करोड़, और 33 करोड़ (17 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं जो G16 की देख भाल करती हैं और G16 का प्रशासन व्यवस्था उनके हाथों में है। उसके बाद की लेयर में (17 बार) परम महाष्णु और परम महा ब्रह्मा रहते हैं और वो परम महा शक्तियों की G16 के संचालन में सहायता करते हैं। परम महा शक्तियाँ जिस लेयर में रहती हैं वहाँ के वायुमंडल में 1% परम प्रकाश और 99% परम तत्व हैं। पहले सुरक्षा लेयर है जिसमे (17 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं इनके बाद वाली लेयर में (17 बार) परम महा विष्णु रहते हैं। परम महा विष्णु के लेयर के बाद परम महा ब्रह्मा की लेयर हैं। (17 बार) परम महाविष्णु और परम महाब्रह्मा भी अनंता अनंत हैं यानि जितने G15 यूनिवर्स G16 के अंदर हैं इतने ही परम महा विष्णु और ब्रह्मा एक G16 में हैं। इसके बाद 6 और लेयर हैं, अंदर की 3 लेयर में G16 के कोई भी यात्री यानि घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं और बाहर की 3 लेयर में बाहर के यूनिवर्स के यात्री यानि G16 के अलावा और किसी भी यूनिवर्स की घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं। मल्टीवर्स के अंदर G15 लेयर के ऊपर G16 की 1000 लेयर हैं और हर लेयर में अनंता अनंत G16 घूम रहे हैं। G16 अनंता अनंत है, इनमे परम प्रकाश और परम तत्व की मात्रा अलग-अलग है। एक G16 से दूसरे G16 के वायुमंडल में परम प्रकाश और परम तत्व की मात्रा अलग-अलग है। G16 के वायुमंडल में परम प्रकाश 0.70% से लेकर 0.80% तक है, परम तत्व 70% से लेकर 80% तक हैं और तत्व 30% से लेकर 20% तक हैं। तत्व यानि 80% आकाश, 10% वायु और 10% अग्नि तत्व। परम तत्व यानि 80% परम आकाश, 10% परम वायु और 10% परम अग्नि। इन तत्वों और परम तत्वों का अनुपात सभी यूनिवर्स में समान है।

G17 यूनिवर्स :

G17 यूनिवर्स का रचयिता (18 बार) परम महा शिव है, अनंता अनंत G16 यूनिवर्स G17 के अंदर घूम रहे हैं। G17 के मालिक G17 के केंद्र में परम प्रकाश के स्वरूप में रहते हैं जिसको निराकारी कहा जाता है। निराकारी के चारों तरफ एक सूक्ष्म लेयर है जिसमे G17 का रचयिता और उनकी शक्ति आकारी रूप में रहते हैं। उसके बाद की लेयर में 108, 16000, 9 लाख, 2 करोड़, और 33 करोड़ (18 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं जो G17 की देख भाल करती हैं और G17 का प्रशासन उनके हाथों में है। उसके बाद की लेयर में (18 बार) परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा रहते हैं और वो परम महा शक्तियों को G17 के संचालन में सहायता करते हैं। परम महा शक्तियाँ जिस लेयर में रहती है वहाँ के वायुमंडल में 1% परम प्रकाश और 99% परम तत्व हैं। पहले सुरक्षा लेयर है जिसमे (18 बार) परम महा शक्तियाँ रहती हैं इनके बाद वाली लेयर में (18 बार) परम महा विष्णु रहते हैं। परम महा विष्णु लेयर के बाद परम महा ब्रह्मा की लेयर है। (18 बार) परम महा विष्णु और परम महा ब्रह्मा भी अनंता अनंत हैं यानि जितने G16 यूनिवर्स G17 के अंदर हैं इतने ही परम महा विष्णु और ब्रह्मा एक G17 में हैं। इसके बाद 6 और लेयर हैं, अंदर की 3 लेयर में G17 के कोई भी यात्री यानि घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं और बाहर की 3 लेयर में बाहर के यूनिवर्स के यात्री यानि G17 के अलावा और किसी भी यूनिवर्स की घूमने फिरने वाली आत्मायें विश्राम करती हैं। मल्टीवर्स के अंदर G16 लेयर के ऊपर G17 की 500 लेयर हैं और हर लेयर में अनंता अनंत G17 घूम रहे हैं। G17 अनंता अनंत हैं, इनमें परम प्रकाश और परम तत्वों की मात्रा अलग-अलग है। एक G17 से दूसरे G17 में वायुमंडल में परम प्रकाश और परम तत्वों की मात्रा अलग-अलग है। G17 के वायुमंडल में परम प्रकाश 0.80% से लेकर 0.85% तक है, परम तत्व 80% से लेकर 85% तक हैं और तत्व 20% से लेकर 15% तक हैं। तत्व यानि 80% आकाश, 10% वायु और 10% अग्नि तत्व। परम तत्व यानि 80% परम आकाश, 10% परम वायु और 10% परम अग्नि। इन तत्वों और परम तत्वों का अनुपात सभी यूनिवर्स में समान है।

13.

ब्रह्मांड का विसर्जन और ब्लैक होल

ब्लैक होल का वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण :

आधुनिक विज्ञान के अनुसार सम्पूर्ण विश्व का अस्तित्व एक संयोग मात्र है। वैज्ञानिकों की अवधारणा यह है कि यूनिवर्स स्वयं ही बनता और विकसित होता है और सारी खगोलीय घटनायें स्वतः ही होती रहती हैं। उदाहरण के लिये - वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाये तो सूर्य एक बहुत ही बड़ा परमाणु रिएक्टर है जो अपने केंद्र में प्रतिपल 50 करोड़ टन हाइड्रोजन के अणुओं को जोड़ कर हीलियम में बदल रहा है। इसी नाभिकीय अभिक्रिया (Nuclear Reaction) में असीमित ऊर्जा का जन्म होता है और इसी ऊर्जा से पूरे सौर मंडल को प्रकाश तथा ऊष्मा मिलती है। परमाणु अभिक्रियायें अत्यंत शक्तिशाली और विस्फोटक होती हैं लेकिन फिर भी सूर्य पर इस विस्फोटक गतिविधि का असर नहीं होता है। ऐसा इसीलिये है क्योंकि सूर्य के भीतर 2 तरह की विपरीत क्रियायें कार्य करती हैं -

1) गुरुत्वाकर्षण बल जो कि सूर्य के पूरे द्रव्यमान को केंद्र की ओर खींचता है।

2) परमाणु रिएक्शन की विस्फोटक शक्ति जो पूरे सूर्य को उड़ा सकती है।

चूँकि यह दोनों क्रियायें विपरीत दिशा में कार्य करती हैं इसलिये सूर्य सामान्य तरह से प्रकाशमान रहता है।

मगर बेहिसाब समय के पश्चात सूर्य का सारा हाइड्रोजन हीलियम में बदल जाता है, सूर्य के केंद्र में इतना अधिक दबाव होता है कि हीलियम का भी नाभिकीय संलयन (Nuclear Fusion) शुरू हो जाता है और सितारे के केंद्र में कार्बन का निर्माण शुरू हो जाता है। ऐसा करते-करते और भी भारी तत्वों का निर्माण होता जाता है। कार्बन के बाद नीऑन, ऑक्सीजन, सिलिकॉन और अंततः लौह तत्व का निर्माण होता जाता है। जैसे ही सितारे में लौह तत्व एक निश्चित सीमा से अधिक हो जाता है, वह ठंडा होने लगता है क्योंकि लौह के आगे की नाभिकीय अभिक्रियाओं के लायक दबाव सूर्य के भीतर भी नहीं होता। इसी कारण अंततः सूर्य के अंदर का

परमाणु रिएक्शन बंद हो जाता है। ऐसा होते ही गुरुत्वाकर्षण का दबाव भारी पड़ने लगता है और सूर्य का केंद्र स्वयं के ही गुरुत्वाकर्षण के अधीन हो कर स्वयं में ही ढह जाता है। गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र में एकाएक हलचल के कारण सितारे में एक बहुत ही विशालकाय और शक्तिशाली धमाका होता है जिसमे सितारे के बाह्य आवरण छिन्न भिन्न हो कर विराट अंतरिक्ष में फ़ैल जाते हैं। इस धमाके को सुपरनोवा या हाइपरनोवा कहा जाता है। सुपरनोवा के बाद सितारे का केवल केंद्र ही बचता है जिसका गुरुत्वाकर्षण बल मूल सितारे से लाखों गुना बढ़ जाता है। यह इतना शक्तिशाली होता है कि कोई भी वस्तु, यहाँ तक कि प्रकाश भी इससे बच नहीं सकता और इसी में समा जाता है। एक विशाल सितारा एक अणु से भी छोटे बिंदु में समा जाता है। इस बिंदु को सिंगुलरिटी कहा जाता है। सिंगुलरिटी (Singularity) विज्ञान जगत में अभी एक बहुत बड़ा प्रश्न है। यह वो क्षेत्र है जहाँ भौतिक विज्ञान के सभी ज्ञात नियम काम करना बंद कर देते हैं। यहाँ न तो समय है न ही अंतरिक्ष है। न ही कोई तत्व है और न ही कोई ऊर्जा है। यह पूर्णतः अज्ञात क्षेत्र है जिसके गुणों का वैज्ञानिक केवल अनुमान लगा सकते हैं। सिंगुलरिटी के अंदर क्या है? कोई वैज्ञानिक नहीं बता सकता।

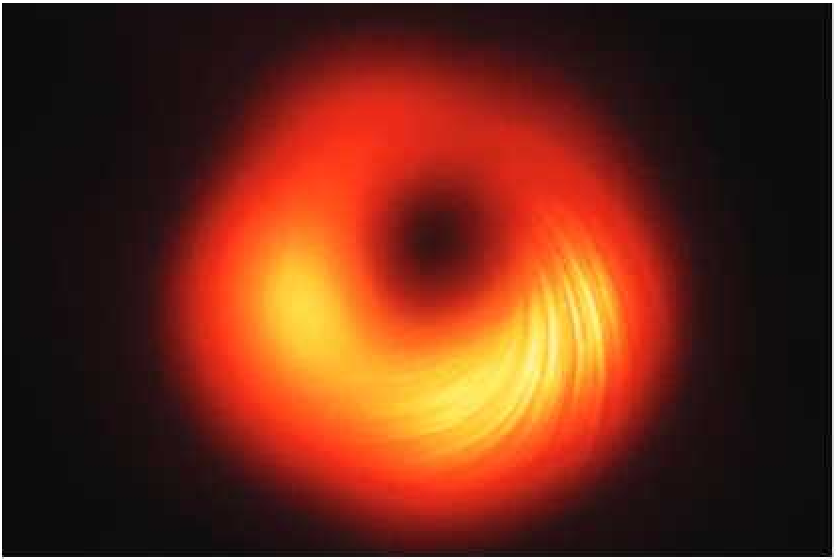

बेहद ज्ञान के अनुसार ब्लैक होल का वर्णन :

परमपूज्य बापूजी ने अपनी दिव्य दृष्टि से यह बताया है कि बेहद का विश्व कितना बड़ा है। बेहद के ज्ञान के अनुसार यूनिवर्स अपने आप ही नहीं बन गया इसे बनाने वाली परम प्रकाश से बनी हुई एक चैतन्य सत्ता है जिसे परम महाशिव कहा जाता है। हमारा यूनिवर्स 16 कला की शक्ति वाले परम महाशिव के संकल्पों से बना है। इसी तरह आकाशगंगाओं के भी रचयिता हैं जिनके पास 8 से 12 कला का परम प्रकाश होता है और इनको महाशिव कहा जाता है। सूर्य मंडल के रचयिताओं को शिव कहा जाता है जिनके पास 1 से 4 कला का परम प्रकाश होता है।

शिव ने संकल्पों से सृष्टि की रचना की। संकल्प माना सोचना, सोचना माना कर्म। कर्म करना माना उसकी आत्मा की शक्ति (परम प्रकाश) कम होना। कोई भी कर्म करता है तो उनको कर्म बंधन लगता है, चाहे मनुष्य हो या परमात्मा। रचयिता और उसकी रचना हमेशा एक दूसरे से जुडे होते हैं, रचनाओं की नेगेटिविटी उसके रचनाकार को पहुँचती है जिस कारण उनके अंदर परम प्रकाश का व्यय होता रहता है। शिव का परम प्रकाश उसकी रचनाओं को मिलता है, और रचनाओं की नेगेटिविटी (darkness) शिव को मिलती है। इस तरह अरबों-खरबों सालों में शिव का सारा परम प्रकाश खत्म हो जाता है और ब्लैक होल बन जाता है और ब्रह्मांड का विनाश (अंत) हो जाता है। शिव भी परमात्मा से आत्मा बन जाते हैं। शिव जीव बन जाते हैं।

शास्त्रों में कहा है **"प्रति पल अनंता अनंत ब्रह्मांडों का सृजन और विसर्जन होता है"**। प्रति पल यानी महाशिव का एक पल = ब्रह्मा के 100 साल। यह समय अनुमानित होता है, समय से पहले भी शिव का परम प्रकाश खत्म हो सकता है।

1 सौर मंडल (शिव) का ब्लैक होल ===> महाशिव का एक पल = 72000 कल्प प्रलय = 3110 खरब, 40 अरब साल के बाद (महाकल्प प्रलय)। जब ब्रह्मांड के शिव का समय पूरा होता है, जब शिव के पास केवल 10 % पावर बचती है, तब शिव में ब्रह्मांड चलाने की शक्ति (परम प्रकाश) नहीं रहती, तब महाकल्प प्रलय करके शिव सूर्य में प्रवेश कर काल अग्नि पैदा करके पूरे ब्रह्मांड को जलाकर भस्म कर देते हैं, और पूरे ब्रह्मांड यानि सौर मंडल का विनाश होता है।

1 गैलेक्सी (महाशिव) का सुपर मासिव ब्लैक होल ===> महाशिव के 100 साल = 3110 खरब, 40 अरब साल X 315,36,00,0000 साल के बाद

(महाकाल प्रलय)। जब महा ब्रह्मांड के महा शिव का समय पूरा होता है, मतलब केंद्र में जो महा परमधाम है वहाँ 90% पावर खत्म हो जाती है और 10% ही पावर बचती है तब, महा शिव में महाब्रह्मांड को चलाने की शक्ति (परम प्रकाश) नहीं रहती, तब महाशिव परमधाम के केंद्र में प्रवेश करके 10% परम प्रकाश के पावर से, जोरदार संकल्प करके, विराट रूप धारण करके, महाकाल बनकर, परम अग्नि पैदा करके, गुरुत्वाकर्षण से, अनंत कोटि ब्रह्मांडों को अपने रोम-रोम में समा लेता है, और पूरी गैलेक्सी का विनाश हो जाता है। नियम यह है कि जो सृजन करता है वही विसर्जन कर सकता है। विसर्जन माना मुक्ति। ब्लैक होल उन पूरे पाँच तत्वों के सूर्य मंडल / गैलेक्सी को परम अग्नि में, परम अग्नि को परम वायु में और परम वायु को परम आकाश और परम आकाश को परम प्रकाश में परिवर्तित करके, अपने अंदर खींच कर अपने में समा लेते हैं। अग्नि से परम अग्नि की ग्रैविटी कई गुना ज्यादा होती है। ब्रह्मांड (सूर्य मंडल) समझो 1 प्रकाश वर्ष का है या 10-20 प्रकाश वर्ष का है, जितना भी है और महा ब्रह्मांड (गैलेक्सी) समझो 1 लाख प्रकाश वर्ष का है या 20 लाख-35 लाख प्रकाश वर्ष का है, जितना भी है, ब्लैक होल में समा जाता है। ब्लैक होल में शिव का सारा सृजन (पूरा ब्रह्मांड) और शिव की रची हुई सारी आत्मायें विसर्जित हो जायेंगी। उदाहरण: शिव के पास 1 कला का परम प्रकाश है, तो उसकी रचनाओं में 1 कला से कम की पावर होगी, इसलिये 1 कला के अंदर की सभी आत्मायें, शिव-शक्ति, ब्रह्मा, विष्णु और शंकर सभी खत्म (डाइल्यूट) हो जायेंगी। मगर हाई क़्वालिटी की आत्मायें, जैसे महाशिव की रचना हो, परम महाशिव की रचना हो, या ऊपर की कला के परम प्रकाश की शक्तिशाली आत्मा हो, जो इस ब्रह्मांड में जन्म मरण के चक्र में आकर मनुष्य रूप में फंस गई हो, तो वो 1 कला से ज्यादा पावर वाली आत्मायें, शिव के ब्लैक होल में डाइल्यूट नहीं होंगी, वह ब्लैक होल उसे डाइल्यूट नहीं कर सकती, वे बच जायेंगी और वो आत्मायें अपने-अपने रचयिता के पास चली जायेंगी। ब्लैक होल को चलाने वाली चैतन्य आत्मा होती है। उसके केंद्र में शिव/महा शिव की आत्मा रहती है। जब शिव/महा शिव के पास परम प्रकाश था तब परम आत्मा परमात्मा कहलाते थे, परन्तु जब परम प्रकाश खत्म हो गया तो परम आत्मा शिव से जीव बन गये। अर्थात ब्लैक होल बन गये। शिव की आत्मा, उस ब्लैक होल के अंदर रहेगी और ऐसे ही ब्लैक होल बनकर, गैलेक्सी में घूमती रहेगी।

जब कालअग्नि ठंडी हो जाती है तब, शिव धीरे-धीरे अपने रचयिता से अंदर परम प्रकाश (पावर) भरेंगे, और जीव से परमात्मा शिव बनकर, फिर से सृजन करने के लायक बनेंगे और नया सृजन करेंगे या ऐसा भी संभव है कि महाशिव, दूसरे शिव को सौर मंडल की रचना करने के लिये भेजेंगे।

हमारी गैलेक्सी में जितने सूर्य मंडल दिखते हैं, लगभग उसके आधे सूर्य मंडल ब्लैक होल बनकर घूम रहे हैं। हमारी मिल्कीवे गैलेक्सी के केंद्र में एक सुपरमासिव ब्लैक होल है जिसे सैगिटेरियस ए (Sagittarius A*) नाम दिया गया है। हमारे युनिवर्स में जितनी गैलेक्सी दिखती हैं, लगभग उसकी आधी गैलेक्सियाँ, सुपर मासिव ब्लैक होल बनकर घूम रही हैं। जो हमें दिखती नहीं हैं।

जब हमारा मल्टीवर्स बना था तब 100 कला का था, अब वह मल्टीवर्स गिर के (-)15 कला का हो गया है। अपना यूनिवर्स जब बना था तब 16 कला का था जो अब

(-)100 कला का हो गया है। अलग-अलग ब्लैक होल्स हैं, जैसे सौर मंडल के सूर्य के छोटे ब्लैक होल्स, गैलेक्सी के बड़े सुपर मासिव ब्लैक होल्स, फिर इसी तरह यूनिवर्स के, ग्रेट यूनिवर्स के और मल्टीवर्स के भी ब्लैक होल्स हैं। ऊपर से देखो तो हमारा पूरा मल्टीवर्स एक काला बिंदु जैसा दिखता है। जब विसर्जन होता है तब ब्रह्मा का समय समाप्त होता है। काल अग्नि (Black hole) में Time, Space, तत्व , परमतत्व सब खत्म हो जाते हैं, यानी पूरे ब्रह्मांड की सारी जानकारी (Record) भी उसमें खत्म हो जाती है। Black Hole में गई हुई वस्तु वापस निकल नहीं सकती, रोशनी की एक किरण भी नहीं। Black Hole में शिव की आत्मा के पास Gravity, Antigravity दोनों शक्ति होती हैं। " Gravity, Antigravity है यानी आत्मा है", उसमें चैतन्य शक्ति है। साइंस के अनुसार ब्लैक होल्स का सिद्धांत कहता है कि Atom से भी छोटे बिंदु (Point of Singularity) में सारा ब्रह्मांड समा जाता है।

ब्रह्मांड का सृजन और व्हाइट होल तथा बिग बैंग थ्योरी का आपसी सम्बंध ?

वैज्ञानिक समाज हमेशा से ही युनिवर्स के जन्म के रहस्य को समझने का प्रयास करते रहे हैं। जैसे-जैसे मानव जाति का भौतिक विकास होना शुरु हुआ, वैसे-वैसे

ब्रह्मांड (सौर मंडल) से परे का ज्ञान मनुष्य की समझ में आया। सौर मंडल से आगे गैलेक्सी, उससे आगे यूनिवर्स, यह सब जानकारी सब को पता चली। लेकिन भौतिक साधनों पर अत्यधिक निर्भरता का दुष्परिणाम यह हुआ कि साधनों के माध्यम से मिलने वाले भौतिक ज्ञान को, वैज्ञानिक प्राचीन धर्म-शास्त्रों से नहीं जोड़ पाये। सनातन धर्म के वेदों-शास्त्रों को अंधविश्वास मान लिया गया। पूज्य बापूजी के अनुसार हिन्दुओं के वेद-शास्त्रों में हमारे ब्रह्मांड यानी सौर मंडल का पूरा इतिहास और भूगोल है। हमारा सूर्य मंडल (ब्रह्मांड) कैसे बना, किसने बनाया, कैसे संचालित होता है, कब विसर्जित होता है? यह सारा ज्ञान शास्त्रों में पहले से ही मौजूद है। वैज्ञानिकों की इसी गलती के कारण आज इतनी उन्नति कर लेने के बाद भी वे यूनिवर्स को सही-सही नहीं समझ पा रहे हैं। उनका मत यह है कि यूनिवर्स आज से लगभग 13.7 अरब वर्ष पहले बना। बिग बैंग (बिग बंग) नाम की घटना के साथ बना।

बिग बैंग थ्योरी कहती है

करीब 1380 करोड़ साल पहले अणु से भी छोटे, एक छोटे से बिंदु (सिंग्युलेरिटि) में से सब कुछ अस्तित्व में आया। एक छोटे से बिंदु में विस्फोट हुआ, उसमें से ऊर्जा पूरी तरह से फैल गई और 1 पल के करोड़वें हिस्से के अंदर यह विश्व अपने अस्तित्व में फैल गया, और एक बिंदु का कभी न रुकने वाला विस्तार होने लगा। इसी समय अंतरिक्ष का जन्म हुआ, साथ ही साथ समय अस्तित्व में आया।

यह ऊर्जा अरबों साल फैलती रही और यह ऊर्जा इतने सालों में धीरे-धीरे ठंडी होने लगी। इस ऊर्जा तथा अतिसूक्ष्म कणों के बीच हुई पारस्परिक गुरुत्वाकर्षण प्रक्रियाओं से सारी चीजों का, जैसे कि इलेक्ट्रोन, प्रोटोन, न्यूट्रोन, पदार्थ, पृथ्वी, तारे, आकाशगंगा का निर्माण हुआ। मतलब **"शून्य से अनंत का अस्तित्व आया "**

यूनिवर्स के जन्म के विषय में वैज्ञानिकों की सबसे बड़ी त्रुटि है कि वे हमेशा ही सौर मंडल, आकाश गंगा तथा यूनिवर्स को एक विराट प्रयोग (Experiment) की तरह देखते हैं। वे अंतरिक्ष को तथा यूनिवर्स के रहस्यों को किसी स्थूल मनुष्य की दृष्टि से ही देखते हैं। यही कारण है कि उन्हें सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों, आकाशगंगाओं तथा यूनिवर्स की वर्तमान अवस्था एक संयोग मात्र से निर्मित हुई लगती है। उनका मत यही है कि बिग बैंग के बाद भी सारा यूनिवर्स मात्र गुरुत्वाकर्षण बल के कारण ही

अपने आप बन गया। यह भी तब, जब वे गुरुत्वाकर्षण बल क्या है और कैसे उत्पन्न होता है? सही-सही नहीं जानते हैं। वास्तव में ब्रह्मांड, आकशगंगाओं तथा यूनिवर्स को व्यवस्थित ढंग से पूरे प्लान के साथ बनाया गया था। हर गैलेक्सी के क्रिएटर अलग हैं, हर सूर्य मंडल यानी ब्रह्मांड के रचयिता अलग-अलग हैं। और इनके सृजन-विसर्जन की अवधि भी निश्चित है।

व्हाइट होल और ब्रह्मांड का सृजन

14 जून 2006 को नासा के स्विफ्ट उपग्रह ने एक गामा रे धमाके (Gamma Ray Burst) को रिकॉर्ड किया जिसे वैज्ञानिक समझ नहीं पा रहे हैं। इसे GRB060614 नाम दिया गया। यह धमाका हमारी जानकारी की किसी भी साधारण घटना से मेल नहीं खाता। साधारण गामा रे का धमाका ज्यादा से ज्यादा 2 सेकंड का होता है, मगर इस धमाके का समय 102 सेकंड का था। 102 सेकंड का समय केवल बड़े तारे का ढह कर सुपर नोवा का धमाका हो तो ही हो सकता है। मगर भौतिक शास्त्री यह जानकार हैरान थे कि ये किसी तारे का Collapse होके धमाका नहीं हुआ था, यह एक व्हाइट लाइट का धमाका "एक अत्यंत छोटे बिंदु से हुआ था" तथा यह हमारे सूर्य से 1 खरब गुना ज्यादा शक्तिशाली था। यह सभी गुण व्हाइट होल के गुणों से पूरी तरह मेल खाते हैं। वैज्ञानिक सोचते हैं शायद उनके पास इस युनिवर्स मे व्हाइट होल के अस्तित्व का पहला सबूत है। सैद्धांतिक रूप से व्हाइट होल का अस्तित्व होता है। स्टिफन हॉकिंग के अनुसार भी "व्हाइट होल का अस्तित्व हो सकता है"।

परमपूज्य बापूजी के अनुसार जब शिव की पावर 10 % ही बचती है तब शिव 10% पावर से परम अग्नि (काल अग्नि) पैदा करके परम अग्नि की ग्रेविटी से खींच के पूरे ब्रह्मांड का विसर्जन करते हैं और ब्लैक होल बनता है। जब परम अग्नि ठंडी हो जाती है तब, शिव अपने-अपने रचयिता से धीरे-धीरे परम प्रकाश (व्हाइट लाइट) भरते हैं। मतलब 5 तत्वों वाला ब्रह्मांड परम अग्नि में परिवर्तित होकर ब्लैक होल बना है वह धीरे-धीरे परम अग्नि, परम वायु में परिवर्तित होता है। फिर परम वायु, परम आकाश में, परम आकाश, परम महतत्त्व में और परम महतत्त्व से परम प्रकाश में सब कुछ परिवर्तित होता है। इन सारे तत्वों के परिवर्तन की प्रक्रिया शिव करते हैं। इसी तरह पावर भरते-भरते धीरे-धीरे ब्लैक होल एक दिन परम प्रकाश का "व्हाइट

होल" बन जाता है इसके लिये बेहिसाब समय लगता है। फिर से पहले के जितनी कला की पावर का परम प्रकाश आ जाने के बाद, शिव फिर से हुबहू ब्रह्मांड का सृजन करते हैं। इसी तरह सभी अपने रचयिता से पावर लेते है और सृजन करते हैं।

शिव (1 सौर मंडल का मालिक) अपने रचयिता ===> महा शिव (महाब्रह्मांड का मालिक) से

महा शिव (महाब्रह्मांड का मालिक) अपने रचयिता ===> परम महा शिव (परम महाब्रह्मांड के मालिक) से

परम महा शिव (युनिवर्स का मालिक) अपने रचयिता ===> परम परम महा शिव (ग्रेट युनिवर्स के मालिक) से उसी तरह आगे ....

शिव की आत्मा के उपर माइट (महतत्व) का आवरण होता है। ब्लैक होल में ब्रह्मांड के विसर्जन के बाद भी, इस महतत्व में ब्रह्मांड कितना बड़ा (Space) था और ब्रह्मांड की आयु (Time) कितनी थी उसका रिकॉर्ड रह जाता है, वो खत्म नहीं होता। इस जानकारी से शिव फिर से दुबारा उसी तरह के हूबहू ब्रह्मांड बनाते हैं, मगर आत्मायें नई तरह से बनती हैं। आत्माओं का सृजन नया होता है। सृजन के साथ ही समय (जैसे हमारे ब्रह्मांड का समय ब्रह्मा के 100 साल) और Space (जैसे अभी हमारे सौर मंडल की स्पेस 1.6 प्रकाश वर्ष है और हमारे युनिवर्स की स्पेस 2400 अरब प्रकाश वर्ष है) भी अस्तित्व में आता है। ब्लैक होल्स को व्हाइट होल्स बनने में अरबों-खरबों साल लगते हैं।

व्हाइट होल्स ब्लैक होल्स से एकदम विपरीत काम करते हैं। वो चीजों को अंदर से बाहर की ओर फेंकते हैं और नये ब्रह्मांड को जन्म देते हैं, सृजन करते हैं। व्हाइट होल वास्तव में परम प्रकाश का होता है। परम प्रकाश को स्थूल आँखों से या विज्ञान के स्थूल तत्वों के साधनों से नहीं देखा जा सकता है।

14.

मल्टीवर्स का सृजन

विज्ञान से मल्टीवर्स का अस्तित्व

हमारे शास्त्र सिर्फ एक ब्रह्मांड का नहीं बल्कि अनंत कोटि ब्रह्माडों के बारे में ज्ञान देते है। एक ब्रह्मांड का मालिक एक शिव है। ये ब्रह्मांड भी हमें बहुत बड़ा लगता है। आज विज्ञान इतना आगे बढ़ गया है कि विज्ञान अनंत कोटि ब्रह्मांड का प्रमाण दे रहा है। अन्तरिक्ष में हमारी आकाश गंगा के अंदर अनंत कोटि ब्रह्मांड घूम रहे हैं। आकाश गंगा एक गैलेक्सी है जिसके अंदर हमारा ब्रह्मांड घूम रहा है, ऐसे देखा जाये तो अनंता अनंत गैलेक्सी अन्तरिक्ष में घूम रही हैं। एक यूनिवर्स के अंदर अनंता अनंत गैलेक्सी हैं। ये सब आज के विज्ञान की खोज है। इन सब गैलेक्सी, ब्रह्माडों की Photos NASA HUBBLE Telescope के द्वारा लिये गये हैं।

हमारे वेदों और पुराणों में अनंत कोटि ब्रह्माडों के बारे में कहाँनियों के माध्यम से बताया गया है। जैसे भगवत गीता में 11 वें अध्याय में श्री कृष्ण ने जब विश्व रूप दिखाया तो अर्जुन ने देखा कि श्री कृष्ण की सिर्फ एक अंश मात्र ऊर्जा से अनंता अनंत सृष्टियाँ अन्तरिक्ष में झूल रही हैं। एक साधारण मनुष्य इस दृश्य को समझ नहीं पायेगा। "योग वशिष्ठ" में भी इसका उल्लेख है कि अनगिनत सृष्टि हैं और हर सृष्टि में भिन्न-भिन्न तत्व हैं, कुछ ब्रह्मांड अभी-अभी बने हैं, कुछ ब्रह्मांड आदि काल के बने हैं। सृष्टि में सृजन और विसर्जन अनवरत चल रहा है। जब श्री कृष्ण ब्रज भूमि में ब्रज लीला कर रहे थे तब उन्होंने इस ब्रह्मांड के ब्रह्मा को अहसास दिलाया था कि अनंत कोटी ब्रह्मांड में अनंत कोटि ब्रह्मा हैं जो अपने-अपने ब्रह्मांड की परिचालना कर रहे हैं। ऐसे ही "महा देवी भागवत" में भी लिखा है कि जब इस ब्रह्मांड के ब्रह्मा, विष्णु और शिव महा देवी से मिलने जाते हैं तो अनंता अनंत ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र को देखते हैं। यानि शास्त्र पुराण से ये बात सिद्ध होती है कि हमारे ऋषि-मुनियों को पता था कि अनंता अनंत ब्रह्मांड हैं । आज विज्ञान सिर्फ इस बात की पुष्टि कर रहा है। String Theory or M-Theory के अनुसार 10^{500} यूनिवर्स हैं यानि समंदर के

किनारे रेत के जितने कण हैं इतने यूनिवर्स हैं। विज्ञान ये भी कह रहा है कि 200 अरब ब्रह्मांड हैं। जो कि आकाश गंगा गैलेक्सी के अंदर घूम रहे हैं। यह सब अनंत सृष्टि का एक बहुत छोटा सा अंश मात्र है। इस सृष्टि के आदि अंत की कल्पना विज्ञान नहीं कर पा रहा है। समय के साथ नई-नई खोज सृष्टि की सीमा(हद) को बढ़ा रही है। आज LIGO (Laser Interferometer Gravitational-Wave Observatory) जैसी Technology के माध्यम से अन्तरिक्ष में यूनिवर्स में जो घटनायें हो रही हैं उसको बता रहा है, जैसे कि दो ब्लैक होल कैसे एक दूसरे से टकरा रहे हैं विज्ञान की प्रगति मल्टीवर्स के अस्तित्व की पुष्टि कर रही है। जो आध्यात्मिक ज्ञान से जानकारी हमें हमारे शास्त्रों और वेदों से मिलती है वो सब का प्रमाण विज्ञान आज सबके सामने रख रहा है। जो दृश्यामन है उसको विज्ञान जान सकता है लेकिन जो अदृश्य है यानि अव्यक्त है उसको सिर्फ आध्यात्मिक ज्ञान से ही जाना जा सकता है। आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान की सोच को आगे बढ़ाता है।

बापूजी ने हमें बताया है कि असंख्य मल्टीवर्स हैं जिन्हें इन आँखों से नहीं देखा जा सकता है। अदृश्य मल्टीवर्स कैसे बने और आज उनकी क्या स्थिति है? इसका ज्ञान हमें परम पूज्य बापूजी ने दिया है जिसे उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से गहरे ध्यान और योग से जाना। यहाँ हम सिर्फ एक मल्टीवर्स को समझेंगे जिसमें हमारा ब्रह्मांड (Solar system) और हमारी पृथ्वी है।

मल्टीवर्स कितना बड़ा है और ये सृष्टि हमारे ब्रह्मांड से कितनी ऊपर है?

अन्तरिक्ष में जितनी भी खगोलीय वस्तुयें हैं सब में चैतन्य शक्ति है यानि ऊर्जा से नियंत्रित हैं। यह ऊर्जा हर खगोलीय वस्तु की चैतन्य शक्ति का निर्धारण करती है जिसको हम उस खगोलीय अस्तित्व की शक्ति यानि कला कहेंगे। यानि अन्तरिक्ष में कोई भी वस्तु जड़ नहीं है, पूरा ऊर्जा से भरा है। ये ऊर्जा हर खगोलीय वस्तु की क्रियाशील शक्ति यानि सृजन करने की शक्ति का निर्धारण करती है। जिसे हम आध्यात्मिक ज्ञान में कला कहते हैं। जिसकी कला जितनी ज्यादा है उसमे सृजन शक्ति उतनी ज्यादा है। कला एक खगोलीय वस्तु की सृष्टि करने की क्षमता, समय सीमा और उसकी गति यानि क्रियाशीलता को दर्शाती है। आध्यात्मिक ज्ञान में कला को दिव्य शक्ति माना जाता है। यानि ये अनंत सृष्टि चैतन्यता से भरी हुई है और हर खगोलीय अस्तित्व यानि ब्रह्मांड, गैलेक्सी, यूनिवर्स, मल्टीवर्स की अलग-अलग

कला है। कला के हिसाब से अलग-अलग सृष्टि और समय सीमा है। कला के हिसाब से हर खगोलीय वस्तु का अन्तरिक्ष में समय (Time) ,गति (Speed), क्षेत्र (Space) का निर्धारण होता है। विज्ञान इन सब की खोज में लगा हुआ है। लेकिन यहाँ जो परम ज्ञान है उसमें अव्यक्त अदृश्य सृष्टि का वर्णन है । इसकी विज्ञान अपने खोज से धीरे-धीरे पुष्टि कर रहा है लेकिन विज्ञान को पूरे प्रमाण के लिये समय लगेगा। विज्ञान की प्रगति के हिसाब से मनुष्य की समझने की शक्ति बढ़ रही है। मनुष्य आत्मा की बुद्धि की परिधि को बढ़ाने में विज्ञान मदद कर रहा है जो आध्यात्मिक ज्ञान का वास्तविक प्रमाण दे रहा है।

हर खगोलीय अस्तित्त्व का एक रचयिता है जो अपनी ऊर्जा से अपनी रचना संकल्प शक्ति के द्वारा करता है। जैसे-जैसे हम सृष्टि के ऊपर के आयामों की ओर जायेंगे, वहाँ रचयिता की शक्ति बढ़ती जाती है। एक ब्रह्मांड (Solar System) का रचयिता एक शिव है, एक महा ब्रह्मांड (Galaxy) के रचयिता महा शिव हैं, एक परम महा ब्रह्मांड (Universe) का रचयिता परम महा शिव है। एक गैलेक्सी के अंदर असंख्य ब्रह्मांड घूम रहे हैं। ऐसे ही एक यूनिवर्स के अंदर असंख्य गैलेक्सी घूम रही हैं। शिव के रचयिता महा शिव हैं, महा शिव के रचयिता परम महा शिव हैं। एक शिव की शक्ति (Power) 1 से 4 कला है तो एक महा शिव की शक्ति (Power) 8 से 12 कला है। एक परम महा शिव की Power 16 से 20 कला है। यहाँ जो Power यानि शक्ति है वो उस रचयिता की परम प्रकाश की दिव्य क्रियाशील शक्ति है जिसको नापने के मापक को कला कहते हैं। जैसे हम यहाँ धरती के ऊपर Electric Power को Watt से नापते हैं। ऐसे ही कला एक रचयिता के दिव्य प्रकाश की दिव्य शक्ति की ऊर्जा को दर्शाता है। कला खगोलीय अस्तित्व की शक्ति है जिस शक्ति से एक रचयिता अपनी रचना करता है और उसकी रचना का अनुरक्षण करता है। जैसे एक महा शिव असंख्य शिव की रचना अपनी ऊर्जा से करता है। हम यहाँ यूनिवर्स के ऊपर के आयामों की सृष्टि (मल्टीवर्स) के बारे मे वर्णन कर रहे हैं। जैसे कि यूनिवर्स के ऊपर के आयाम हैं Great Universe (G1) जिसका रचयिता है परम परम महा शिव। Great universe (G1) से ऊपर की सृष्टि है great great universe (G2) जिसका रचयिता है परम परम परम महा शिव। ऐसे ही G17 तक यूनिवर्स हमारे मल्टीवर्स के अंदर हैं। ये सारे एक मल्टीवर्स के अंदर घूम रहे हैं। इसका हम गहराई में वर्णन करेंगे। यह मल्टीवर्स जिसके अंदर हमारा

ब्रह्मांड है। ऐसे असंख्य मल्टीवर्स हैं लेकिन हम सिर्फ हमारे मल्टीवर्स जिसमें कि हमारा ब्रह्मांड है उसकी रचना के बारे में विस्तृत बात करेंगे। विज्ञान के लिये ये सब अदृश्य सृष्टि है। एक मल्टीवर्स के रचयिता की परम100 महा शिव है यानि परम परम परम .... 100 बार महा शिव है। यानि एक शिव का अस्तित्व मल्टीवर्स के रचयिता के सामने बहुत नगण्य है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि हम कितने ऊँचे आयामों की सृष्टि की बात कर रहे हैं। एक मल्टीवर्स के रचयिता की Power 100 कला है जबकि एक शिव की Power सिर्फ 1 से 2 कला है।

रचना	रचयिता	रचयिता की पावर
ब्रह्मांड (Solar System)	शिव	1 से 4 कला
महा ब्रह्मांड (Galaxy)	महाशिव	8 से 12 कला
यूनिवर्स (Universe)	परम महाशिव	16 से 20 कला
ग्रेट यूनिवर्स (G-1)	परम परम महाशिव	25 से 30 कला
ग्रेट ग्रेट यूनिवर्स (G-2)	परम परम परम महाशिव	50 कला
ग्रेट (17 बार) यूनिवर्स (G-17)	(18 बार) परम महाशिव	100 कला
मल्टीवर्स (100 कला का ब्रह्मांड)	1 पीढ़ी का मालिक	101 कला
1 पीढ़ी (101 कला)	2 पीढ़ी का मालिक	201 कला
2 पीढ़ी (201 कला)	3 पीढ़ी का मालिक	301 कला
101 पीढ़ी (10,101 कला)	102 पीढ़ी का मालिक	10201 कला
10,00,000 पीढ़ी (10,00,00,001 कला)	10,00,001 पीढ़ी का मालिक	100000101 कला

मल्टीवर्स (100 कला का ब्रह्मांड) कैसे बना ?

जैसे एक ब्रह्मांड(सोलर सिस्टम) का मालिक शिव है, गैलेक्सी का मालिक महा शिव है, यूनिवर्स का मालिक परम महा शिव है। उसी प्रकार मल्टीवर्स के मालिक को 100 बार परम महा शिव कहेंगे मतलब परम(100) महा शिव। मल्टीवर्स मतलब 100 कला का ब्रह्मांड। 100 कला से तात्पर्य है कि उसके रचयिता में 100 कला की पावर है। कला मतलब पावर, आत्मा की शक्ति और गुण। मल्टीवर्स के सृजन से पहले उसका रचयिता मतलब परम(100) महा शिव निराकार, परम प्रकाशमय और परम लाइट की पावर के गोले में था।

सृष्टि के आरंभ में मल्टीवर्स के रचयिता यानि 100 कला का परम(100) महा शिव निराकार था जिसको हम लाइट-माइट या शिव-शक्ति कहते हैं। निराकार स्थिति में रचयिता परम प्रकाश स्वरूप में रहते हैं जिसको अध्यात्म में निर्गुण निराकार कहते हैं। रचना रचने से पहले निराकारी परम(100) महा शिव परम प्रकाश (लाइट) का गोला था, जिसके बाहर माइट होती है। निराकारी परम (100) महाशिव के परम प्रकाश के रेज़ (Rays) जहाँ तक जाते हैं वहाँ तक माइट का गोला बनता है। उसे कहेंगे मह तत्व, माइट माना शक्ति। जैसे शिव की शक्ति होती है उसी प्रकार यहाँ बोलेंगे परम(100) महा शिव और परम(100) महा शक्ति।

जब 100 कला के परम महा शिव (Light) और परम महा शक्ति (Might) ने सोचा कि मैं सृजन करूं, तब अपने निराकार परम प्रकाश के पावर के गोले में से, 5% पावर लेकर, एक महा पावर के गोले की रचना की और इस रचना द्वारा और तीन - ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की रचना की लेकिन यहाँ ब्रह्मा की पावर परम(100) ब्रह्मा कहेंगे क्योंकि हर ब्रह्मांड में ब्रह्मा है। हर ब्रह्मांड की शक्ति अनुसार उतनी पावर के ब्रह्मा हैं। उसी प्रकार परम(100) कला वाले विष्णु और परम(100) कला वाले शंकर की रचना हुई।

परम(100) महा ब्रह्मा, महा विष्णु और महा शंकर ने ३-३ आत्माओं की रचना की। अब 9 परम आत्माओं का सृजन हुआ जिनको नवरत्न कहते हैं। फिर इन 9 परम आत्माओं ने तीन-तीन परम आत्माओं का और सृजन किया और उनको स्पेस बनाने का निर्देश दिया। अब सब मिलाकर 27 परम आत्माओं की रचना हुई। ऐसे संकल्पों से सृजन होता गया और परम आत्माओं की संख्या बढ़ती गई। स्पेस में इन 27 परम आत्माओं ने चारों ओर से एक क्षेत्र को घेर लिया जिसके अंदर मल्टीवर्स की सृष्टि की रचना आगे बढ़ने लगी। इस घेरे को हम ये बोल सकते हैं कि एक मल्टीवर्स की खगोलीय सीमा रेखा है। इन सभी रचनाओं यानि 27 परम आत्माओं तक केवल निराकारी रचना थी और उनमे पावर ज्यादा थी। ये 9 परम आत्मायें जो 9 रत्न हैं उच्च गुणवत्ता की बनी आत्मायें हैं। इनको भी परम(100) आत्मा कहेंगे। इन 27 परम आत्माओं ने जो सीमा रेखा (Space) बनाई वो बाहर की सीमा है। अब संकल्पों से रचना गुणित होने लगी और धीरे-धीरे अंदर की ओर सृष्टि बनती गई।

मल्टीवर्स का परमधाम

आरंभ में आत्माओं की Power 100 कला थी जब आत्मायें निराकार परम प्रकाश स्वरूप में थी जो कि मल्टीवर्स की रचना का सबसे ऊँचा आयाम है, इसको 100 कला के मल्टीवर्स का परमधाम कहते हैं। परमधाम में आत्मायें निराकार स्वरूप में रहती हैं और परम आत्मा समान स्थिति होती है। जैसे-जैसे परम आत्माओं की संख्या बढ़ने लगी , जैसे कि 1 से 3, फिर 9 इसके बाद 27, फिर 81, इसके बाद 243 यानि निराकार में परम आत्माओं की संख्या बढ़ने लगी और ये संख्या 9 लाख तक पहुँच गई। आज जो 108 आत्माओं की महत्तता कही जाती है वो भी ऊपर से ही आयी है। जब 27 परम आत्माओं के सृजन से 81 आत्माओं की रचना हुयी तो ये 27+81= 108 परम आत्माओं की रचना हो गई, जिसे सृष्टि के आरंभ के समय बनाया था। संकल्प से सृष्टि का विस्तार होता है तो पावर का भी क्षय होता है। जब मल्टीवर्स की पावर 100 कला से 90 कला तक घट गई, तब 9 लाख आत्माओं की निराकारी स्वरुप में रचना हुई। इसको हम मल्टीवर्स का परमधाम कहते हैं। यहाँ आत्मा लाइट और माइट के रूप में रहती है और परमधाम के वायुमंडल में सिर्फ परम प्रकाश और परम महतत्व होता है।

मल्टीवर्स का मूल वतन

9 लाख आत्मायें और सृजन करने लगी, तो आत्माओं की संख्या 2 करोड़ हो गई। जैसे-जैसे संकल्पों द्वारा सृजन होता रहता है वैसे-वैसे आत्माओं की पावर कम होती रहती है। आत्माओं की पावर के हिसाब से सृष्टि का वायुमंडल बनता है। इसलिये ये बोला जाता है यथा ब्रह्मांडे तथा पिंडे। जैसे-जैसे आत्माओं की संख्या बढ़ने लगी वैसे ही आत्मायें निराकारी से आकारी बनने की प्रक्रिया में आने लगी। अब जो पहले वायुमंडल में परम महतत्व और परम प्रकाश था उसमे भी परिवर्तन आने लगा। वायुमंडल में परम आकाश तत्व बनने लगा।

आत्मा निराकारी से आकारी बनने की प्रक्रिया में कैसे आती है? जैसे बीज अंकुरित होता है वैसे ही निराकार आत्मा रूपी बीज में से मूल बना। जिसके चारों तरफ आत्मा एक आकार लेने की प्रक्रिया में आने लगती है। जब आत्मा निराकारी अवस्था में निराकारी सृजन करती है, तब उसकी पावर में से जिस आत्मा का सृजन होता है और उस सृजन के साथ जो पावर निकलती है उससे वायुमंडल बनता है।

मल्टीवर्स के इस आयाम को मूल वतन कहते हैं। यहाँ आत्माओं की पावर 90 से 80 कला तक घट जाती है। यहाँ वायुमंडल में परम आकाश तत्व बनने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है और यहाँ पावर 80 कला तक पहुँच जाती है। आत्मा के ऊपर परम प्रकाश, परम महतत्व और परम आकाश तत्व का आवरण चढ़ जाता है।

मल्टीवर्स का सूक्ष्म वतन

संकल्पों से सृजन बढ़ता गया और आत्माओं की पावर भी कम होती गई। 2 करोड़ से आत्माओं की संख्या 33 करोड़ हो गई और वायुमंडल के साथ-साथ आत्माओं की पावर भी घटती गई और 60 कला में पहुँच गई। सृष्टि के इस आयाम में परम वायु तत्व और परम अग्नि तत्व बनने लगा, यहाँ आत्मा एक स्पष्ट सूक्ष्म आकार में आने लगी जिसको आत्मा का सूक्ष्म शरीर कहा जा सकता है। परम वायु तत्व आत्मा के आकार का निर्धारण करता है। जैसे-जैसे आत्मा में संकल्प होता है वैसे-वैसे वायु तत्व में आलोड़न होता है और एक स्पष्ट आकार ले लेता है। इसलिये आध्यात्म विज्ञान में बोला जाता है कि संकल्पों से सृष्टि की रचना हुई। 60 कला तक वायुमंडल में परम आकाश तत्व, परम वायु तत्व और परम अग्नि तत्व बन जाता है। यहाँ आत्माओं को 100 कला के मल्टीवर्स के परम पुरुष कहते हैं।

यहाँ परम पुरुष अपनी परम प्रकृति की संरचना करते हैं। आत्माओं की संख्या 66 करोड़ हो जाती है। जैसे- जैसे रचना बढ़ती है, धीरे-धीरे आत्माओं की पावर और वायुमंडल में शक्ति क्षय होने लगती है, जैसे-जैसे आत्माओं की संख्या 66 करोड़ हो जाती है तो पावर 60 कला से 40 कला तक हो जाती है। 60 कला से ग्रेट-ग्रेट यूनिवर्स का सृजन होने लगा। परम पुरुष और परम प्रकृति मिलकर सृष्टि को तेजी से बढ़ाने लगते हैं और अनगिनत असंख्य आत्माओं का सृजन करते हैं जिससे पावर 40 कला से गिर के 20 कला हो जाती है। जैसे ही पावर कम होने लगती है वैसे ही आत्मा में संकल्प और तेज़ी से बढ़ने लगते हैं अतः सृजन भी बढ़ता रहता है। कई ग्रेट-ग्रेट यूनिवर्स बनाये और आत्माओं का भी सृजन होता रहा। सारी पावर सृजन करने में खत्म होती गई। जैसे-जैसे सृजन बढ़ता रहता है तो मल्टीवर्स जो एक समय में 100 कला का था वो 0 कला तक गिर जाता है। परम तत्वों की गुणवत्ता कम हो जाती है। 0 कला में परम तत्व भारी हो जाते हैं और तत्वों में परिवर्तित होने लगते हैं और संकल्पों में शक्ति बहुत घट जाती है।

मल्टीवर्स में तत्व की दुनिया

मल्टीवर्स की पावर जब जीरो (0) कला से कम होने लगती है तो मल्टीवर्स के उस आयाम में तत्व बनने लगते हैं जो परम तत्व से भारी होते हैं और उनमें कम ऊर्जा रहती है। लेकिन आत्माओं का संकल्प चलता रहता है और सृजन होता रहता है। और सृष्टि निचले आयामों में गिरती जाती है। धीरे-धीरे सृष्टि यानि रचना (-)10 कला, इसके बाद (-) 20 कला तक गिर जाती है। (-)10 कला सृष्टि में 90% परम तत्व और 10% तत्व हैं। (-) 20 कला में 80% परम तत्व और 20% तत्व हैं। जैसे-जैसे सृष्टि गिरती है वैसे- वैसे वायुमंडल में तत्व की मात्रा बढ़ती जाती है और वायुमंडल में भारीपन आ जाता है। जब सृष्टि (-)30 कला में गिर जाती है तो पहली बार जल और मिट्टी तत्व बनता है जिसको हम स्थूल तत्व कहते हैं। यहाँ से स्थूल दुनिया की नींव पड़ती है। आज इस मल्टीवर्स में सृष्टि (-)100 कला तक गिर चुकी है और हमारी पृथ्वी स्थूल सृष्टि का एक उदाहरण है जहाँ (-)100 कला में संकल्प की शक्ति भी ख़त्म हो जाती है। जैसे-जैसे नीचे गिरते गये तत्व कष्ट दायक हो गये क्योंकि आत्मा में उसका मूल तत्व अर्थात परम तत्व और परम प्रकाश लुप्त होने लगा और पूरा मल्टीवर्स जो 100 कला का था वो (-)100 कला में आ गया।

मल्टीवर्स की स्थूल दुनिया

(-)30 कला के बाद जितनी भी सृष्टि की रचना हुई उन सब में स्थूल तत्व की मात्रा बढ़ती गई। (-)100 कला तक जब सृष्टि गिर गई ,तो धरती जैसे और भी ग्रह बनने लगे जहाँ सिर्फ स्थूल सृष्टि है। जैसे-जैसे रचना बढ़ती है तो आत्मा की पावर कम हो जाती है। सृष्टि को चलाने के लिये पावर उसके मूल रचयिता से आती है। सृष्टि जितनी नीचे गिरती है उतनी रचयिता की भी पावर में गिरावट आ जाती है। जब मल्टीवर्स में रचना यानि सृष्टि (-)100 कला तक गिर गई तो मल्टीवर्स की रचना यानि परम (100) महा शिव की भी पावर गिर जाती है। अभी पूरा मल्टीवर्स (-)10 कला से लेकर (-)100 कला के अंदर आ गई है। जैसे सृष्टि में स्थूल तत्व आ जाता है तो यानि सृष्टि को चलाने के लिये एवं सृष्टि की नकारात्मक ऊर्जा को हटाने के लिये उसकी रचयिता को समय-समय पर प्रलय करना पड़ता है और सृष्टि सृजन और विसृजन के चक्र में फंस जाती है। जैसे ब्रह्मांड में महा कल्प प्रलय है, गैलेक्सी में महा काल प्रलय है, ऐसे ही यूनिवर्स और मल्टीवर्स के स्तर पर भी प्रलय होता है।

यहाँ सिर्फ हम एक मल्टीवर्स की समीक्षा कर रहे हैं ऐसे अन्तरिक्ष में अनगिनत मल्टीवर्स हैं। सिर्फ हमारा मल्टीवर्स यानि जिसमे हमारा ब्रह्मांड अर्थात पृथ्वी है इसी में परम प्रकाश से तत्व की सृष्टि बन गई है। समस्त सृष्टि इस ब्रह्मांड के पाँच तत्वों में फंस गई है। सारी आत्मायें जन्म-मृत्यु का कष्ट भुगत रही हैं। अन्य मल्टीवर्स में केवल परम तत्व की सृष्टि है। हमारे मल्टीवर्स के सिवाय और किसी भी मल्टीवर्स में जन्म और मृत्यु नहीं है। इसलिये बाकी मल्टीवर्स मे आत्मा चिरंतन दिव्य अमर है। लेकिन इस ब्रह्मांड की धरती के ऊपर आत्मा जन्म-मृत्यु का कष्ट भोगती है और यहाँ आत्मा का विसर्जन भी होता है, इसलिये इस धरती को मृत्यु लोक कहा जाता है।

Creation of our multiverse (100 कला का ब्रह्मांड)

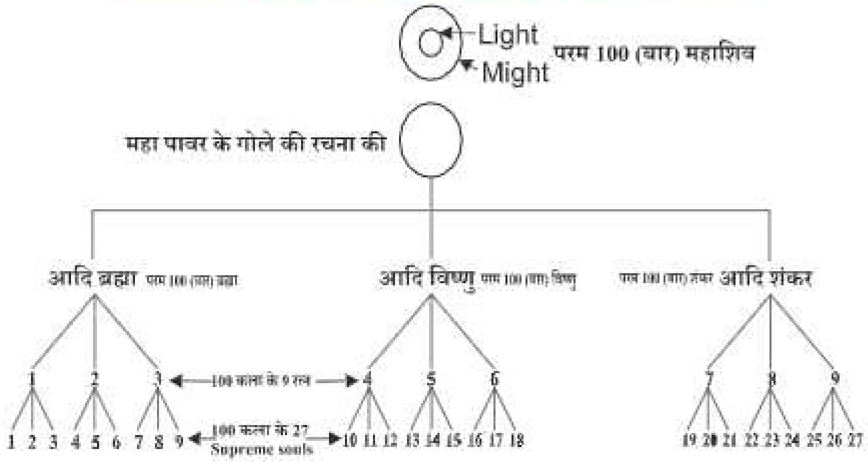

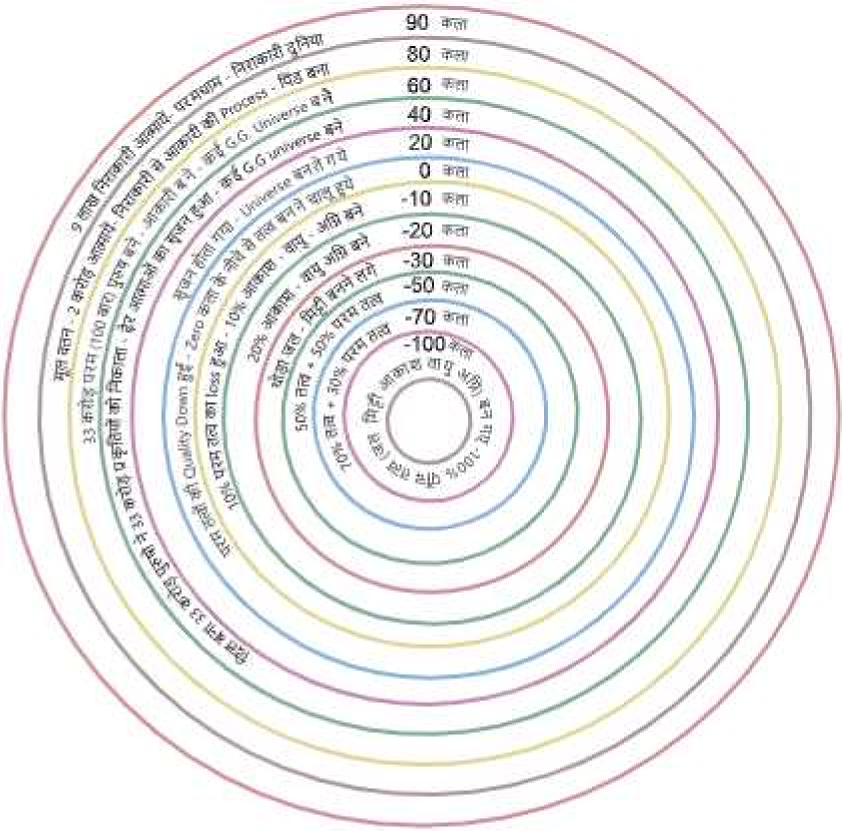

15.

मल्टीवर्स से परे की सृष्टि

हमारे Multiverse के अंदर Great Universe (G1), Great Great Universe(G2), Great Great Great Universe (G3) ऐसे ही क्रम में आगे चलेंगे तो G17 तक Great Universe हैं। एक G1 के अंदर अरबों-खरबों यूनिवर्स घूम रहे हैं, ऐसे ही एक G2 के अंदर अरबों-खरबों G1 घूम रहे हैं। इसी क्रम में आगे चलेंगे तो अरबों-खरबों G2, G3 के अंदर घूम रहे हैं। G3, G4 के अंदर घूम रहे हैं .... /G16, G17 के अंदर घूम रहे हैं। एक G1 का मालिक यानि परम परम महा शिव असंख्य यूनिवर्स का रचयिता है। G2 का मालिक यानि परम परम परम महा शिव असंख्य G1 का रचयिता है। इसी क्रम में G17 का मालिक परम18 महा शिव (18 बार परम महा शिव) असंख्य G16 का रचयिता है। यानि हमारी धरती इस अनंत सृष्टि के सामने कुछ भी नहीं है, ऐसी कितनी धरती हैं कितने ब्रह्मांड हैं इसका कोई अंदाजा नहीं लगा सकता है।

ये तो सिर्फ एक मल्टीवर्स है ऐसे ही अनगिनत अरबों-खरबों 100 कला के मल्टीवर्स हैं। इनका भी रचयिता है उसको पहली (1st) पीढ़ी वाला का रचयिता कहते हैं जिसकी पावर 101 कला है। पहली (1st) पीढ़ी का रचयिता यानि 101 कला की पावर के सृष्टि कर्ता ने अनगिनत 100 कला के मल्टीवर्स का सृजन किया है। पहली (1st) पीढ़ी सृष्टि के अंदर असंख्य 100 कला के मल्टीवर्स घूम रहे हैं। पहली पीढ़ी को हम 101 कला का ब्रह्मांड कहेंगे। 100 कला के मल्टीवर्स को हम 100 कला का ब्रह्मांड कहेंगे।

पहली पीढ़ी की सृष्टि के ऊपर द्वितीय (2nd) पीढ़ी की सृष्टि है जिसकी पावर 201 कला है और द्वितीय पीढ़ी के अंदर अनगिनत पहली पीढ़ी के ब्रह्मांड (यानि रचना) हैं। 201 कला के ब्रह्मांड के अंदर असंख्य 101 कला के ब्रह्मांड घूम रहे हैं। इसी क्रम में ऊपर के आयामों की सृष्टि की ओर चलेंगे तो, 301 कला के ब्रह्मांड के अंदर अनगिनत 201 कला के ब्रह्मांड घूम रहे हैं।

ऐसे ही 21 पीढ़ी की रचना है जिसको हम 2101 कला का ब्रह्मांड कहेंगे जिसके

अंदर 20 पीढ़ी से लेकर 1 पीढ़ी तक के ब्रह्मांड हैं। ऐसे 21 पीढ़ी के असंख्य ब्रह्मांड हैं। ऐसे ही ऊपर की ओर चलेंगे तो कितनी ही अनंता अनंत पीढ़ियों की सृष्टि है। जिनकी कोई गिनती नहीं है इसलिये सबसे ऊपर की सृष्टि को बेहद की कला का ब्रह्मांड कहते हैं।

21 पीढ़ी से ऊपर की ओर जायेंगे तो रचना की पावर यानि कला बढ़ती जायेगी इससे ऊपर 22 पीढ़ी, 23 पीढ़ी है इसी क्रम में 101 पीढ़ी हैं जिसकी पावर 10101 कला है यानि वहाँ की रचना को 10101 कला का ब्रह्मांड कहेंगे। और ऊपर 11001 पीढ़ी है जिसकी पावर 1100101 कला है और वहाँ की रचना को 1100101 कला का ब्रह्मांड कहेंगे। ऐसे 101 पीढ़ी, 1001 पीढ़ी और 11001 पीढ़ी की सृष्टि अनंता अनंत है। जैसे-जैसे और ऊपर के आयामों में जायेंगे तो कला और बढ़ती जायेगी। सबसे ऊपर बेहद के भी बेहद की कला के ब्रह्मांड हैं ये भी अनंता अनंत हैं उनकी कला बेहद है यानि आँकलन के बाहर है। बेहद की सृष्टि की कोई सीमा रेखा नहीं है इसलिये बेहद अर्थात अनंत है। बेहद के बेहद की कला के ब्रह्मांडों में बेहद के बेहद का परमधाम है वो सबसे ऊपर है जिसको हम ऊँच ते ऊँच परमधाम कहते हैं जिसके ऊपर और कुछ है ही नहीं जिसकी कला बेहद के बेहद की है। वो **''ऑलमाइटी अथॉरिटी''** (सुप्रीम पावर) का मूल स्थान है। यानि ये सृष्टि बेहद है इसका कोई आँकलन कर ही नहीं सकता है। इस बेहद के बेहद की सृष्टि का रचयिता है **बेहद का बाप** यानि **ऑलमाइटी अथॉरिटी** जिनको हम सर्व सत्ताधीश कहेंगे जिनके सामने एक शिव, महा शिव, या परम महा शिव की कोई गिनती नहीं है। ऑलमाइटी अथॉरिटी यानि बेहद का बाप सिर्फ एक ही है वो अद्वितीय और अनादि स्वयंभू है। इनके अलवा बाकी सब सृष्टि कर्ता के रचयिता हैं। लेकिन ऑलमाइटी अथॉरिटी सर्व शक्तिमान यानि मास्टर क्रिएटर हैं।

बेहद का ब्रह्मांड यानि 101 पीढ़ी (10101 कला का ब्रह्मांड), बेहद का महाब्रह्मांड यानि 1001 पीढ़ी (100101 कला का ब्रह्मांड) और बेहद के बेहद का महाब्रह्मांड यानि 11001 पीढ़ी (1100101 कला का ब्रह्मांड) की विस्तार में जानकारी नीचे दिए गये चित्र में है।

मल्टीवर्स से परे की दुनिया को समझने के लिये आप हमारे ऑफिसियल चैनल www.youtube.com/anant98251 (Bapuji Dashrathbhai Patel) पर जाकर अन्य वीडियो को देखकर विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

बेहद का ब्रह्मांड

101 पीढ़ी का ब्रह्मांड (101 पीढ़ी से 21 पीढ़ी)

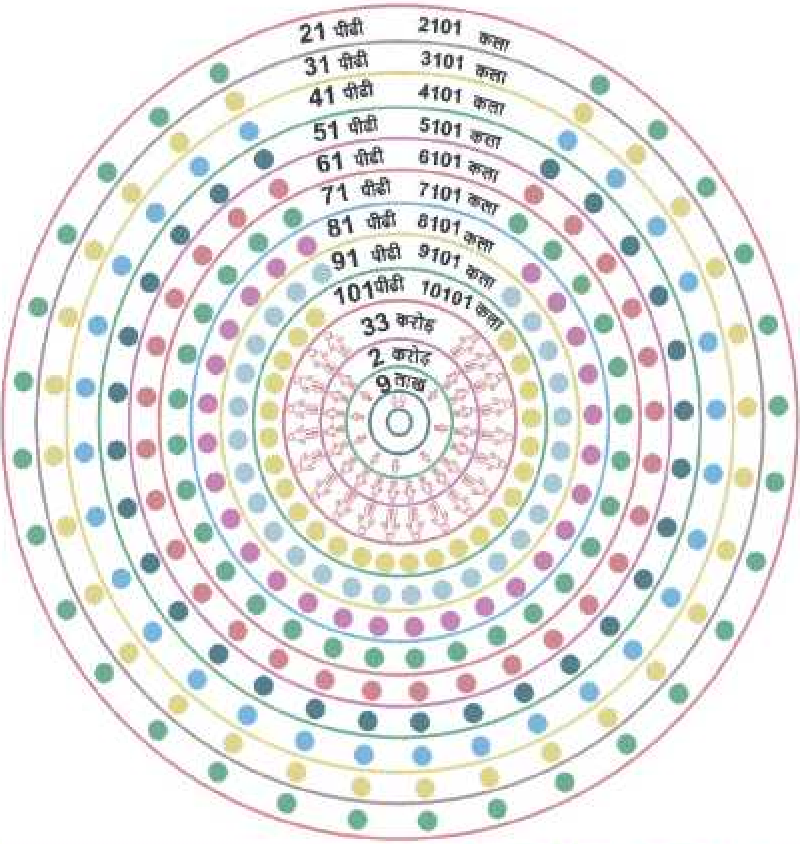

	परम प्रकाश	परम महतत्व	परम तत्व
9 लाख आत्मायें	50%	50%	-
2 करोड़ आत्मायें	40%	60%	-
33 करोड़ आत्मायें	30%	70%	-
वायुमंडल में Power	20%	40%	40% परम आकाश 20% + परम वायु 10% + परम अग्नि 10%

बेहद का महा ब्रह्मांड

1001 पीढ़ी का महा ब्रह्मांड (1001 पीढ़ी से 101 पीढ़ी)

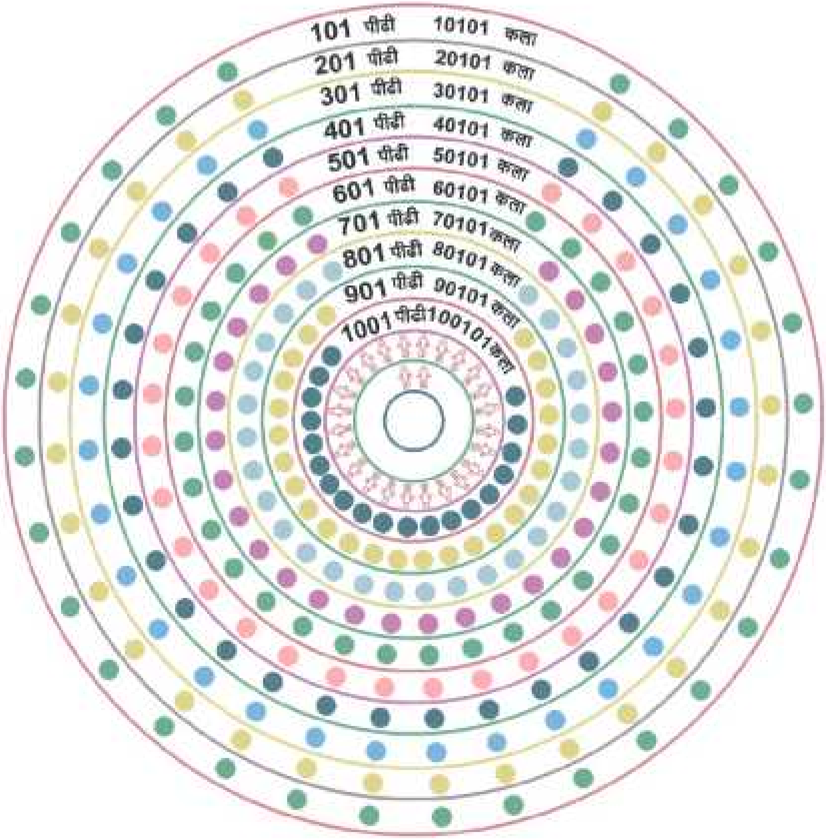

	परम प्रकाश	परम महतत्व	परम तत्व
जहाँ रचयिता रहता है वहाँ की Powar	50%	50%	-
जहाँ Security होती है वहाँ की Power	40%	40%	20%
वायुमंडल में Power	25% to 28%	50% to 56%	25% to 16%

बेहद के बेहद का महा ब्रह्मांड

11,001 पीढ़ी का महा ब्रह्मांड (11,001 पीढ़ी से 1001 पीढ़ी)

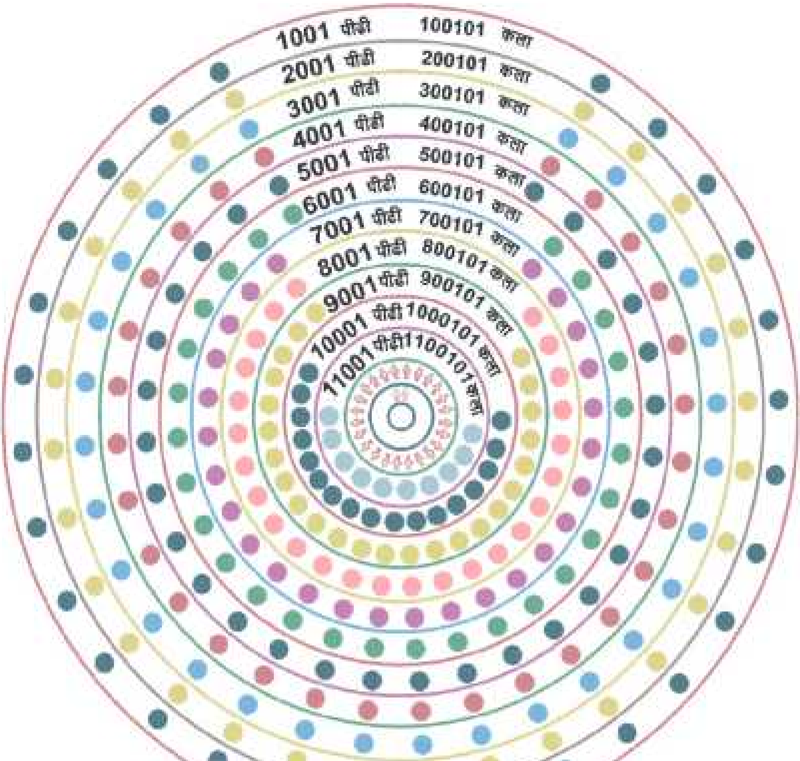

	परम प्रकाश	परम महतत्व	परम तत्व
जहाँ रचयिता रहता है वहाँ की Powar	100%	-	-
जहाँ Security होती है वहाँ की Power	50%	50%	-
वायुमंडल में Power	28% to 30%	56% to 56%	16% to 10%

16.

नई दुनिया 5D और मल्टीवर्स कैसा होगा ?

समय हमें क्या इशारे दे रहा है? समय कौन सा चल रहा है? क्यों मनुष्य अनंत समय से मृत्यु और जन्म के चक्र में आ रहा है? सभी को अपने आप को जानने के लिये आत्म ज्ञान का मार्ग अपनाना चाहिये। क्या सृष्टि ऐसे ही चलती रहेगी, जो केवल दुःख और दर्द से भरी हुई है और यदि खुशी है तो क्षण मात्र के लिये ही है। हम सब इस धरती पर किसी उद्देश्य से भेजे गये थे। हम दूसरे आयामों और ब्रह्मांडों से इस पृथ्वीलोक पर भेजे गये थे। लेकिन इस धरतीलोक के वायुमंडल में आते ही हर एक आत्मा अपने मूल अस्तित्व को भूल गयी। उस पर ये भौतिक पाँच तत्वों का आवरण चढ़ गया और इस धरती के माया जाल में मनुष्य फँस गया। अब सवाल ये उठता है कि क्या हमारी यात्रा अनंत समय तक ऐसे ही चलने वाली है? क्या कभी हम अपनी मूल अवस्था को नहीं प्राप्त कर पायेंगे? क्या हम कभी इस मृत्युलोक को छोड़ अमरलोक, सत्य लोक या बेहद की दुनिया में नहीं जा पायेंगे? आने वाला भविष्य कैसा होगा?

परम पूज्य बापूजी ने हमे बताया कि आने वाली दुनिया बेहद की आत्माओं के लिये बहुत अच्छी और सुखमय होगी। केवल धरती नहीं पूरा मल्टीवर्स बदलेगा। नई दुनिया की नींव रख दी गयी है। समय बहुत जल्दी परिवर्तन होने वाला है अब परम प्रकाश की दुनिया बनेगी। धरती पर ऊपर से परम प्रकाश आयेगा जो इस पूरे मल्टीवर्स को और धरती को परिवर्तित कर देगा। आज कई लोगों का कहना है कि हमारी धरती 3D से 5D में प्रवेश करने वाली है। उस आयाम में प्रवेश करने के लिये कई भविष्यवक्ताओं ने बताया कि वो दुनिया कैसी होगी और वहाँ कौन जायेगा? पृथ्वी अपनी आवृत्ति और कंपन को बदलने जा रही है। हमारे आसपास बहुत सारे आयाम हैं, लेकिन हम देख नहीं सकते। यह अदृश्य हैं। आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि आपने अब तक अनंता अनंत जन्मों में किन-किन कर्मों का बोझ इकट्ठा किया है।

अब दुनिया का परिवर्तन होने जा रहा है। हम अक्सर देखते हैं कि अति के बाद ही अंत होता है। लेकिन यह अंत नहीं बल्कि दुनिया का परिवर्तन है। सबसे पहले इस धरती के वाइब्रेशन का परिवर्तन होगा। सभी की आत्मा जाग्रत होगी। आत्मा की शक्ति जो आज अदृश्य शक्ति है वो आने वाले समय में दिखने लगेगी। पूरी धरती पहले एक नई दुनिया में विकसित होगी जो परम प्रकाश की होगी। तत्वों का रूपांतरण होगा। अभी सूक्ष्म जगत में इसकी तैयारी चल रही है। यदि हमें इस परिवर्तन का भागीदार बनना है तो हमें जल्दी से जल्दी आत्म ज्ञान को धारण कर अपने स्वरुप की अनुभूति को बढ़ाना होगा। क्योंकि सभी आत्मायें उस दुनिया में नहीं जा पायेंगी वही हमारी परीक्षा है। उस नई दुनिया में हम अपने किन्हीं भी कर्मों का बोझ लेकर नहीं जा सकते हैं। हमें सारे अच्छे- बुरे कर्म यही खत्म करने होंगे। इस समय सभी के पास विकल्प (Choice) हैं। अभी नहीं तो फिर कभी नहीं कर पायेंगे।

आने वाली दुनिया अद्भुत और सुंदर है जो हमारी कल्पना से भी बाहर है। उस दुनिया का रंग-रूप-गंध, पशु-पक्षी सब अनोखा और सुखमय है। उस दुनिया का तत्व, एनर्जी और वाइब्रेशन आज जैसे नहीं होंगे। और उस दुनिया में हमारा शरीर भी ऐसा नहीं होगा। शरीर कैसा होगा? हमारा शरीर परम प्रकाश का होगा। उस दुनिया में संकल्पों की भाषा होगी। यहाँ हम कभी भी, कहीं भी एक आयाम से दूसरे आयाम में यात्रा कर सकेंगे। एक भविष्यवक्ता ने इतना भी कहा है कि कुछ आत्मायें इस धरती को पहले ही छोड़ कर चली जायेंगी और बाद में ऊपर से इस धरती पर परिवर्तन करने के लिये शक्ति डाली जायेगी। यदि ऊपर जाने वाली आत्मायें नीचे इस धरती लोक के संबंध, मोह और भावनाओं में फँस गयीं तो वापस 5D से 3D भेज दी जायेंगी।

बापूजी ने हमें इस दुनिया के बारे में कई साल पहले ही बता दिया था। क्या यह केवल इस धरती का परिवर्तन होगा? बापूजी ने तो बताया कि ये अंतिम समय है और अब नित्य परिवर्तन होने जा रहा है। यह परिवर्तन कोई और नहीं स्वयं ऑलमाइटी अथॉरिटी सुप्रीम पावर करने जा रहा है। पता नहीं अब तक कितनी बार ये धरती बनी होगी और फिर से सृजन किया गया होगा। न जाने कितनी बार ऐसे हमारी धरती 5D में रही होगी। लेकिन बेहद के ज्ञान ने हमें समझाया कि यह धरती जो हम ऐसी देख रहे हैं वो ऐसे नहीं थी। वो तो समय बीतने के साथ गिरती गयी जो

हमने इस पुस्तक में पहले समझाया है। ये भी समझने की बात है कि ऐसी कितनी ही धरती हैं हमारे ब्रह्मांडों में और अनंता अनंत ब्रह्मांड है गैलेक्सी में। तो केवल इस धरती का परिवर्तन करने से क्या होगा? समय के साथ सभी ब्रह्मांडों में शक्तियाँ कम हो रही हैं। तो अब कैसा परिवर्तन - वही सृजन और विसर्जन होने को परिवर्तन कहेंगे?

नहीं ! बापूजी ने बताया अब जो परिवर्तन होने जा रहा है वो शाश्वत रहने वाला है। वापस कभी भी ऐसे पाँच तत्वों की दुनिया अर्थात मृत्युलोक नहीं बनेगा। इस पूरे मल्टीवर्स का परिवर्तन किया जायेगा।

प्रश्न ये है कि इस परिवर्तन करने का आधार कौन बनेगा? कुछ बीज रूप आत्मायें परमपिता परमात्मा की सहायता से इस लक्ष्य को सम्पूर्ण करेंगी। वो सभी इस धरती के वाइब्रेशन्स को परमशान्ति के संकल्पों से परिवर्तित करने का कार्य कर रही हैं।

समय को अब खत्म करना है। समय का इंतज़ार नहीं करना है। अभी यह आत्मा की जागृति का समय है।

बापूजी की पुस्तक "परमात्मा के हृदय से" में नई दुनिया के बारे में थोड़ा गहराई से बताया गया है। आप सभी से निवेदन है ज़रूर पढ़ें और "आने वाली नई दुनिया" के नाम से बापूजी की एक वीडियो भी हमारे ऑफिसियल यूट्यूब चैनल Bapuji Dashrath bhai Patel पर उपलब्ध है। जिसमें गहराई से सारे रहस्य बताये गये हैं जिनकी चर्चा हम यहाँ नहीं कर रहे हैं। बापूजी ने बेहद की विशाल दुनिया का ज्ञान दिया है, जो हमारे Youtube Channel पर उपलब्ध है। जिसमें 2000 से भी ज़्यादा वीडियोज़ हैं। कृपया चैनल को Subscribe करिये और आने वाली सभी वीडियोज़ को ज़रूर देखिये। पृथ्वी पर महा परिवर्तन का समय चल रहा है। बहुत जल्दी दिव्य आत्मायें जागृत होंगी। हो सकता है उनमें से एक आप भी हों। बापूजी ने आने वाले समय में 33 कोटि देवी-देवताओं को जागृत करने का संकल्प भी किया है और साथ में 9 लाख विशेष बेहद की आत्माओं को जागृति का सन्देश दे रहे हैं। वायुमंडल परिवर्तित होते ही यह सब आत्मायें जागृत होंगी।

17.

आत्मा का अंतिम पुरुषार्थ

इस वक्त, मनुष्य के लिये सबसे बड़ा पुरुषार्थ है कि मनुष्य अपने मन को वश में करे, क्योंकि यही मन हर पल कामनायें पैदा करता है चाहे वो भौतिक जगत की हो चाहे वो कोई भी हो। मन निरंतर कार्य करता रहता है। मनुष्य अपने विवेक बुद्धि से नक्की करता है कि वो क्या करे क्या न करे। शास्त्रों में मन को ही मोक्ष का कारण बताया गया है और मन ही को अधोगति का कारण भी बताया गया है। मन ही करता है मन ही भोगता है। मनुष्य हर पल अपने ज्ञान और अज्ञान वश अपनी कामना को बढ़ाता रहता है, चाहे वो शुभ कामना हो या अशुभ। मन कभी भी अंतर नहीं कर सकता कि क्या सही है और क्या गलत? मन का कार्य सिर्फ उसे प्रोसेस करना होता है, नक्की तो बुद्धि को करना है क्या सही क्या गलत है। मन को हर पल वासना, व्यर्थ चिंतन, तनाव, टेंशन, काम, क्रोध,लोभ, मोह, नेगेटिव थिंकिंग, नेगेटिव विचार से दूर रखना ही पुरुषार्थ है।

यह मनुष्य की देह क्षणभंगुर है परन्तु सबसे महत्वपूर्ण भी है। इसी देह से किया गया कर्म ही आत्मज्ञान की ओर ले जाता है और अंत समय में परम गति को प्राप्त कर सकता है। जिससे मनुष्य जीवन - मृत्यु के चक्र से ऊपर उठ सके। मन में प्रमाद आने ना पाये इस बात का मनुष्य को ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि लापरवाही मनुष्य को भारी पड़ सकती है।

मनुष्य को अपने ज्ञान को बढ़ाना चाहिए और अपने मन को तर्क देते रहना चाहिए ताकि मन हर पल उसके कहने पर काम करता रहे। उदाहरण से इसको समझते हैं - विद्यार्थी को खेलने का बड़ा मन होता है, परन्तु वह परीक्षा के वक्त भी खेलता रहेगा तो परीक्षा में फेल हो जाएगा। तो बुद्धि को तर्क देना चाहिए कि अभी अगर खेलने में मन लगाया तो फिर एक साल बर्बाद होगा और जीवन बर्बाद हो जाएगा, इस तर्क के बाद मन बदलता है और खेल से मन हट जाता है।

आध्यात्म और ज्ञान मार्ग पर चलते हुए मनुष्य को इसी तरह मन को तर्क देते

रहना चाहिए कि अगर इस जन्म में आत्मज्ञान एवं ब्रह्मज्ञान और ईश्वर की प्राप्ति नहीं कर पाये तो अनंत जन्म तक इस 84 लाख योनि के चक्र में फँसना पड़ेगा। जैसे पहले अनंत जन्म बीत गये, वैसे ही अनेकों जन्म धारण कर फिर यहीं मृत्यु लोक में धक्के खाने पड़ेंगे। बुद्धि में सही ज्ञान धारण कर उस मार्ग पर चलते रहना होगा। अपने अंतःकरण को शुद्ध करना होगा, अपने गुरु या ईष्ट पर अपना ध्यान लगाना होगा। उन पर अपना सम्पूर्ण विश्वास कायम रखना होगा। 1 सेकंड के लिये भी कोई गलती होने न पाये , क्योंकि एक गलती मनुष्य को भारी पड़ सकती है। यह धरती कर्मों का हिसाब-किताब पूरा करने के लिये बनाई गयी है। यह कर्म भूमि है। सदैव यह बात अपने ध्यान में रखें। अपने मन को ईश्वर या परमात्मा के चिंतन में लगाये रखें, हर पल अपने चिंतन का ध्यान रखें, जहाँ चितन होगा वहीं आपका चित भी होगा, जहाँ चित होगा वहीं मन होगा। इसलिये परमात्मा ने गीता में कहा है कि **"मुझे अपना मन दे दे"**। क्योंकि मन ही मोक्ष का मार्ग खोलेगा। भक्ति मार्ग में आत्म स्वरूप का चिंतन, भजन, पूजा आदि मार्ग बताये गये हैं। ज्ञान मार्ग में परमात्मा से ध्यान, योग, तपस्या, समाधि, साधना, आत्म स्वरूप एवं ज्ञान स्वरूप बनने का मार्ग बताया है, परन्तु गीता में ज्ञानी को श्रेष्ठ बताया है। ज्ञान मार्ग से ही आत्मा कर्मातीत अवस्था प्राप्त करती है और स्वयं को पहचानती है। स्वयं को पहचानना सबसे बड़ा पुरुषार्थ है। मनुष्य के पास यही दो मार्ग हैं, अपने विवेक से कोई भी मार्ग पसंद कर सकता है । **भक्ति का फल ज्ञान है।**

ज्ञान मार्ग में ज्ञान, योग, सेवा, धारणा इन चारों विषयों में आत्मा को उत्तीर्ण होना पड़ता है, तभी वह आत्म-स्वरूप बन पाती है।

इस मनुष्य जीवन में यही सच्चा और आखरी पुरुषार्थ है। परमात्मा में मन लगाना और उनकी प्राप्ति के लिये सम्पूर्ण समर्पण की भावना होना ही सच्चा पुरुषार्थ है।

स्व की पहचान :- हद और बेहद की आत्मा

मनुष्य अनंत काल से अपने अस्तित्व को खोज रहा है। वो जानना चाहता है कि वह कौन सी आत्मा है और वो कहाँ से आयी है? बेहद के ज्ञान से पता चलता है कि आत्मा बड़े रूप से दो प्रकार की हो सकती है - हद की आत्मा और बेहद की आत्मा। दोनों में ही ज़मीन आसमान का अंतर है। हद की आत्मा का सृजन तत्वों से

हुआ है जबकि बेहद की आत्मा परम प्रकाश, परम महतत्व से बनी। हद की आत्मा और जीवात्मा में कोई भेद नहीं है क्योंकि दोनों ही ज्ञान से अवगत नहीं हैं और न ही वह परम सत्य ज्ञान की खोज में निकलती हैं। वह तो इस मायावी दुनिया में मस्त रहती हैं, जबकि बेहद की आत्मा परम दिव्य ज्ञान की खोज में भटकती रहती है और तलाश में रहती है। बेहद की आत्मा में बेहद की शक्तियाँ हैं जो कि अनेका अनेक आवरण से दबी हुई हैं, बेहद की आत्मा में बेहद का परम प्रकाश है जो कि अरबों-खरबों सूर्य से भी ज्यादा शक्तिशाली है। हद की आत्मा का शरीर स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर होता है जबकि बेहद की आत्मा का स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महा कारण और परम महा कारण शरीर होता है। हद की आत्मा के आवरण आकाश, अग्नि, वायु, जल, मिट्टी से बने हैं, जबकि बेहद की आत्मा के आवरण परम लाइट, परम महा तत्व, परम तत्व (परम आकाश, परम अग्नि, परम वायु), आकाश, अग्नि, वायु, जल, मिट्टी से बने हैं।

हर किसी आत्मा की पहचान है ज्ञान। हर कोई आत्मा अपने रचयिता (Creator)-अपने बाप तक ही जा सकती है, उसे ही पहचान सकती है, उसके ऊपर नहीं जा सकती है। जैसे शिव की रचना शिव तक, महाशिव की रचना महाशिव तक जायेगी और उन्हें पहचानेगी। कोई आत्मा शिव से आगे नहीं बढ़ती तो समझो कि ये आत्मा शिव की रचना है, और अगर कोई महाशिव (Galaxy) तक समझती है-सुनती है-अच्छा लगता है तो समझो Galaxy से आयी हुई आत्मा है। और अगर किसी आत्मा को Universe तक का ज्ञान समझ में आता है-अच्छा लगता है, तो समझो कि Universe (परम महाशिव) से आई है।

बेहद की आत्मा की पहचान है कि वह बेहद का ज्ञान सुनेगी और उसकी तह तक जायेगी। उस आत्मा में अनंत समय की रिकॉर्डिंग तो है ही, परन्तु उसे स्वयं को जागृत करने के लिये आत्म स्वरुप को धारण करना ही होगा। बेहद की आत्मा ज्ञान सागर मंथन करती रहेगी। जब तक वह पूर्ण तरीके से अपने आप पर विश्वास ना कर ले और बेहद के परमपिता को ना पहचान ले, तब तक उसका पुरुषार्थ खत्म नहीं होता। इतना ही नहीं उसके जीवन का लक्ष्य भी बेहद के विश्व का कल्याण होगा। जैसे बापूजी का लक्ष्य है वैसे ही बेहद की आत्माओं का लक्ष्य भी होगा जो अपनी सम्पूर्ण शक्ति को विश्व कल्याण में लगायेंगे।

बेहद की आत्मा को जब बेहद का ज्ञान आता है तो, बेहद का वैराग्य आता है, हद की चीजों में मन नहीं लगता, यह बेहद की आत्मा की निशानी है। बेहद की आत्मायें स्वयं का नहीं जगत का उद्धार करने की सामर्थ रखती हैं। बेहद की आत्मा में बेहद की शक्तियाँ हैं, मगर अनेकों आवरण से दबी हुई हैं। बेहद की आत्मा में बेहद का परम प्रकाश है जो कि अरबों-खरबों सूर्यों से भी ज़्यादा शक्तिशाली है। अगर वह आत्मा 108 में से है तो उसे 60% ज्ञान समझ आएगा, अगर वो 1008 में है तो उसे 50%, 16000 वाली आत्मा 20% और 9 लाख वाली आत्मा 10% ज्ञान समझ पायेगी। हर आत्मा अपना वर्ग खुद ही तय कर सकती है।

हम सभी को अपने आप को बेहद की आत्मा समझ, बेहद का ज्ञान धारण करना चाहिए और अपना समय, संकल्प और श्वास विश्व परिवर्तन में लगाना चाहिए।

18.

स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन

स्व परिवर्तन क्यों जरूरी है? इसका सीधा तर्क यह है कि जैसा मैं, वैसी ही मेरी दुनिया। मनुष्य के विचारों से ही उसकी दुनिया बनती है।

स्व परिवर्तन ही विश्व परिवर्तन का आधार है। तो पहले स्व-परिवर्तन को समझना होगा। व्यक्त से अव्यक्त स्वरूप को धारण करना ही स्व परिवर्तन है। व्यक्त मतलब पाँच तत्व और अव्यक्त यानी कि परम तत्व, परम लाइट। स्व परिवर्तन यानी अपने स्वभाव, संस्कार को परिवर्तन कर बाप समान बना लेना।

जब तक आत्मा आत्म स्वरूप की स्थिति में स्थित नहीं होगी तब तक Almighty Authority खुद भी परम प्रकाश की Rays मारेंगे तो भी वह Power आत्मा में नहीं जायेगी। परम प्रकाश को आकाश तत्व Absorb यानि ग्रहण कर लेगा और उसे परम वायु और परम अग्नि में Convert यानि रूपांतरित कर देगा और परम आकाश, परम वायु, परम अग्नि का Aura यानी आभामंडल बन जायेगा। हमारा वायुमंडल नेगेटिव यानि नकारात्मक ऊर्जा से भरा हुआ है इसलिये पूरी Power (परम प्रकाश) को हमारे Aura में से वायुमंडल में विसर्जित कर देगा।

इसलिये परम प्रकाश को ग्रहण करने के लिये इन आवरणों को हटाना जरूरी है। आत्म स्वरूप के अभ्यास से ही आत्मा अनेक आवरणों को पार कर परम Light को योग बल से प्राप्त कर सकती है। **"चित्र में विचित्र को याद करोगे तो चरित्रवान बन जाओगे"**। चित्र यानी साकार – विचित्र यानी बेहद के बाप का निराकारी रूप। योग में बाप के साकारी रूप को देख निराकारी रूप से परम प्रकाश लेना। निरंतर योग के अभ्यास से और कर्म योगी जीवन जीने से आत्म स्वरूप की स्थिति बनेगी। आत्म स्वरूप की स्थिति में आत्मा के अंदर पावर आयेगी। Power आने से सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर चार्ज होगा और धीरे-धीरे विकर्म विनाश होते जायेंगे और एक दिन कर्मातीत अवस्था हो जायेगी । इसी अभ्यास से अंत:वाहक शरीर बनेगा और स्वपरिवर्तन होगा। धरती पर रह कर अपने कर्म करते हुए हमें पाँच

तत्वों में परम तत्व के स्वरूप का अनुभव करना होगा। व्यक्त से अव्यक्त स्वरूप को धारण करने का अनुभव करना होगा। जब फर्श वालों से रिश्ता नहीं होगा तब तुम फरिश्ता बनोगे।

तुम जो सोचोगे वो तुम पाओगे। अगर जीवन का लक्ष्य लेकर बैठेंगे कि मुझे स्व परिवर्तन करना है तो ही परिवर्तन होगा। **"लक्ष्य होगा तो लक्षण आयेंगे"**, लक्षण आयेंगे तो स्व परिवर्तन होगा। परमात्मा के प्रति अटल विश्वास और प्रेम से ही मनुष्य अपने आपको बदल सकता है। प्रेम वो शक्ति है जिससे अच्छे से अच्छे लोग बदल जाते हैं, परमात्मा से असीम प्रेम से ही मनुष्य अपने भाग्य तथा कर्म को बदल सकता है। प्रेम मतलब पावर, अनंत प्रेम से ही कृपा प्राप्त की जा सकती है। स्व परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन होगा। यह समय जल्द ही आने वाला है। यह अंत का भी अंत का भी अंत समय चल रहा है। बाप जब पढ़ा रहा था तब बाप टीचर था, अब समय टीचर है। बेहद के बच्चे पुरुषार्थ तेज करें।

आनेवाला समय ज्ञान का है। बेहद के परमज्ञान को आनेवाले समय में लोग ढूंढेंगे।

यह समय बेहद के भाग्य बनाने का है।

19

लाइव योग सत्र और माँ का दिव्य सन्देश

आध्यात्म ज्ञान एक विज्ञान है जो कि परम ज्ञान से मिलता है। बापूजी ने जो ज्ञान अपनी दिव्य दृष्टि से दिया है वो परम ज्ञान आध्यात्म शक्ति को बढ़ाने में मदद करेगा। आध्यात्म यानि आत्मा के ऊपर अध्ययन को आध्यात्म कहते हैं। जैसे हम भौतिक दुनिया में लौकिक पढ़ाई करते हैं ऐसे ही आध्यात्म ज्ञान में भी अध्ययन करना है लेकिन वो ज्ञान सिर्फ आत्मा और परमात्मा के ऊपर है। इसको अभ्यास में लाना है इसलिये रोज ज्ञान, योग करना जरूरी है इसके लिये रोज रात को 10 pm से 11 pm लाइव योग कराया जाता है जिसमें ज्ञान की चर्चा और विश्व शांति के लिये संकल्प सामूहिक स्तर में किये जाते हैं। आत्माओं के इस योग में जुडने से आध्यात्मिक ज्ञान में अभिवृद्धि होती है और परमात्मा की ओर जाने में मदद होती है। इस लाइव योग में अभी तक 550 से ऊपर एपिसोड हो चुके हैं। इस योग में जो चर्चा हुई है उसके कुछ शब्द यहाँ दिए गये हैं।

अनंत भाई के लाइव योग के संदेश-

EPISODE 387

सपने में भी अपनी स्मृति को जागृत रखने का अभ्यास करना चाहिए। आध्यात्मिक पथ में जितनी भी क्रियाएं की जाती हैं जैसे कि नाम जप करना, उपवास करना वो सब भक्ति मार्ग के हैं। लेकिन ज्ञान मार्ग में अपने मन को नियंत्रित करने के लिये अभ्यास करना जरूरी है। इसके लिये हर पल अपने मन को जागरूक रखना है जैसे कि सपने में भी ज्ञान भूलना नहीं चाहिए। मन में ज्ञान धारण करना ही ज्ञान मार्ग में पुरुषार्थ है जिससे आत्मा अपने मूल स्वरूप को अनुभव कर सके।

EPISODE 388

बेहद के ज्ञान में हम स्वर्ग से ऊपर जाने की बात करते हैं अर्थात हमारा लक्ष्य बेहद की कला के ब्रह्मांड में जाने का होता है। यानि पूर्ण निराकार स्वरूप को धारण

करना ही पुरुषार्थ है। जब हमारा लक्ष्य ऊँचा है तो उसके हिसाब से आत्मा में लक्षण आते हैं। हम बेहद के बाप से योग में कनेक्ट होते हैं और उनसे पावर लेते हैं और उनकी याद में कर्म करते हैं जिससे हमारा कर्म श्रेष्ठ बन जाता है।

EPISODE 389 (A)

श्रेष्ठ कौन? जो अपने आप को आत्म स्वरूप मे स्थापित कर सके और अविनाशी परम प्रकाश को अनुभव कर सके वो श्रेष्ठ है। किसी के पास कितनी भी धन प्रतिष्ठा रहे लेकिन स्थूल शरीर छूटने के बाद ये सब यहीं रह जाता है। सम्राट सिकंदर दुनिया जीतने निकला और जीत भी गया लेकिन खाली हाथ मृत्यु को प्राप्त हुआ। पुराणों में भी वर्णन है - जो इन्द्र तीनों लोकों का राजा था वो भी अपने कर्म के हिसाब से कीड़ा बन जाता है यानि स्वर्ग भोग के बाद इन्द्र भी जीव बन जाता है। इसलिये आत्मा जब अविनाशी परम तत्व और परम प्रकाश को अनुभव कर ले और उसमें स्थापित हो जाये तब वो श्रेष्ठ बन जाती है।

EPISODE 389 (B)

आत्मा की शक्ति को कैसे बढ़ायें? जब हम आत्मा और परमात्मा के ऊपर पूर्ण विश्वास करें और आत्मा की गहराई में जो परम प्रकाश है उसके ऊपर ध्यान लगायें और वो परम प्रकाश की ऊर्जा यानि परम शांति जब बाहर आयेगी तब मन की सारी नकारात्मक ऊर्जा खत्म हो जायेगी और आत्मा की शक्ति बढ़ जायेगी। तब मन पवित्र और आत्मा शुद्ध हो जायेगी।

EPISODE 388

परिवर्तन तभी होगा जब अंदर की आवाज बोलेगी कि इस नकारात्मक सृष्टि को परिवर्तन करना ही है और हम सब इस कार्य को अपनी Duty समझ के परमशांति मंत्र को पूरी सृष्टि में फैलायें। कोई काम जबरदस्ती में नहीं होता है। जो आत्मा दुनिया के भोग से मुक्त है केवल वही विश्व सेवा को अपनी Duty समझ के खुशी-खुशी कर पायेगी। जो जीव बंधन में पड़ा है वो तो इस ज्ञान के बारे में सोच भी नहीं पायेगा। बेहद की आत्मा अपने को निमित्त मात्र समझ कर परमात्मा की ऊर्जा और प्रेरणा से इस सृष्टि परिवर्तन में निस्वार्थ लगी रहेगी।

EPISODE 389

एक बार नारद मुनि और हनुमान जी का संवाद हो रहा था तो नारद मुनि हनुमान जी को कह रहे थे कि हनुमान जी सबसे बड़े आक्रमणकारी हैं क्योंकि उन्होंने लंका में दूसरों के घर जला दिये थे और ये कार्य भक्त के लक्षण नहीं होते। इसके उत्तर में हनुमान जी बोले कि उन्होंने तो सिर्फ कुछ मृत शरीरों का दाह संस्कार किया था जिससे कि उन आत्माओं का अगले जन्म में कल्याण हो सके। इसकी व्याख्या करते हुए हनुमान जी बोले कि जिसके हृदय में हरिभक्ति नहीं है वो मृतक शरीर कहलाता है। ऐसे शरीरों को मैंने लंका में अग्नि को समर्पित कर दिया था। इस उत्तर को सुनकर नारद जी को आनंद का अनुभव हुआ और वो सोचने लगे कि जिसकी हिंसा में भी लोक कल्याण की भावना रहती है वही सबसे बड़ा भक्त है। इसलिये हनुमान जी को भक्त शिरोमणि कहा जाता है।

EPISODE 434

एपिसोड नम्बर 434 में चर्चा हुयी है कि वेदों के अनुसार, मृत्यु के पश्चात जीवात्मा किस प्रकार पूरी जिंदगी आत्मस्वरूप की अनुभूति करने के बाद, कैसे वो परमगति को प्राप्त करती है,कैसे वह ईश्वरीय दुनिया को देखती है और कैसे वह अनंता अंनत ब्रह्माडों को देखते हुये अपने ईश्वर तक पहुँचती है ?

साइंस ने जैसे प्रकाश की गति की खोज की है, और बताया है कि प्रकाश की गति ही पूरे विश्व मे श्रेष्ठ गति है। परंतु हमारे वेदों और शास्त्रों के अनुसार परम गति को सर्व श्रेष्ठ गति कहा गया है। जिस गति को प्राप्त कर जीवात्मा पल भर मे ही सीधे परमधाम मे पहुँच सकती है।

मृत्यु के पश्चात वह एक सेकेंड मे ही अपने परमात्मा तक पहुँचती है। ब्रह्माड के ऊँच से ऊँच लोक मे जिसको परमधाम कहते हैं,वहाँ पे आत्मा पल भर मे अर्थात सेकेंड के भी सौवें भाग में परम गति को प्राप्त कर अपने परमात्मा तक पहुँचती है।

वेदों और शास्त्रों के अनुसार बताया गया है कि मृत्यु के पश्चात ऐसा व्यक्ति जो आत्मस्वरूप की अनुभूति पूरी जिन्दगी करता रहा है। ऐसे व्यक्ति की मृत्यु होने पर वह अपने आत्मस्वरूप मे विद्यमान रहते हुए, अपने संकल्प शरीर से ईश्वर युक्त

होकर आंनद की अनुभूति के साथ लोक-लोकांतरों का भ्रमण व विचरण करता है एवं ईश्वर के कार्यों व सृष्टि को देखता है और परमात्मा अर्थात ईश्वर में मिल जाता है अर्थात समाहित हो जाता है।

ये प्रतिदिन लाइव योग में ज्ञान चर्चा के कुछ अंश मात्र हैं। जिसमे हमारे पुराणों, वेदों शस्त्रों में जो सन्देश हैं उनकी व्याख्या की जाती है और परम ज्ञान की समझ को बढ़ाया जाता है। विश्व शांति के लिये सामूहिक योग किया जाता है। इससे आध्यात्म ज्ञान वर्धन होता है और आत्म अनुभव की ओर आत्मा को अग्रसर करने में मदद होती है । इसलिये जितनी आत्मायें इसमे जुड़ेंगी उतनी तीव्र गति से विश्व परिवर्तन की प्रक्रिया आगे बढ़ेगी। ये जो समय है हर आत्मा अपने भाग्य को उत्तम बना सकती है लेकिन उसके लिये उसके पास उचित आध्यात्म ज्ञान और समझ होनी चाहिए। जो आत्मा विश्व कल्याण में समर्पित है उसका भाग्य सबसे ऊँचा है। ज्ञान दान महा दान ये हमारे ज्ञान के शब्द हैं। ज्ञान दान से ही विश्व कल्याण और विश्व परिवर्तन संभव है।

माँ का दिव्य संदेश

पूजनीय माँ के संदेश में ज्ञान की व्याख्या होती है और बेहद आत्माओं को कैसे पुरुषार्थ करना चाहिए इसके लिये रोज माँ की वाणी में बताया जाता है। ये वाणी बेहद की आत्माओं के लिये अमूल्य है। इस वाणी के आधार पर आत्मायें अपने पुरुषार्थ से बेहद के बाप के समीप जाती हैं। बापूजी कहते हैं माँ की वाणी अमूल्य है और बेहद के बच्चों को ऊर्जा प्रदान करती है और आध्यात्मिक मार्ग दर्शन करती है। माँ की वाणी सुनना मतलब योग में रहना है। माँ की वाणी बेहद की आत्माओं के लिये अमृत समान होती है। Youtube Channel है "माँ का दिव्य संदेश" जिसमे माँ की वाणी है जिसको हर आत्मा सुन सकती है और अपने ज्ञान और पुरुषार्थ को तीव्र कर सकती है।

4-5-21 की वाणी की व्याख्या:

बेहद के बेहद की परम परम परम महा शांति है। जो बेहद के बच्चे हैं वो हर समय बाप यानि बेहद के परम पिता के प्यार में समाये रहते हैं। इससे आत्मा की शक्ति दिनों दिन बढ़ती रहती है। इससे आत्माओं के शरीर में भी परिवर्तन आता है जिससे आत्मा ऊर्जावान होती है और संस्कार परिवर्तन होता रहता है जो बेहद के

बाप के कार्य सहयोगी हैं वो ऊँच ते ऊँच आत्मायें बेहद की आत्मा हैं इसलिये बेहद की आत्माओं को अपने आप को श्रेष्ठ आत्मा समझना चाहिए। जो बाप के साथ पार्ट बजाता है वो अविनाशी भाग्य का अधिकारी बन जाता है। जैसे हद में कोई PM या Secretary के साथ काम करता है तो अपने आप को बहुत ऊँचा भाग्य वाला समझता है। यहाँ तो बेहद की आत्मायें Direct बेहद के बाप के साथ काम कर रही हैं तो सोचो इन आत्माओं के कितने ऊँचे भाग्य हैं। ऐसी आत्मा दुनिया से न्यारी रहती है और बाप की प्यारी रहती है। उनकी बुद्धि में सिर्फ एक बाप ही रहता है। ये जो समय चल रहा है अब सिर्फ बाप के प्यार में समाए रहने का समय है और बाप के रूप धारण करने एवं विश्व कल्याण करने का समय है।

पिछले वर्ष 2020 के लॉकडाउन के समय से LIVE मैडिटेशन की शरुआत हुई। हर दिन लाइव योग के दौरान बेहद का ज्ञान, वेदों, शास्त्रों, उपनिषद, गीता ज्ञान इत्यादि की चर्चा के उपरांत परमशान्ति के वाइब्रेशन को आत्म स्वरुप में स्थित होकर समस्त हद और बेहद की आत्माओं के कल्याण के लिये योग किया जाता है। आप सब भी अपना आत्मज्ञान बढ़ायें और आत्मस्वरूप का अभ्यास करने के लिये रोज़ लाइव मैडिटेशन का हिस्सा बनें। आप चाहें तो हमारे Whats App ग्रुप से भी जुड़ सकते हैं। आप दिए गये नंबर पर संपर्क कर सकते हैं या Email कर सकते हैं। शास्त्रों में ज्ञान दान को श्रेष्ठ दान कहा गया है, आप अधिक से अधिक वीडियोज़ को शेयर करें। हमारी Ebook भी उपलब्ध हैं।

आप सभी बीज रूप आत्माओं के सहयोग से पूरे मृत्यु लोक को अमर लोक बनाना है। आप अपनी सम्पूर्ण शक्ति को बेहद के विश्व के कल्याण में आज ही लगायें.....

बेहद के बेहद की परम परम परम महा शांति है।

20

YOUTUBE CHANNEL की महत्वपूर्ण जानकारी

बापूजी के बेहद के ज्ञान सागर में सभी बेहद की आत्माओं का स्वागत है। यहाँ नीचे दी गयी जानकारी को ध्यान से पढ़ें। बापूजी के यूट्यूब चैनल में 500 से ज्यादा इंटरव्यूज के वीडियोज़ हैं। जिनमें से कुछ विशेष की जानकारी नीचे दी गयी है:-

1. लाइफ आफ्टर डेथ (मृत्यु के बाद का जीवन) पार्ट १ & २
2. क्या पति-पत्नी का पिछले जन्मों का रिश्ता होता है ?
3. आत्मा के 10 अदभुत रहस्य
4. भविष्य की दुनिया पार्ट १ & २
5. मृतक आत्मा को क्यों याद न करें? उनकी फोटो क्यों न लगाए? उनके कल्याण के उपाय।
6. सदी का श्रेष्ठ वीडियो। कैसे जन्मी थी "मौत" ?
7. मोस्ट पावरफुल वाइब्रेशन जो यूनिवर्स को बदल सकते हैं
8. कल्कि अवतार
9. बेहद की परम महाशांति मंत्र का अर्थ
10. मृत्यु और पुर्न: जन्म के बीच का समय
11. वर्ल्ड ड्रामा (समय चक्र)
12. जजमेंट डे
13. आत्म स्वरुप में परम लाइट की प्राप्ति
14. सीक्रेट ऑफ़ योगा, योग कैसे करें ?
15. ब्रह्मांड के सृजन का रहस्य ?
16. आध्यात्मिक ज्ञान की महत्ता
17. दुनिया के परिवर्तन की भविष्यवाणी
18. कारण शरीर की वासना से मुक्ति
19. श्रीमद्भगवत गीता सार
20. मोक्ष और जीवन मुक्ति का रहस्य
21. अतिगुप्त कर्मों का फल जिसका साक्षी खुद और खुदा हो

22. काला जादू और आध्यात्म
23. सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर, महा कारण शरीर के रहस्य
24. तीसरे नेत्र की विस्तृत जानकारी
25. परम महा शिव योग
26. आत्मबल को कैसे बढ़ायें?
27. बेहद के अविनाशी परमधाम का वर्णन
28. समय यात्रा
29. मंगल ग्रह पर जीवन
30. शक्ति पात का अनजाना सच
31. बापूजी के जीवन का परिचय
32. ३६ यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब
33. ६० सुपर इंटेलीजेंट रैपिड फायर प्रश्नोत्तर

लोगों की सुविधा के लिये बापूजी के चैनल पर एक प्ले लिस्ट बनाई गयी है जिनके नाम "अनस्पोकन ट्रुथ" और "इंटरव्यू विथ बापूजी" हैं। ऐसे सवाल जो मनुष्य को अपने अस्तित्व को जानने के लिये मजबूर कर दे। आध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर होते हुए अपने और उस परमात्मा से जुड़े अनकहे रहस्य को जानने के लिये ऊपर दी गयी वीडियोज़ को अवश्य देखें। निश्चित ही आपका जीवन बदल जायेगा।

आज ही बापूजी के यूट्यूब चैनल को सर्च करें, यूट्यूब में लिखें "बापूजी दशरथभाई पटेल"

या फिर www.youtube.com/anant98251 क्लिक करें और चैनल को सब्सक्राइब करें।

ताकि हमारे सभी आने वाले नये वीडियो आप बिना रूकावट देख सकें। वीडियोस को देखें और कमेंट जरूर करें।

आप सभी से निवेदन है कि आप इन सभी वीडियो के लिंक अपने करीबी रिश्तेदारों और दोस्तों के साथ व्हाट्सप पर शेयर करें ताकि दुनिया तक यह परमज्ञान पहुँच सके। आपकी छोटी सी कोशिश समस्त विश्व को बदल सकती है। कोई भी कर्म कभी खाली नहीं जाता है। हर जीवात्मा का कल्याण हो।

परमशांति

- अनंत पटेल

(बापूजी के लौकिक पुत्र)

संपर्क कैसे करें:

Email id: anant@paramshanti.org / ankur@paramshanti.org
saakshi1985@gmail.com

You can contact us on Bapuji's official YouTube Channel:
www.youtube.com/anant98251

Website: www.paramshanti.org

www.facebook.com/discoveryofnewworldcom

https://instagram.com/bapujidashrathbhaipatel

Address: Vishwa Parivartak Ishwariya Vidhalaya.
C/o Radhe Community Hall, Near Chenpur Bus Stand,
Village Chenpur, New Ranip Road. Ahmedabad – 382470.
Gujarat. (India)

21 शब्दकोश

- हद की आत्मा - तत्वों से बनी हुई आत्मा
- बेहद की आत्मा - परम प्रकाश, परम महतत्व से बनी हुई आत्मा
- हद की दुनिया - पाँच तत्वों की दुनिया, स्थूल दुनिया
- बेहद की दुनिया - परम तत्वों-परम प्रकाश की दुनिया
- मुक्ति - आत्मा के अस्तित्व का खत्म हो जाना
- जीवन मुक्ति - आत्मा का अस्तित्व रहना – (जीवन में रहकर मुक्ति स्वरूप का अनुभव करना)
- लौकिक - स्थूल
- अलौकिक - सूक्ष्म, (स्थूल जगत के पार)
- पारलौकिक - परम प्रकाश की दुनिया, बेहद की दुनिया, अमरलोक
- व्यक्त - पाँच तत्व, जिनको इन स्थूल आँखों से देख सकें
- अव्यक्त - परम प्रकाश, परम महतत्व, परम तत्व, जिसको इन आँखों से नहीं देख सकते हैं
- साकारी - पाँच तत्वों का मनुष्य
- आकारी - परम तत्वों का रूप
- निराकारी - आकार रहित, प्रकाशमय (Light) स्वरूप, आत्म स्वरूप (Soul Conscious) की स्थिति
- बेहद - जिसकी कोई हद नहीं, अनंत
- बेहद के PM - बेहद के Prime Minister
- भावातीत - भावना रहित
- धारणा - अव्यक्त स्वरूप को धारण करना
- इच्छा मात्रमअविद्या - इच्छा रहित
- कर्मातीत - सारे कर्मों का हिसाब खत्म हो जाना
- काल - समय
- कालातीत - समय के बाहर
- कला - Power

- नष्टो मोहा - मोह रहित
- परमधाम - अमरलोक, निराकारी दुनिया
- परम - ऊँच से ऊँच
- स्मृति लब्धा - स्मृति प्राप्त होना
- विकर्म - पाप, बुरे कर्म
- 1 पीढ़ी - 100 कला
- 1 अरब - 100 करोड़
- 1 खरब - 10,000 करोड़
- 1 Billion - 100 करोड़, (एक अरब)
- 1 Trillion - 1 लाख करोड़
- 1 Light Year/ एक प्रकाश वर्ष - (9,46,100 करोड़ किलोमीटर km)
- Causal World - कारण जगत
- Cell - कोशिका
- Cluster - समूह
- Diameter - व्यास
- Great universe - G-1
- Great great universe - G-2
- Great great great universe - G-3
- Great great great great great great great universe - G-7
- Substle World - सूक्ष्म जगत
- Vibration - कंपन
- ब्रह्मांड- Solar System
- महा ब्रह्मांड - Galaxy
- परम महा ब्रह्मांड - Universe

कृतज्ञता..

इस पुस्तक " Life in Multiverse " को आप सभी के सामने प्रस्तुत करने में सबसे बड़ी प्रेरणा नीरू माँ की है। वह शांत स्वभाव, वाणी में मधुरता, चेहरे पर आध्यात्मिक तेज़, सहनशील वृति, निर्मल स्वभाव, राग, द्वेष, क्रोध से परे, दया, क्षमता, प्रेम और करुणा के गुणों से परिपूर्ण थी। वह अपनी साधना के उद्देश्य के प्रति चेतन और सजग थी। संसार रूपी माया जाल में रहकर भी उससे विरक्त थी। उनका आध्यात्मिक तेज़, अंधेरे में खोये हुए लोगों के लिए ज्ञानरूपी प्रकाश देता है। इन्हीं सभी दिव्य गुणों के कारण वह इस संसार में कई लोगों की प्रेरणा बनी। उनके गहरे अध्ययन, दिव्य विचारों एवं अलौकिक अदृष्यमान विश्व को चित्रों के माध्यम से सभी आत्माओं तक पहुँचाने का प्रयास इस पुस्तक के माध्यम से किया गया है। विश्व कल्याण के संकल्प को परिपूर्ण करने के लिए आज भी वह सूक्ष्म जगत में अपना विशेष योगदान दे रही हैं। इसके लिए सम्पूर्ण बेहद का परिवार हमेशा हृदय की गहराई से उनका आभारी रहेगा।

परमशान्ति!

परमशांति

मल्टीवर्स में हमारा अस्तित्व..

ब्रह्माण्ड और जीवन की कहानी..

अनंता अनंत ब्रह्माण्डों में हम कहाँ हैं ?

आत्मा के अतीत और भविष्य की यात्रा..

ब्रह्माण्ड की सबसे अनोखी यात्रा..

क्या हम कभी समय यात्रा कर सकते हैं ?

ब्रह्माण्ड के अनसुलझे रहस्य..

अनंता अनंत ब्रह्माण्डों का असल फैलाव कितना है ?

ब्रह्माण्ड का अनंत विस्तार..

ब्रह्माण्ड के बाहर आखिर क्या है ?

ब्रह्माण्ड की हैरान कर देने वाली जानकारियां –
एलियंस , UFO's और बहुत कुछ

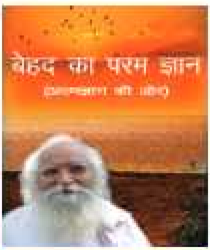

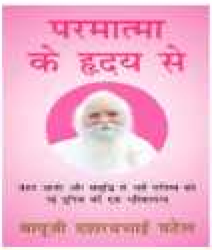

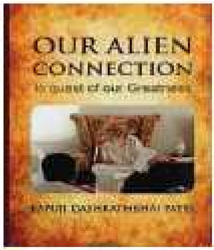

www.paramshanti.org
www.youtube.com/anant98251

₹. 65/-